बंकिमचन्द्र चटर्जी

सुबोधचन्द्र सेनगुप्त

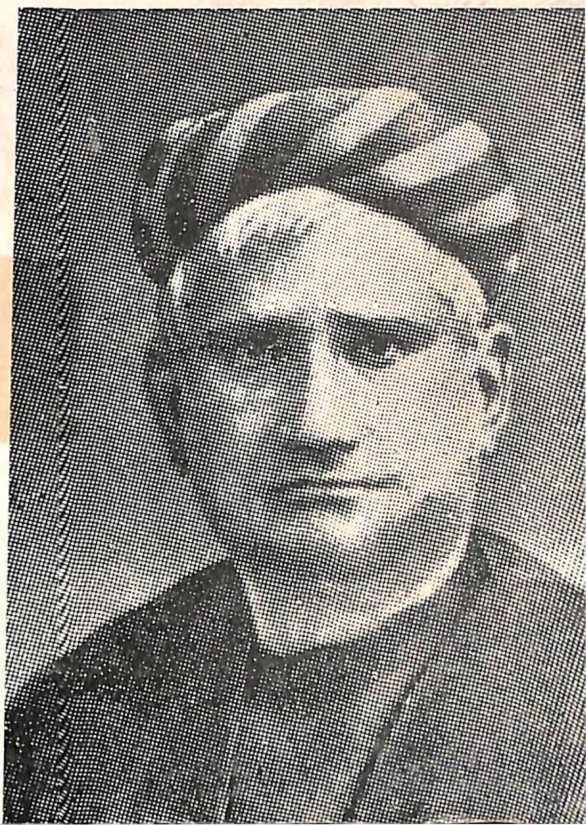

MT
891.440 92
C 392 S

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

MT
891.440 92
C 392S

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

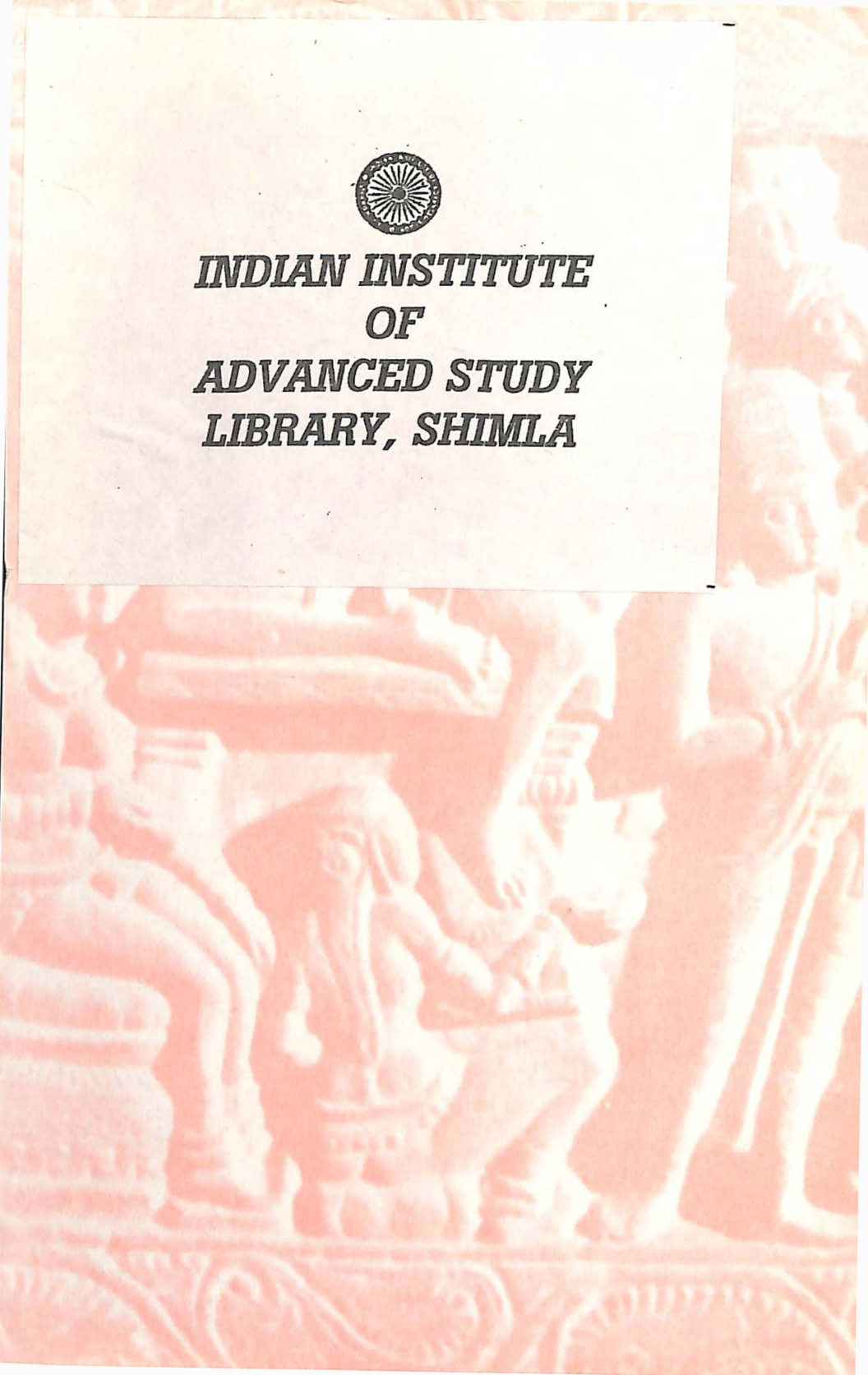

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूप मे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओहि दृश्यकें देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि । हिनका लोकनिक नीचा मे एक गोट देवान जी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकें लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारत मे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक ।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यकार निर्माला

बंकिमचन्द्र चटर्जी

लेखक
सुबोधचन्द्र सेनगुप्त

अनुवादक
श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

साहित्य अकादेमी

Bankimchandra Chatterjee : Maithili translation by Srichandra-nath Mishra 'Amar' of Subodhchandra Sengupta's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1990), R: **SAHITYA AKADEMI**
REVISED PRICE Rs. 15.00

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : 1990

MT
891.44092
C 392 S

Library IIAS, Shimla
MT 891.440 92 C 392 S
00117144

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोजशाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

विक्रय विभाग
'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता 700 029
29, एलडाम्स रोड, तेनामपेट, मद्रास 600 018
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014

मूल्य **SAHITYA AKADEMI**
REVISED PRICE Rs. 15.00

117144
9.12.04
SHIMLA

मुद्रक :
रुचिका प्रिंटर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110 032

अनुक्रम

पुरोवाक्	7
भूमिका	11
प्रारम्भिक उपन्यास	21
मध्यकालीन उपन्यास	30
अन्तिम अवधिक उपन्यास	45
साहित्यिक समालोचना	53
विविध रचना	60
वन्देमातरम् (1876-1976)	63
ई गीत	68
वन्देमातरम्	69
बंकिमचन्द्रक कृति	71

पुरोवाक्

आधुनिक भारतीयभाषा साहित्य निर्माता लोकनि में बंकिम चन्द्र अपने अनुपम स्थान बनौने छथि। 1938 ई० में हुनकर जन्म-शताब्दीमनाओल गेलनि, किन्तु एहि प्रकारक समारोह मनायब सम्प्रति सामान्य बात-प्रत्युत फैशन भs गेल अछि, एतेकधरि जे थोड़ो महत्त्व रखनिहार लेखक लोकनिक पार आबि जाइत छनि, अनकर कोन कथा, हिनके पहिल बंगला उपन्यास दुर्गेशनन्दिनीक शताब्दी 1965 में मनाओल गेलनि अछि, मुदा एकर विचार एकोगोटे नहि कयलनि जे केवल एकमात्र पोथी कें लs एहि प्रकारक समारोह करब अपव्यय मे तँ परिगणित होयबे करत, अनसोहाँत सेहो लगतैक, कारण जे एहि उपन्यासमे तँ केवल बंगला उपन्यास अथवा कहि सकैत छी भारतीय उपन्यासक हेतु-रूप-रेखा मात्र छैक। ओना बंगला गद्यमे एहन कोनो सर्जनात्मक कृति नहि छलैक जकर उल्लेख कयल जा सकय। अतः जहिना दुर्गेशनन्दिनी प्रकाशमे आयल कि बंगला उपन्यासकें प्रौढ़ता प्राप्त भऽगेलैक।

किछुए पूर्व हमरालोकनि किछु महान कृतिक शताब्दी समारोहक प्रसंग सुनलहुँ अछि, उदाहरणार्थ शेक्सपीयरक फर्स्ट फोलियोक शताब्दी समारोह मनाओल गेलनि, किन्तु कहिओ कोनो गीतकें सेहो एहन सम्मान भेटलैक? हमरा लोकनिकें देखवा मे आबि रहल अछि जे कतोक देशभक्त तथा कविता ओ संगीत प्रेमी लोकनि वन्देमातरम् केर प्रणयन शताब्दी मना रहलाह अछि जाहि गीत कें बंकिम चन्द्र अपन आनन्द मठ नामक उपन्यासक संग जोड़ने छथि। ई ओ उद्दीपक गीत थीक जे विभिन्न भाषा बजनिहार, विभिन्न क्षेत्रमें रहनिहार विभिन्न मत ओ धर्मकें माननिहार एहि देशक निवासीलकेनिकें स्वतन्त्रता संग्रामक हेतु आह्वान करबाक हेतु तथा सबकें जोड़ि एक राष्ट्रमें परिणत करबाक हेतु सहायक सिद्ध भेल। आब ओ स्वतन्त्रता भेटि गेल अछि तथापि ई गीत एहूसं नीक जीवन दिस अग्रसर होयबाक प्रेरणा दैत रहत, कारण जे जीवनकें नीकसँ नीक बनायब एक स्वतन्त्र देशमे संभव छैं आ जकर संकेत बंकिमचन्द्र अपन सर्जनात्मक ओ आलोचनात्मक दूनू प्रकारक रचनामे बहुत नीक जकाँ दऽचुकल छथि।

जँ हमरा लोकनि बंगाली नेताधरि अपनाकें सीमित राखी तँ कहि सकैत

छी जे भारतीय पुनरुत्थानवाद दू रूपमे विभाजित छल। एक रूप ओ छल जाहिमे राममोहन राय अग्रसर छलाह, ओ हमरालोकनिकेँ प्राचीन व्याकरण, अर्थहीन आध्यात्मिक सूक्ष्मता एवं भ्रममूलक कर्मकाण्डक दासतासँ मुक्त करयबाक हेतु संघर्ष कयलनि, संगहि पाश्चात्य विचारशीलता तथा वैज्ञानिकतासँ जोड़लनि। दोसर रूप ओ छल जाहिमे आगाँ पाछाँ दूनू दिस देखल गेलैक आ जतय अत्यधिक पाश्चात्यीकरणक विरोध भेलैक ततय प्राचीन ओ नवीन दूनूक एकीकृत जीवन-दर्शन प्राप्तिक प्रयत्न कयल गेलैक। समष्टिक एहि दर्शनमे हमरासभक ऋषि-मुनिलोकनिक चिरन्तन बुद्धिमत्ता ओ आधुनिक वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत विचारक समन्वय छल। एहि विचारधाराक प्रमुख प्रवर्त्तक बंकिमचन्द्रे छलाह जे संस्कृति पर आधारित धर्मक प्रचार कयलनि। एहि धर्म मे गीताक ईश्वरवाद तथा ऑग-स्टकाम्टक स्वीकारवाद दूनू सम्मिलित छल।

साहित्यमे बंकिमचन्द्र गद्य रचनाकऽ मात्र उपन्यास ओ कथे नहि लिखलनि-यद्यपि ओ हुनक लेखनीसँ ओहिना निःसृत भेलनि जेना यूनानी देवता जीवक माथ सँ मिनर्वा क आविर्भाव भेल छलनि-प्रत्युत अपन उपन्यास आ निबन्धक माध्यमसँ, जे अधिकतर हुनक अपने पत्रिका बंगदर्शनमे प्रकाशित भेल छलनि, साहित्यिक आस्वादन एवं मूल्यांकन तथा सर्जनात्मक लेखनक मानदण्ड सेहो स्थापित कयलनि बंगदर्शन बंगालक प्रथम साहित्यिक पत्रिका नहि छल, किन्तु स्तरक दृष्टि सँ ई समस्त पूर्ववर्ती पत्रिका सबसँ आगाँ छल, प्रत्युत एकर परवर्तीओ पत्रिकासब एहि स्तरधरि बहुत कठिनतासँ पहुँचि सकल। एहि पत्रिकाक सर्वोपरि गुण एकर निष्प-क्षता तथा वस्तुपरकता छलैक अर्थात् सर्जनात्मक लेखनमे उच्चस्तर निर्धारित कऽ एक उदाहरण प्रस्तुतकरब एवं निबन्ध ओ समीक्षाक माध्यमसँ विद्वत्ता, सहज प्रस्तुतीकरण एवं पूर्वाग्रह-मुक्त मूल्यांकनक प्रथा आरम्भ करब। एही कतोक कारणेँ बंकिमचन्द्र केवल महान् उपन्यासकार अथवा वन्देमातरम् केर सन्देश दे-निहार ऋषिक रूपमे जानल जाइत छथि, प्रत्युत हुनका साहित्यसम्राटक सम्मानो-पाधि सेहो देल जाइत छनि जखन कि ई उपाधि रवीन्द्रनाथठाकुरकेँ सेहो नहि देल गेलनि, यद्यपि ओ भारतक महत्तम कवि छलाह आ संगहि बंकिमचन्द्रक अपेक्षा कतेको अधिक तथा विभिन्न विधामे रचना कयने छथि। बंकिम बाबूक देहान्त भेलाक बाद जखन बंगदर्शनक पुनः प्रकाशन भेलैक तँ टैगोर सेहो एक समय ओकर सम्पादक रहलाह, परन्तु जे वैशिष्ट्य बंकिमबाबूक सम्पादनमे छलनि से टैगोरक सम्पादनमे नहि आबि सकलनि।

एहि सन्दर्भमे हिनक समानान्तर हम सब एक नाम डा० जॉनसनक सोचि सकैत छी जनिका दुर्दान्त तानाशाह अथवा साहित्यक अधिनायक कहल जाइत छलनि। एहि दुहू व्यक्तिमे भिन्नता ओ साम्य एक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। बंकिमचन्द्रक कल्पनाशक्ति अद्भुत छलनि तेँ हुनक सर्जनात्मक लेखन अत्युच्च-

स्तरक छलनि, मुदा जॉनसनक सबसँ पैघ पूजी हुनक असामान्य सूझ-बूझ छलनि। एही कारणेँ हुनक सर्वाधिक स्थायी महत्त्वक कृतिसब सर्जनात्मक नहि भऽ, अन्य प्रकारक छलनि-यथा हुनक शब्द-कोष, हुनक शेक्सपीयरक कृति सभक सम्पादन तथा 'लाइव्स ऑफ द पोएट्स' नामक हुनक गन्थ जीवनचरितक अपेक्षेँ आलोचनात्मक लेखनक रूपमे अधिक महत्त्वक छनि। किन्तु एहि अन्तरक अछैतो-ओना बंकिमचन्द्र जॉनसनक आलोचक सेहो छलथिन—दूनू गोटे जीवन तथा साहित्य केँ अन्तः सम्बद्ध मानैत छलाह, दूनूगोटे शुद्ध तथा उत्तम लेखन आ सुरूचिपूर्ण तथा सन्तुलित मूल्यांकनक मानदंड स्थापितकरबाक दिशामे अग्रसर भेलाह, संगहि दूनू गोटे कल्पनाशील कृतिकेँ आदर्श जीवनमें सहायक मानैत छलाह।

हम एतेक महान् व्यक्तिपर एतेक छोट सन पोथी लिखबाक हेतु क्षमा याचनाक संग अपन कथ्य समाप्त करय चाहैत छी। हमरासँ वेसी एकर सीमासँ परिचित आन क्यौ नहि भऽ सकैछ। हम मात्र एतवे कहय चाहव जे एकर दोष आरो स्पष्ट होइत जँ हमर भूतपूर्व शिष्य, प्रेजिडेंसी कालेज, कलकत्ताक प्रो० अशोक कुमार मुखर्जी सतर्कता नहि रखितथि।

हम अरविन्द आश्रम, पांडिचेरीक प्रति कृतज्ञ छिऐनि जे ओ हमरा श्री अरविन्दक वन्देमातरम् केर अनुवादक पुनः प्रकाशनक अनुमति देलनि अछि। हम कलकत्ताक श्री एच० के० नियोगीक प्रति सेहो कृतज्ञ छिऐनि जे ओ तत्परतापूर्वक ई अनुमति हमरा हेतु प्राप्त कयलनि। सितम्बर 1976

—सुबोधचन्द्र सेनगुप्त

भूमिका

बंगालक साहित्यिक संसारमे बंकिम चन्द्रक प्रादुर्भावक तुलना आकाशमे सूर्यक उदयक संग कयल गेलनि अछि। जेना पऽह फटैत कालक झलफल प्रकाश हो आ सहसा क्षितिजपर सूर्यक चक्का चक दऽउगि आवय आ दिग्‌दिगन्तमे प्रकाश तथा क्रियाशीलताक चिह्न देखवामे आवय लगैछ। ओहिकाल बंगला साहित्य वा ई कहल जा सकैछ जे भारतीय साहित्य एक प्रचारक जड़ताक स्थितिमे छल। दुर्गेशनन्दिनीक प्रकाशन 1865 ई० मे भेलैक आ तकर पछाति कपाल-कुण्डला तथा अन्यान्य उपन्यास सब सम्मुख आयल तथा साहित्य संसार दीर्घनिद्रासँ जागि उठल आ अतिशीघ्र प्रत्येक व्यक्तिक अधरपर वन्देमातरम् केर सन्देश प्रस्फुटित होअय लागल।

किन्तु ई जागरण की ततेक आकस्मिक छल जतेक देखबामे आबि रहल अछि? हँऽ एक विषय अछि जे वंकिम चन्द्रक जन्म एहन समय मे भेल छलनि जे संभावना सबसँ परिपूर्ण छल। अर्थात् 26 जून 1838। एहिसँ तीनिए वर्ष पहिने अंग्रेजी भारतक सरकारी भाषा तथा शिक्षाक प्रमुख विषयक रूप मे अपनाओल गेल छल। कलकत्ताक हिन्दू कालेजकेँ 1855 मे प्रेजिडेंसीकालेज मे परिवर्तित कयल गेल छल। 1857 मे तीनगोट विश्वविद्यालय स्थापित मेल आ 1858 मे बंकिमबाबू कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ प्रथम स्नातक वहरयलाह, किन्तु ठीक एकर विपरीत ओही समय एक प्रति-आन्दोलन सेहो चलि रहल छल जे केवल ब्रिटिश प्रभुत्वक विरोधमे नहि, प्रत्युत पाश्चात्य जीवन-पद्धति तथा चिन्तनक आक्रामकताक विरुद्ध सेहो छल आ 1857 क स्वतन्त्रता संग्राम अथवा सिपाही विद्रोह एकर प्रतीक छल। अतः समय उपयुक्त छल आ बंकिमचन्द्र सदृश व्यक्ति समुचित दिशा तथा समुचित अभिव्यक्ति देवाक हेतु विद्यमान छलाह।

बंकिमबाबू 1858 मे एक डिप्टी मजिस्ट्रेटक रूपमे सरकारी नौकरीमे प्रबेश कयलनि आ तीन भिन्न-भिन्न जिला—पश्चिमी बंगाल, पूर्वीय बंगाल तथा उड़ीसामे हुनक नियुक्ति भेल छलनि। ई तीनू जिला तत्कालीन बंगालहिक भाग छल। 1891 मे ओ सेवा-निवृत्त भेलाह। प्रशासकीय समस्या सबकेँ सोझरयबामे हुनक एक कार्यकुशल, दृढ़ एवं मानवीय गुणसँ परिपूर्ण सरकारी कर्मचारीक

रूपमे ख्याति छलनि । निस्सन्देह पछाति चलिकऽ हुनका विदेशी शासनक ई दोष जानि खेद भेलनि जे एहिमे स्थानीय प्रतिभाकें पर्याप्त प्रोत्साहन नहि भेटि पबैत छैक । हमरोलोकनिकें ई सोचि क्षोभ होइत अछि जे मध्य उनैसम शताब्दीक विशिष्टतम प्रतिभाकें जे सबसँ उच्च पद भेटि सकैत छलैक से छल बंगाल सरकारक एक कार्यकारी सहायक सचिवक पद । 1891 मे, अर्थात् इण्डियन नेशनल कांग्रेसक स्थापनाक छओ वर्षवाद जखन बंकिमचन्द्र सेवानिवृत्त भेलाह, ओ केवल बंगालहिक नहि, सम्पूर्ण भारतक सर्वाग्रणी साहित्यिक व्यक्तित्व छलाह आ हुनक किछु रचनाक अनुवाद अंग्रेजी तथा अन्यान्यभाषामे भऽ चुकल छलनि । किन्तु सुष्ठुरूपें अपन अर्जित विश्रामक सुखोपभोगकरबाक हेतु ओ अधिक दिन जीवित नहि रहलाह वस्तुतः सेवानिवृत्तिएक समयमे स्वास्थ्य खसि पड़ल छलनि, तें 1894 क आरम्भेमे ओ पूर्णतः अस्वस्थ भऽ गेलछलाह आ ओही वर्षक आठ अप्रैल हुनक अन्तकाल आबि गेलनि ।

बंकिमचन्द्रक साहित्यिक गतिविधिकें-जाहिक्रममे ओ चौदहगोट उपन्यास (एक आओर अंग्रेजीमे) तथा कतोक विविध प्रकारक गद्यग्रन्थक रचना कयलनि (हुनक काव्यरचनाकें भने छोड़िओ देल जाय)—दू अथवा तीन काल खण्डमे विभाजित कयल जाय सकैत छनि । श्री अरविन्द हुनक आरम्भिक तथा परवर्ती रचनाकालमे एहि प्रकारें भेद कयने छथि । ई कहैत जे आरम्भकालिक बंकिमचन्द्र केवल कवि ओ शैलीकार रहथि आ बादक बंकिम एक भविष्यदर्शी आ राष्ट्र-निर्माता छलाह । कतोक एहनोलोक भेटि जयताह जनिकालोकनिकें हुनक बादक उपन्यास सबमे हुनक सर्जनात्मक शक्ति क्रमशः क्षीयमाण होइत देखबामे अबैत छनि आ जनिका सबकें बंकिमक महत्ताक दर्शन हुनक आरंभिके रचनामे होइत छनि जखन ओ केवल एक कवि ओ शैलीकार रहथि । वस्तुतः कोनो प्रतिभाशाली लेखकक कृतित्वकें समग्रतामे देखबाक चाही संगहि हमरा लोकनिकें वैस्टर-टनक ओहि विपरीत भावार्थसंवलित उक्तिकें दृष्टि-निरपेक्ष नहि करबाक चाही जखन ओ कहने छलाह जे नीक आख्यान स्वयंमे एक शिक्षा थीक जखन कि एक निकृष्ट आख्यान अपना संग शिक्षाकें नत्थी कयने रहैत अछि । तैयो विश्लेषणक सुविधाकें ध्यानमे रखैत हम विचारक बंकिमचन्द्रक चर्चा उपन्यासकार बंकिम चन्द्रक चर्चासँ पहिने कऽसकैत छिऐनि, यद्यपि यैह हुनक स्थायी महत्त्वक वस्तु थिकनि । ओना ई पद्धति काल-क्रमक दृष्टिसँ उचित नहि थीक, कारण जे तखन हमरा हुनक बादक कृतिक प्रसंग अर्थात् अन्तिम चरणमे लिखित निबन्ध आ उपन्यास पर विचार पहिने करय पड़त आ हुनक युवाकाल तथा प्रारम्भिक परि-पक्वताक समयमे लिखल रचना (उपन्याससब) पर बादमे । उनैसम शताब्दीमे जे जागरण आयल आ जकर मार्गदर्शक राजा राममोहन राय रहथि से बहुधा बंगालक पुनर्जागरण अथवा भारतीय पुनर्जागरण नामसँ वर्णित अछि । किन्तु

किछु अंशधरि ई संज्ञा भ्रमात्मक अछि। यद्यपि 1453 मे कुसतुनतुनियाक पतनक पछाति पश्चिमदिस मुह कयनिहार विद्वान लोकनिक प्रभावक बात बेस बढ़ा-चढ़ाकऽ कयल जाइत अछि, किन्तु एहि तथ्यकें अस्वीकार नहि कयल जा सकैछ जे यूरोपक पुनर्जागरणक कारण अधिकतर ग्रीक शास्त्रीय ग्रन्थक पुनः साक्षात्कार छल। अर्थात् मूल रूपमे ई पुरातन धरोहरक नवीन अन्वेषण छल। किन्तु भारत मे जागरणक तात्पर्य छल कोनो आधुनिक तथा विदेशी प्रभावक फलस्वरूप अपन साहित्य, अपन दर्शन तथा सामाजिक पद्धतिक प्रति कयल जाइत विश्वासकें निकृष्ट रूपें झकझोरल जायब। एही कारणें आरम्भेसँ नवीन ओ पुरान, देशी आ विदेशीक मध्य तनावपूर्ण संघर्षक स्थिति उत्पन्न भऽ गेल छल। राममोहन राय शासकीय संस्कृत महाविद्यालयक स्थापनाक विरोध कयने छलाह, कारण जे हुनक मत छलनि जे एहिसँ अन्धविश्वास आरो पसरत, किन्तु ई स्थापित भेल आ विलक्षण बात ई जे एकर सबसँ पैघ उपलब्धि भेलाह पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जे कट्टर ब्राह्मण होइतो यूरोपीय बिचारक छलाह आ आधुनिक सुधारक पक्षमे अपन विस्तृत ज्ञानक उपयोग प्राचीन ग्रन्थ सबसँ उद्धरण दऽदऽकऽ कयलनि। यद्यपि ओहि समय मे ईसाई-धर्मप्रवर्त्तक लोकनिक धर्मपरिवर्तन सम्बन्धी प्रयास जारी छल तथापि ताहि समय एक नवीन धर्मक जन्म भेलैक जकरा ब्रह्मवाद कहल गेलैक जे वस्तुतः इस्लाम तथा एकेश्वरवादक ऋणी छल, किन्तु संगहि, जेना एकर नामेसँ स्पष्ट अछि जे ई उपनिषद् तथा अद्वैतवाद दिस सेहो उन्मुख छल। ब्रह्मवाद हिन्दू चिन्तनकें एक नवीन दिशा देलक, किन्तु जातिवादक रूढ़िसँ आक्रान्त हिन्दू समाज एहि दोषसँ मुक्त नहि भऽ सकल आ ने अनेक देवी-देवताक विधाने छोड़लक।

हमरालोकनिकें बंकिमचन्द्रक चिन्तनधाराकें एही पृष्ठभूमिमे परेखबाक अछि आ देखबाक अछि जे कतय धरि ओहिमे विभिन्न संस्कृतिक समन्वय भेल छैक, कतयधरि ई एक एकीकृत दर्शन छलैक आ कतयधरि एहि पर किछु विशिष्ट लोकक उपयुक्त होयबाक दोषारोपण कयल जा सकैत छैक। हुनक समग्रलेखनमे एक खास बात ई स्पष्ट होइत अछि जे मानसिक प्रसन्नता तथा महत्ताक कुंजी आत्मसंयम थीक आ एकरे आवश्यकतापर ओ बेसी जोर देने छथि। शशिशेखर भट्टाचार्य एक एहन लम्पट युवक छल जकर मुख्य धन्धा अनजनुआकें जन्मायब देखबामे अबैछ, मुदा जखन बंकिमचन्द्रक सबसँ पहिल उपन्यास दुर्गेशनन्दिनीक कथा आरंभ होइत छैक तँ ओ एक संन्यासी एक तपस्वी-महात्माक रूपमे समक्ष अबैछ जे अपन सब प्रकारक लालसा-मनक आवेग-पर विजय प्राप्त कऽ चुकल हो। हुनक दोसर उपन्यास कपालकुण्डलाक मतिबीवी मुगल दरबारक आमोद-प्रमोद-प्रिय ललना छलि। ओ अपनाकें ओहि मधुमाछीक रूपमे बुझैत छलि जे एक फूलक बाद दोसर फूलक रस चूसैत फिरैत अछि, मुदा एहि विषयानन्दक

निस्सारताक ज्ञान ओकरा तखन होइत छैक जखन ओकरा अपना पतिक प्रगाढ़ प्रेम प्राप्त भऽ जाइत छैक, वस्तुतः कतोक वर्ष पूर्वेसँ जकरासँ ओ विछुड़ि गेलि छलि बंकिमचन्द्रक चारिम उपन्यास विषवृक्ष एक प्रकारेँ नैतिकतामूलक आत्मसंयमक प्रसंग शिक्षे कहल जाइत छनि आ यैह शिक्षा ओ अपन बादक उपन्यास तथा निबन्ध सबमे अधीतशास्त्र सवसँ उद्धरण दऽ दऽ कऽ देने छथि आ खूब विचार-पूर्वक देने छथि।

अतः ई कहब उचित नहि जे बंकिमचन्द्र एककविसँ द्रष्टा आचरणवादीक रूपमे विकसित भेलाह। यद्यपि हुनक आचरणवादी प्रवृत्ति क्रमशः आक्रामक रूप ग्रहण कऽ लैत छनि आ कतहु कतहु सर्जनात्मक शक्ति क्षीण होइत सेहो देखि पड़ैछ। किन्तु हुनक विकास-रेखा यदि एकरा विकास कहल जाय तँ-निरन्तर बढ़ैत रहलनि। मनुष्य सुखक प्राप्ति भोगसँ नहि, प्रत्युत आत्मसंयमसँ कऽ पबैत अछि। परन्तु आत्मसंयम अथवा आत्मनियन्त्रण एक नकारात्मक उपलब्धि थीक, कारण जे जँ इन्द्रियनिग्रहकरबाक पृष्ठभूमिमे कोनो आदर्श नहि अछि तँ ओ आत्म-संयम आत्महननक स्वरूप ग्रहण कऽ लैत आ जीवनमे कोनो वस्तु स्वीकारात्मक नहि रहत। जीवनक उद्देश्य उत्कर्षक चरमता थीक ठीक ओहि पूर्ण विकसित गुलाबक फूल जकाँ जकर पंखुड़ी दूर-दूर धरि छितरायल रहैत छैक। बंकिमचन्द्र डार्विन तथा हर्बर्ट स्पेंसरक[1] कृति सवसँ सेहो परिचित रहथि, किन्तु हुनका दर्शनकेँ अपन आधारभूत रूपमे आ केवल ओही रूपमे-सर्जनात्मक विकासक सिद्धान्तसँ सेहो जोड़ल जा सकैछ।

जीवन व्यक्तित्वक समग्र विकासक दिशामे एक निरन्तर प्रयास थीक आ ई समग्र विकास हमरा सभक समस्त शारीरिक, सौन्दर्यबोधात्मक तथा बौद्धिक-क्षमताक लयात्मक विकासक प्रतिफलन थीक। सीले कहने छथि—धर्मक सारतत्व थीक संस्कृति आ बंकिमचन्द्र अपन अन्तिम उपन्याससँ पहिलुक उपन्यास 'देवी चौधुरानी' मे एहि उक्तिकेँ आदर्श वाक्यक रूपमे उद्धृत कयने छथि।

बंकिमचन्द्र भगवान् श्रीकृष्णक कथाकेँ अपना शब्दमे अभिव्यक्त कयने छथि अर्थात् ओ हुनका ईश्वरक अवतार नहि मानि, मनुष्य सभक मध्य एक विशिष्ट मानव मानने छथि आ एहि प्रकारेँ ओ प्राच्य तथा पाश्चात्य चिन्तनक मध्य एक सन्तोषजनक समन्वय स्थापित करबामे अंशतः सफल भेल छथि। धर्मक संस्कृति-वाला सिद्धान्त ओ पश्चिम सँ पैंच लेलनि, किन्तु एकर मूर्त्तिमान स्वरूप हुनका

1. बंकिमचन्द्र जीवनक लक्ष्यकेँ अधिकतम आनन्द मानव तथा आन्तरिक ओ बाह्य स्थिति सभक निरन्तर सन्तुलनक आवश्यकता पर बल देब तथा उच्चतर आ लघुतर भावनाक-मध्य भेद करब स्पेंसरक आचार सम्बन्धी सिद्धान्तक समीप पड़ैत छनि। परन्तु स्पेंसर 1892-93 धरि एहि सम्बन्धमे स्पष्टरूपेँ किछु नहि कहने छलाह जखन कि बंकिमचन्द्रक कृति तावत धरि लिखल जा चुकल छलनि।

प्राप्त भेलनि पूर्वमे अर्थात् महाभारतक श्रीकृष्णमे। ओ दोसर-तेसर प्रकारक कपोलकल्पित कथा सबकेँ एक कात टारि, श्रीकृष्णकेँ ओही रूपमे उपस्थित करबाक प्रयास कयने छथि जाहि रूपमे ओ मूलतः महाभारतमे छथि। ओना हुनक प्रयास सर्वथा सफल नहि भेलनि अछि। रवीन्द्रनाथ टैगोर ठीके कहने छथि जे ई श्रीकृष्ण मानवोमे लघुतर छथि, प्रत्युत एक विचारमात्रथिकाह, एक अमानवीकृत प्रतीक थिकाह। परन्तु एतय हमरा सभक सम्बन्ध कलात्मक प्रस्तुतीकरणक अपेक्षा विचारसँ अधिक अछि। वंकिमचन्द्र महाभारतमे एवं तकर वाद कहल गेल कृष्ण-गाथाकेँ तीन प्रकारेँ बुझवाक चेष्टा करैत छथि, मुदा ई तीनू रूप महा-भारतेमे विद्यमान अछि। प्रथम चरणमे श्रीकृष्ण एक मनुष्यक रूपमे व्यवहार करैत छथि आ कतहु हुनका देवतुल्य नहि मानल गेलनि अछि। पछाति विशेषतः भागवतगाथामे हुनका ईश्वरक अवतार मानल गेलनि अछि आ थोड़ वा बेसी हुनका एक दार्शनिक सिद्धान्तक मूर्त्तिमान रूपमे प्रस्तुत कयल गेलनि अछि आ आगाँ चलि कऽ तँ श्रीकृष्ण वैष्णवक भगवान् अथवा प्रेमक प्रतीक बनि जाइत छथि आ हुनका नामक संग रंग-विरंगक प्रेमकथा सब जुटिजाइत छनि। बंकिमचन्द्र महाभारतक मूलेकथाकेँ पकड़ैत छथि आ एतय हुनका पौरूषक पूर्ण चित्र भेटि जाइत छनि। ई जतयधरि एक मनुष्यसँ संभव छैक, अपन शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक तथा सौन्दर्यबोधात्मक, ताहि समस्त क्षमताकेँ विकसित कयलनि अछि आ यैह पूर्ण विकसित व्यक्तित्व महाभारतक विभिन्न उपकथा सबमे, विशेषतः कौरव-पाण्डवक युद्धसँ सम्बद्ध मुख्य प्रसंगमे क्रियाशील भेल अछि। कुरुक्षेत्रक रणभूमिमे श्रीकृष्णक उद्देश्य आ आदर्श की छलनि? बंकिमचन्द्रक अनुसार भारत-वर्ष ताहि समयमे छोट-छोट राज्यमे विभाजित छल आ जे सब परस्पर लड़ैत रहैत छल। तेँ एहिठाम तावत धरि शान्ति आ प्रगति नहि भ ऽ सकैत छल जावत-धरि ई सब एक शासकक अधीन नहि भ ऽ जाइत आ एहि लक्ष्यक पूर्त्ति तखने संभव छल जखन ओहि छोट छोट राज्यकेँ समाप्त कऽ देल जाइत। एहि दीर्घकालीन संघर्षक मूल यैह छल जाहिमे सामान्य राजकुमार लोकनिक हिसाब-किताब लगा देल गेलनि। एहि गाथाक ऐतिहासिक पक्ष मनगढ़न्तो भ ऽ सकैत अछि, किन्तु एहिठाम हमरालोकनि इतिहासक प्रसंग नहि, प्रत्युत बंकिमचन्द्रक दर्शनक प्रसंग गप क ऽ रहल छी। एतहु तथा आनो स्थल पर ओ अपन सिद्धान्तक व्याख्या कयलनि अछि। कुरू क्षेत्रक मैदानमे भेल विनाशलीलामे श्रीकृष्ण मात्र एक दर्शक छलाह। ओ एहि विनाशकेँ रोकबाक प्रयत्न नहि कयलनि, प्रत्युत ई कहल जा सकैछ जे अंशतः ओ एकर उपाय कयनिहार छलाह। किएक? बंकिमचन्द्रक मतानुसार कर्त्तव्य वायवीय नहि होइछ, ई बहुत अंशमे स्थितिपर निर्भर करैछ। आधुनिक लोक प्रायः एहि स्थितिकेँ सामाजिक आर्थिक कारण कहि सकैछ। जाहि स्थितिमे श्रीकृष्ण—ईश्वरक अवतार रूपमे नहि, एक मनुष्यक रूपमे—भारत केँ देखलनि

ताहि स्थितिमे शान्ति तथा प्रगति विनाशहिकमाध्यमसँ संभव छलैक आ तखने ओ तथा अर्जुन नवनिर्माण होयवासँ पहिने विनाशकार्यकेँ सम्पन्न करब अपन कर्त्तव्य बुझलनि।

एतय हमरा लोकनि बंकिमचन्द्रक चिन्तनमे परिवर्त्तनक विरोधी तत्त्वक आधारकेँ स्पर्श करब कर्त्तव्य ने प्रवृत्तिएँ आ ने कोनो मौलिक दर्शनसँ निर्धारित होइत छैक, प्रत्युत वास्तविक स्थिति तथा सामाजिक व्यवस्थासँ निर्धारित होइत छैक, जाहिमे हमरालोकनि रहैत छी। श्रीकृष्णक बहुविवाहक प्रसंग जखन बंकिमचन्द्रसँ पूछल जाइत छलनि तँ हुनक यैह उत्तर होइत छलनि। हुनक कहव छलनि जे एहि कथामे बहुत-किछु अतिशयोक्ति अछि, किन्तु जँ एहिमे सत्यता होयवो करैक आ महाभारतसँ प्रमाणितो भ ऽ जाय जे हुनका एकसँ अधिक पत्नी छलनि तथापि हुनका एहि हेतु दोषी नहि मानल जा सकैत छनि, कारण भ ऽ सकैत छैक जे ताहि समय एहने प्रथा रहल होइक आ एही कारणेँ बंकिमचन्द्र मालावारी समान समाज-सुधारकक प्रति कटु-छलाह। ई नहि जे ओ बहुपत्नी-प्रथा अथवा कोनो सामाजिककुरीतिक समर्थक छलाह। ओ सोचैत छलाह जे वास्तविक प्रगति नैतिक वा राजनीतिक आचरणकेँ सुधरले सँ भ ऽ सकैत छैक आ तखन सामाजिक कुरीतिसब स्वतः लुप्त होइत जायत। एही सिद्धान्तपर अड़ल रहलाक कारणेँ हुनका ईश्वरचन्द्र विद्यासागर सदृश विशिष्ट व्यक्तिक सुधारवादी अभियानमे मिथ्या आदर्शवादिताक चिह्न देखि पड़ैत छलनि।

महाभारतक श्रीकृष्णकेँ बंकिमचन्द्र संस्कृतिक सर्वश्रेष्ठ साकार रूपमे धर्मतत्त्व तथा अन्यान्यकृतिमे विश्लेषित कयने छथि, किन्तु श्रीकृष्ण ओहि ठाम एक परम अवसरवादी देखि पड़ैत छथि, एहन अवसरवारी जे अपन अभीष्ट सिद्धिक हेतु प्रत्येक वस्तु आ प्रत्येक व्यक्तिक शोषण क ऽ सकैत छथि। एहि सन्दर्भमे हमरालोकनिकेँ बर्नार्डशाक सीजर आ क्लांदश्लीक स्मरण भऽ अबैत अछि जकर सम्पूर्ण चेष्टा सांसारिक लाभ प्राप्त करबाक हेतु छलैक। किन्तु बंकिमचन्द्र सांसारिक सफलताकेँ लक्ष्य मानि ओकर स्तुति नहि कयने छथि। हुनका अनुसार प्रत्येक गतिविधिक एकमात्र उद्देश्य होयबाक चाही—मानवमात्रक कल्याण, अधिसंख्यक लोकक कल्याण मात्र नहि, प्रत्युत समस्त मानवजाति अथवा समस्त प्राणीमात्रक कल्याण। यदि अहां श्रीकृष्णकेँ सम्पूर्ण सृष्टिक अधिस्वामी मानैत छिऐनि तँ अहांकेँ ईहो ध्यानमे राखय पड़त जे ओ एहि सम्पूर्ण सृष्टि मे व्याप्त छथि आ एहि तरहेँ सेवा सैह प्रार्थनाक सर्वश्रेष्ठ रूप भ ऽ जाइत अछि। बंकिमचन्द्र एक राजनीतिक चिन्तक छलाह। हुनक दृष्टान्त क्रान्तिकारी आ भारतमे ब्रिटिश राजक समर्थक, दूनू समान रूपसँ दैत छलथिन। किन्तु हुनक राजनीतिक चिन्तनमे कतहु विरोध नहि छलनि। शासनक तात्पर्य होइत छैक लोककेँ चतुर्मुखी तथा समान विकासक अवसर उपलब्ध करायब, जँ ई अवसर भेटैत रहैक तँ विदेशीशासनमे

बेसी दुर्गुण नहि छैक, प्रत्युत भ ऽ सकैछ कोनो दुर्गुण नहि होइक। ओ बंगालमे मुगलशासनक तुलना पठान शासनसँ करैत छथि। पठानक अपेक्षा मुगल बेसी पटु प्रशासक छल, किन्तु ओ स्थानीय प्रतिभाकेँ प्रोत्साहन नहि देलक जखन कि पठान शासनकालमे बंगालमे हिन्दू पुनरुत्थान धरि भेल। एकर प्रमाण अन्यान्य वस्तुक संग नव्यन्याय तथा वैष्णव-दर्शनक विकास थीक आ एही कसौटी पर भारतमे ब्रिटिश शासन अथवा कोनों अन्यशासन, भने ओ देशी हो वा विदेशी, केँ कसबाक चाही।

लोक कल्याणसँ तात्पर्य रघुनाथशिरोमणि वा रघुनन्दन अथवा चैतन्य समान किछु गनल गूथल प्रतिभावान् व्यक्ति केँ अवसर उपलब्ध करायब नहि अछि। एहिसँ तात्पर्य सभक कल्याणथीक, छोट, पैघ, सम्पन्न, विपन्न सभक हेतु समान अवसर उपलब्ध करायब। एहि ठाम हम सब बंकिम चन्द्रक चिन्तनक अन्तिम छोर पर पहुंचैत छी अर्थात् हुनक क्रान्तिकारी आदर्शवाद। ओ समानताक पक्षपाती छलाह जकर अर्थ ई नहि जे सब प्रकारक अन्तर मेटा जाय। वर्कक कथनकेँ जँ उनटि देल जाय तँ बंकिम ई कहैत प्रतीत होइत छथि जे समानीकरणक तात्पर्य एक स्तरीयता आनब नहि, कतहु अन्तर रहबे करत जेना कि ट्रायल्स एण्ड क्रेसीडा मे यूलेसिस विश्लेषित कयने छथि, किन्तु समाज तथा शासनकेँ समान अवसर एवं अधिकारक व्यवस्था करहि पड़तैक। बंकिमचन्द्रक कमलाकान्त शॉकेर अल्फ्रेड डुलिटल जकाँ अनधिकारी गरीबक पक्षधर छनि। कमलकान्तक बिलाड़ि कहैत छैक—अहाँ सटकासँ हमरा एहि द्वारेँ पिटलहुँ अछि जे हम अहाँक दूध चोरा लेलहुँ अछि। प्राय: अहाकेँ ई जानि विशेषसन्तोष होइत जे ई दूध कोनो पैघलोक वा विद्वान् ल ऽ लेलनि अछि। किन्तु से किएक? की भूख हमरा थोड़ सतबैत अछि? एही भावनामेँ प्रेरित भ ऽ बंकिमचन्द्र कतोकवर्ष पहिने अर्थात् गत शताब्दीक सातम दशकमे, स्थायी समझौताकेँ भंग करबाक तथा भूमि जोतनिहारक बीच भूमिक वितरण करबाक दमगर तर्क देने छथि।

ई पूछल जा सकैछ जे आत्मसंयम तथा मानवतावादी क्रियाकलापक प्रति कोन प्रलोभन भ ऽ सकैछ जे आचारशास्त्रक आधारशिला थीक? बंकिमचन्द्र ईश्वरवादी छलाह आ हुनका मतेँ ताबत धरि कोनो गप्प नहि कयल जाय सकैछ जाबत धरि पहिने ईश्वरक सत्ताकेँ स्वीकार नहि कऽलेल जाय। ओ हेतुवादी सेहो छलाह आ हुनक तर्कक ढंग अठारहमशताब्दीक चिन्तक लोकनिक सुखवाद एवं प्रत्यक्षवाद पर आधारित छलनि। किन्तु एहि नास्तिकतावादी मत-मतान्तरसँ ओ शीघ्रे दूर हटि गेलाह, एतेक धरि जे ओ मिलकेर प्रभावमे लिखल अपन कतोक निबन्धकेँ दबा कऽराखि लेलनि आ कमलाकान्तक माध्यमसँ सुखवादक खाउ-पीबू, मौज उड़ाउक दर्शनक रूपमे उपहास कयलनि। हुनक कहब छलनि जे समस्त क्रिया-कलाप ईश्वरक निमित्त होयबाक चाही। 'आनन्द मठक' प्राक्कथनमे ओ

कहने छथि जे जीवनक बलिदान सेहो कोनो अर्थ नहि रखैछ जँ ओहिसंग भक्ति-भावना नहि जुटल हो। एहि प्रसंग ओ कोनो प्रकारक आशंका अथवा विवाद नहि चाहैत छलाह। हम संसार तथा मानवतासँ तखने वास्तविक प्रेम क ऽ सकैत छी आ हमर क्रिया कलाप तखने निःस्वार्थ भऽ सकैछ जखन हम स्मरण राखी जे एहि सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमे ईश्वर व्याप्त छथि आ वैह अन्तिम अधीक्षक अथवा न्याय कयनिहार थिकाह। संसारमे सबठीक भ ऽ जाय जँ हमरा लोकनि मानि ली जे हमरा सभक ऊपर ईश्वर छथि। हुनका दर्शनक ई पक्ष तर्कसम्मत नहि छनि, प्रत्युत बहुत अंशमे, जेना किछु दार्शनिक कहैत छथि, स्वेच्छावादक समान थिक, जकर अर्थ होइत छैक जे जँ हमरालोकनि ठोस तथ्यक आधारपर अपना सिद्धान्त केँ स्थापित नहि क ऽ पौलहुँ अछि तैयो हम सब ओकरा अपनयबापर भिड़ि गेलहुँ अछि। एकबेरि यदि एहि धारणाकेँ स्वीकार क ऽ लेल जाय, तखन अपन तर्कक प्रमाणमे वर्तमान तथ्य आ प्राचीन इतिहाससँ सन्दर्भ जुटबैत ओ अत्यधिक तर्क-सम्मत प्रतीत होअय लगैछ।

किन्तु लोकक प्रति प्रीतिभाव अथवा भक्तिभावना निश्चयात्मक रूपेँ की आश्वस्तकरैत अछि जे लोकक कल्याण होयबे करतैक? बंकिमचन्द्र स्वयं एहि दिस संकेत करैत कहने छथि जे लोककेँ परमकष्ट देनिहार किछु व्यक्ति सेहो ई बुझैत छथि जे हम ईश्वरेक इच्छाक पूर्ति क ऽ रहल छिऐनि। तखन एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति आ एक असहिष्णु व्यक्ति अथवा एक आदर्शवादी व्यक्ति आ एक उन्मत्त लोकक मध्य विभाजनरेखा कोना खीचल जाय? पुनः ओ लोककल्याण हेतु अपना केँ प्रतिज्ञात बुझैत छथि जेहन कि जीवनक लक्ष्य घोषित कयने छथि, ओ तँ लाखक लाखकेँ सत्यानाश धरि पहुँचा देलथिन, हुनक बराबरीमे तँ ईश्वरक उन्मत्तदास सेहो नहि अबैत छथिन। यद्यपि बंकिमचन्द्र अपन तर्क-वितर्क विस्तार सँ कतहु ने कयलनि, किन्तु एहि तर्कक विरोधमे हुनकर उत्तर होइतनि जे केवल लोक-कल्याणक दावा करबे पर्याप्त नहि होइत छैक, अन्ततः कोनो शासनक कुशलता एहि आधार पर परेखल जयतैक जे ओ लोकक अधिकारकेँ कोन प्रकारेँ सुरक्षित रखलकैक जेना हाशिम शेख आ परानमंडलक भूमि जोतबाक अधिकार आ रामा मल्लाहक माछमारबाक अधिकार। एक एहीटासँ राष्ट्रीय सम्पन्नताक न्यों पड़ि सकैत छैक आ यैह राष्ट्रीय प्रतिभाक विकासक प्रति निश्चयात्मक आश्वस्ति भ ऽ सकैत छैक। एहि दृष्टिएँ बंकिमचन्द्र अनेक प्रसंगमे परम्परावादी होइतो आधुनिक समाजवादक प्रवर्त्तक रूपमे प्रकट होइत छथि।

'आनन्द मठ' एक महान राजनीतिक उपन्यास थीक, मुख्यतः एहि हेतु जे ई जनसामान्यक वाणीक प्रतिनिधित्व करैत अछि। यद्यपि संन्यासी लोकनि संसार केँ त्यागि देलनि अछि तथापि लोकक संग छथि, लोकेक हेतु छथि आ लोकेक थिकाह। लोकक दुर्गति हुनकासभक आन्दोलनमे स्वतः मुखरित भ ऽ जाइत छनि

आ ओ लोकनि स्वदेशी अथवा राष्ट्रीयताक वास्तविक पक्षधर भ ऽ जाइत छथि। कारण ओ सनातन छथि तथा एही भूमिक सन्तति थिकाह। ई विवाद निस्तत्त्व थीक जे ई धर्म-युद्ध मुसलमानक विरुद्ध छल अथवा ब्रिटिश शासनक विरुद्ध। संन्यासी लोकनि स्पष्टरूपेँ ओहि असमर्थ मुसलमान शासकक विरुद्ध छल जे शासन तँ क ऽ सकैत छल किन्तु प्रशासन नहि किन्तु ओ विशेषतः अंग्रेजेसँ लड़ैत रहथि। अतः आनन्दमठ ओहि अनेक देशभक्तलोकनिकहेतु मार्गदर्शक बनि गेल जे अंग्रेजकेँ हिंसा द्वारा भगबय चाहैत छलाह। आनक कोन बात जे ई ओहू आन्दोलन सबकेँ अनुप्राणित करैत रहत—समय ओ स्थान कोनो हो—जे जनसामान्यक अधिकारक हेतु चलैत रहैत अछि। युवाशक्तिक एहि बढ़ैत लहरिकेँ के रोकि सकैछ? संन्यासी गबैत छथि आ गानक ई स्वर सब समय आ सबदेशक युवक-युवतीक हेतु रणआह्वान थिकैक।

एहि दृष्टिसँ हमरालोकनि वन्देमातरम् सदृश श्रेष्ठ गीतक—जे भारतीय साहित्यक अनुपम निधि थीक-समुचित गुणकेँ जानि सकैत छिऐक। बंकिमचन्द्रक समग्र प्रतिभा केन्द्रीभूत भ ऽ गेलनि अछि आ प्रेमक स्तुति गीत रूपमे अभिव्यक्त भेलनि अछि। ओ मातृभूमिक आह्वान करैत छथि जे नदीसबसँ सिंचित, फल लदलि आ शस्यसँ हरियर कचोर छथि। ओ केवल धरती माता नहि, अपितु दिव्यताक सिंहासनो थिकीह। बंकिमचन्द्र हिन्दू देवतालोकनिमे अनेक देवीलोकनिक—दुर्गा, लक्ष्मी तथा सरस्वतीक—रक्षाहेतु प्रार्थना करैत छथिआ किछु छिद्रान्वेषी दोषा-रोपण करैत छथिन जे एहि गीतमे हिन्दू मूर्त्ति-पूजाक गन्ध छैक। सत्यसँ दूर एहिसँ बढ़िकय किछुकेँ नहि कहल जा सकैत अछि। बंकिमचन्द्र स्वयं एहि उपन्यासक अन्तमे तथा आनोठाम बहुदेवत्ववादक निन्दा करैत, एकरा वास्तविक हिन्दुत्वक भ्रष्टरूप कहलनि अछि। जँ एकरा बिम्बरूपमे मानल जाय तँ कविताक प्रभावकेँ ओहिना बढ़बैत अछि जेना क्रिस्तानी कवितामे ग्रीक देवी-देवताक बिम्ब। महत्त्वक बाततँ ई अछि जे देश-भक्तक हेतु ईश्वर मातृभूमिमे सर्वतोभावेन व्याप्त छथि, भने हुनका कोनो नामसँ सम्बोधित कयल जाइनि। ई एक नवीन प्रकारक पूजा पद्धति भ ऽ सकैत अछि। टैगोरक 'घर-बाहर' नामक उपन्यासक एक पात्र किछु एही प्रकारक विरोध करबो कयलक अछि, मुद्रा जँ सेवा ईश्वरक प्रति समर्पित भाव थीक आ लोक-कल्याण एहि सेवाक प्रतिफल थीक तँ बंकिमचन्द्रक अनुसार देशभक्तिकेँ धर्मक आधार भेटबाक चाहिऐक। देवत्वरूपमे यैह माता थिकीह जे हमरा बाहुमे शक्ति तथा हमरा शरीरमे जीवनक संचार करैत छथि। आ ककरा ओ ई शक्ति दैत छथिन? एक राजा अथवा एक निरंकुशशासक अथवा कोनो दलविशेषकेँ नहि, प्रत्युत भूमिक सब बेटा-बेटीकेँ। हुनक सभक भुजा एहिमाताक हेतु लड़तनि आ सबसँ महत्त्वपूर्ण बात ई थीक जे हिनका लोकनि स्वर दबतनि नहि, प्रत्युत युद्धक हेतु आरो जोरसँ ललकारतनि संगहि राष्ट्रीय आकांक्षा तथा

माङक घोषणा करतनि । बंकिमचन्द्रक परिकल्पना जें हेतु अत्युच्च ओ अतिव्यापक छलनि आ जें हेतु ओ अपना देशभक्तिकें धर्मक आधार देने छलथिन तें ई गीत जकरा अठारहम शताब्दीमे बंगालक एक सुदूर कोनमे क्रान्तिकारी सभक एक छोटसन दल गौने छल, भारतीय राष्ट्रीयताक तीक्ष्णतम अभिव्यक्ति बनि गेल । कोनो साहित्यमे एहन देशभक्ति पूर्ण गीत भेटव असंभवप्राय होयत जाहिमे एतेक उच्च ओ तीव्र भावना हो आ अभिव्यक्ति एहन सजीव होइक ।

प्रारम्भिक उपन्यास

बंकिमचन्द्रक चिन्तनक मौलिकता एवं गुणवत्ताक दृष्टिसँ हमरालोकनि जे किछु मूल्यांकन करिऐनि, किन्तु आधुनिक भारतक प्रथम उपन्यासकारक रूपमे हुनक स्थान सुनिश्चित छनि; प्रत्युत श्रेष्ठतम उपन्यासकार लोकनिमे मानल जयतनि, यद्यपि स्कॉट जकाँ, जनिकासँ हिनकर तुलना कयल जाइत रहलनि, हिनको प्रसिद्धिमे अस्थायीरूपेँ ग्रहण लगैत रहलनि।

बंगला उपन्यास-लेखनक्षेत्रमे उतरबासँ पहिने बंकिमचन्द्र ईश्वरचन्द्रगुप्त द्वारा सम्पादित 'संवाद प्रभाकर' तथा 'संवाद साधुरंजन' नामक पत्रिकाकेँ अपन रचनासँ सहयोग करैत छलथिन आ से रचना सब अधिकतर पद्यक रूपमे रहैत छलनि। 'ललिता आ मानस' नामक हुनक दुइगोट कवितासंग्रह 1856 में अर्थात हुनक छात्रजीवनकालेमें प्रकाशित भेल छलनि। किशोरी चन्द्र मित्र द्वारा सम्पादित 'इण्डियनफिल्ड' नामक पत्रिकामे हिनक अंग्रेजीमें लिखल राजमोहन्सवाइफ नामक कथा 1864 में धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित भेल रहनि। किन्तु ओहि रचनासबमे ने हुनक प्रतिभाक झलक भेटैत अछि आ ने हुनक परवर्ती रचना सभक कोनो प्रकारेँ पूर्वास्वादन करबैत अछि, तेँ ताहिसबपर विस्तारसँ विचारकरब विशेष आवश्यक नहि। हँऽ ई कहि देब संगत होयत जे राजमोहन्सवाइफ हुनक जीवनकालमे पुस्तकक आकार नहि लऽ सकलनि, प्रत्युत 1935 धरि ओकर प्रकाशन नहि भेल छलैक। ओना ईहो कोनो थोड़ महत्त्वपूर्ण नहि जे ताहि दिनमे, जहिया ओ प्रसिद्धिक शिखर पर छलाह, ओ एकर बंगला-अनुवाद आरंभ कयने रहथि, किन्तु सातम अध्यायकबाद ओ अनुवादकरब छोड़ि देलनि। स्पष्टतः ओ अनुभव कयलनि जे ई हुनक लेखनीक कोनो विशिष्टकृति नहि थिकनि।

दुर्गेशनन्दिनी (1865) बंकिमचन्द्रक बंगला उपन्यास रचनामें प्रथम साहसिक कार्य छलनि, परन्तु एकरा साहसिक कार्य कहब भ्रामक होयत, कारण यद्यपि ई निर्दुष्ट नहि छनि तथापि कलाक दृष्टिएँ प्रथमकोटिक छनि आ ई छलनि एक युगप्रवर्त्तक उपन्यास। एकर आरम्भ एक अश्वारोहीक यात्रा-वर्णनसँ होइत छैक। अश्वारोही मुख्य मार्ग पर विष्णुपुरसँ मन्दारण जा रहल अछि। एक सुप्रसिद्ध

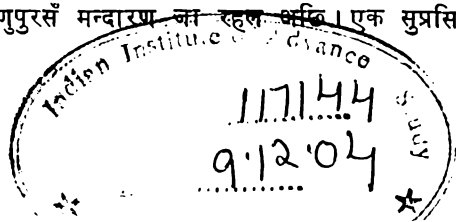

आलोचक समुचिते कहने छथि जे ई मुख्यमार्ग बंगला उपन्यासक अथवा ई कहल जा सकैछ जे भारतीय उपन्यासक मुख्यमार्ग थीक आ एही मार्ग पर परवर्ती उपन्यासकार लोकनि चललाह अछि। भलें कखनहुँ कोनो गलीकूचीमे घोँसिआ गेल होथि, मुदा घुरि कऽहुनकालोकनिकें एतहि आवय पड़तनि। प्रथमतः दुर्गेशनन्दिनी एक कथा थीक जे मोहक एवं रोचक ढंगें कहल गेल अछि। निःसन्देह ई कथमपि नहि बिसरबाक चाही जे उपन्यासकार खिसक्कड़े होइत छथि। कथ्यमे भने पात्र प्रधान हो अथवा उद्देश्य, खिसक्कड़ीक आधार हुनकालोकनिक रचनामे रहिते छनि। दोसरबात जे एहिमें कोनो ने कोनो भाव रहिते छैक अथवा दुइओ गोट मुख्य भाव भऽ सकैत छैक-प्रेमक आ शूरवीरताक, रोमांसमें जकर रहब अनिवार्य छैक-आ ई भाव पात्रमे समाविष्ट रहैत छैक आ एहि पात्रसभक चरित्रचित्रण सूक्ष्म तासँ जँ नहि तँ सशक्त रूपें अवश्य कयल गेल रहैत छैक। मध्य मध्यमें अनुपपत्ति वा क्लिष्ट घटना तथा एक-आध भावनाकें उद्‌बुद्ध कयनिहार नाटकीय प्रासंगिक वार्ता सेहो रहैत छैक, किन्तु आहिसँ कथाक मानवीय गुणक ह्रास नहि होइत छैक, प्रत्युत सुख दुख, श्वासोच्छ्वास, त्याग आ आनन्दक भावना अक्षुण्ण रहैत छैक। आ एहि सब मानवीय क्रिया-कलापक पृष्ठभूमिमें मानव-नियतिक आभास सेहो होइत रहैत छैक, एक एहन नियतिक जे विडम्बनापूर्ण तथा विद्वेषमूलक थीक, किन्तु पूर्णतः अतर्क्य नहि थीक। बहुधा नियति कुटिल होइत अछि आ अपना समक्ष मानवीय चातुर्यक किछु ने चलय दैत छैक।

यद्यपि दुर्गेशनन्दिनी प्रेम तथा युद्धक कथा थीक, किन्तु एकर पृष्ठभूमिमे इतिहास छैक आ तें एकरा ऐतिहासिक उपन्यास सेहो कहल जा सकैत छैक। यद्यपि बंकिमचन्द्र स्वयं से नहि मानैत छलाह। मानसिंह अकबरक दरबारी छल संगहि ओकर एक बहुत पैघ सेनापतिओ छल। ओकरा पठान लोकनिसँ उड़ीसाकें जितबाक भार देल गेलैक आ दुर्योगवश ओहि युद्धमे ओकर बेटा जगतसिंहक पठान-सभक विशाल सेनासँ हारि भऽ गेलैक आ किछुदिनुक हेतु ओकरा एक दुर्गमे शरण-लेबऽपड़लैक। ओही समय मे पठान शासक कतलूखाँक मृत्यु भऽ गेलैक आ पठान सब मानसिंहसँ सन्धि कऽलेलक। ई तँ ऐतिहासिक तथ्य थीक, किन्तु एही तथ्य कें लेखकक सर्जनात्मक कल्पनाशक्ति लोक-कलाक आधार पर परिवर्तित कऽ देल-कनि अछि। अर्थात् ओ एहि प्रसंगकें जगतसिंह आ सरदारक पुत्री तिलोत्तमाक मध्य प्रेममे बदलि देलथिन अछि। पराजयक कारण एक आकस्मिक गलती होइत छैक। गढ़ मन्दारण दुर्ग विस्मित-चकित अछि, सरदारकें बन्दीबनाओल जाइत छैक आ मूड़ी छोपि लेल जाइत छैक। प्रतिशोधक भावनासँ भरलि सरदारक विधवा पत्नी द्वारा छूरा भोंकि कऽ कतलू खाँक हत्या भऽ जाइत छैक। ई प्रेम कथा युद्धक वृत्तान्तमे बदलि जाइत अछि, कारण ओ दुर्ग ओही राति घेड़ायल आ जीति लेल गेल जाहि राति जगतसिंह ओतय छल आ सरदारक पुत्री तिलोत्तमाक

संग अभिसार कऽ रहल छल। दोसर भागमें स्थिति आरो ओझरा जाइत छैक, कारण जे बन्दी जगतसिंह कतलू खाँक पुत्री आयशाक हृदयमे सेहो अपना प्रति भावना जगा दैत छैक, ओना कतलू खाँक भातिज सेनापति उस्मान खाँ सेहो आयशासँ विवाह करबाक इच्छुक उमेदवार अछि। यद्यपि उस्मानखाँ एक ऐतिहासिक व्यक्ति अछि, आयशा नहि आ उस्मानखां तथा जगतसिंहक मध्य ई प्रेमक स्पर्धा केवल कल्पित कथा थीक अथवा अनुमान।

यद्यपि बंकिमचन्द्र पर्याप्त स्वतन्त्रता लैत छथि, तथापि इतिहासक मुख्य घटना सबकेँ यथावत् रहय दैत छथिन-यथा पठान युद्ध, जगतसिंहक पराजय तथा पुनः शान्ति, ई सब यथावत् छनि-आ संगहि ओ बल कोन बातपर दैत छथि तँ सामान्यतः जे ओहि स्थिति तथा परिस्थितिमे संभाव्य छल। जेना दुर्गसँ संबद्ध घटनाकेँ ओ मानसिंहक महलसँ सम्बद्ध कऽ, सरदारक अतीतकेँ प्रमुखता दैत छथिन, ई विस्तार तथा एक कथाकेँ दोसर कथाक संग जोड़ब एक काल्पनिक, अनैतिहासिक, किन्तु नितान्त संभाव्य पात्र-सरदारक स्त्री विमलाक माध्यमसँ संभव भऽ सकलनि। जगतसिंह आ सरदारक कन्या तिलोत्तमाक प्रेमक मुख्य प्रसंग दुर्बल छैक। जगतसिंह इतिहासमे पियक्कड़ नम्बर एक अछि जे नायकरूपमें उपस्थित कयल गेल अछि आ ओकर चेष्टाप्रचेष्टा आ संवाद नायकोचित नहि भऽ भावुकतापूर्ण छैक। संगहि सरदारक कन्या, जकरा नामपर उपन्यासक नामकरण भेल छैक, एक रङलि-ढङलि कनियाँ-पुतरासँ बेसी आर किछु नहि अछि। किन्तु विमला ओहन नहि, जकर कुशाग्रबुद्धि, एहन पतिक प्रति उत्कट निष्ठा, जे प्रकट रूपमे ओकरा स्वीकारो नहि करैत छैक तथा हास्यक प्रखर चेतना जे कठिनसँ कठिनोक्षणमें ओकर संग नहि छोड़ैत छैक, उपन्यासक पूर्व भागकेँ तीक्ष्णता आ पुष्टता प्रदान करैत अछि। उत्तर भागमे वस्तुतः जे क्षीणता आबय लगैत छैक तँ तकर एकमात्र कारण विमलाक पृष्ठभूमि पाछाँ रहि जायब थिकैक।

उत्तर भागक मुख्य पात्र कतलूखाँक कन्या आयशा थीक जे दोसर अनैतिहासिक पात्र थीक, जकरा बंकिमचन्द्र नारी-रत्नक रूपमे प्रस्तुत कयलनि अछि आ आत्मसंयम तथा त्यागक चरित्र-चित्रणकदिशामे जे हुनक प्रथम प्रयास थिकनि। ऐतिहासिक दृष्टिएँ आयशा विश्वसनीय पात्र नहि अछि, कारण जे ओकरा पर विश्वास करबाक हेतु हमरा लोकनिकेँ ई मानय पड़तजे अन्तः पुरमे एक नवाबक बेटी एक राजपूत राजकुमारक अर्थात् एक शत्रुक सेवा-शुश्रूषा कऽ सकैत अछि। कलात्मकतोक दृष्टिएँ ओ विश्वसनीय नहि अछि। ओतबो नहि जतेक ओकर समतुल्य स्कॉटक उपन्यास 'आइवनहो' मे ज्यूक पुत्री रेबेका[1]। ओकर आत्मनियन्त्रण

1. किछु गोटेक सोचब छनि जे आयशा रेबेकेक अनुकरण थीक। किन्तु बंकिमचन्द्रक कहब छनि जे जहिया ओ दुर्गेशनन्दिनी लिखलनि, आइवनहो ओ नहि पढ़ने रहथि।

भने वीरतापूर्ण होइक किन्तु ओकर प्रेम व्यापार जखन मौनक बन्धन ढील होइत छैक तँ नाटकीय छैक, आ से ओतवे नाटकीय जतेक ओकर पितियौत भाय उस्मानक ईर्ष्या जे ओकरा अपन नहि बना सकलैक। ओ शोभाक प्रभामण्डल लेने कथा सँ फराक होइत अछि, किन्तु अन्तिम किछु पंक्तिकेँ छोड़ि, जखन ओ विषाक्त औंठीकेँ दूर फेकि दैत छैक, पुनः कतहु प्रकट नहि होइत अछि आ एक रङलि-ढङलि कनियाँ-पुतरा बनलि रहबाक कारणेँ ओहि घटनासबकेँ जीवन्तता नहि प्रदान कऽ सकलि जाहि सभक केन्द्रमें स्वयं रहैत अछि। एकर विपरीत उस्मान एक रोचक पात्र अछि, किन्तु जहिना ओ आयशाक सम्पर्कमें अबैत अछि, ओहो मन्त्रचालित आ मूर्च्छित जकाँ व्यवहार करैत अछि।

कपालकुण्डला (1866) बंकिमचन्द्रक दोसर उपन्यास एहि दोष सबसँ मुक्त छनि, प्रत्युत ओहिमे किछु विशेष गुण छैक। कलाक दृष्टिएँ उत्तम कृति थिकनि तथा परिकल्पना आ प्रणयनक दृष्टिएँ महान् सेहो। एकरा विश्वक श्रेष्ठतम उपन्यासक संग राखल जा सकैत छैक। ओकर केन्द्रबिन्दु एक एहन समस्या थिकैक जे मनोवैज्ञानिक दृष्टिएँ अद्भुत होयबाक संगहि आंशिक रूपमे आध्यात्मिक सेहो छैक। मानवचरित्र पर निसर्गक की प्रभाव पड़ैत छैक? कल्पना करू जे एक कन्याकेँ बाल्यकालेसँ मानवसमाजसँ दूर आनि प्रकृतिक कोरामे राखि देल जाइक तखन यौनवासनाक प्रति ओकर की प्रतिक्रिया होयतैक? उत्तरमें कहल जा सकैत छैक जे प्रकृतिक मूलेमे यौनप्रवृत्ति छैक आ ओ जननशील अछि, तेँ ओकरा एहि हेतु सामाजिक संस्कारक अपेक्षा नहि रहैत छैक। कालिदासक शकुन्तला आ शेक्सपीयरक मीरांडाक व्यवहार एहने छैक, कारण जे जखने ओकरा सबकेँ जैविक दृष्टिएँ आकर्षक व्यक्ति भेटि जाइत छैक, तुरन्त अपन इच्छाक पूर्ति कऽ लैत अछि।

बंकिमचन्द्रक कल्पना एक एहन पात्रक सृष्टिकरैत छनि जे मूलतः शकुन्तला आ मीरांडासँ भिन्न छनि आ ओ ओकर कथाकेँ समुचित पृष्ठभूमिमे रखने छथि, ओहो मीरांडा जकाँ समुद्रतटपर पालल-पोसल गेल अछि आ कापालिकक खोपड़ी सेहो प्रोस्पेरोक कोठली जकाँ प्रकृतिएक मध्यस्थित छैक। किन्तु कापालिक प्रोस्पेरो अथवा कण्वऋषि जकाँ उदार शिक्षक नहि अछि, ओ एक तान्त्रिक संन्यासी थीक जे अपन सम्प्रदायक रहस्यक अनुरूपताक संग मनुष्यक शवपर बैसि, मानव-कपालमे रक्त भरि चढ़बैत, अपन अनुष्ठान पूर्ण करैत अछि। एहन भयंकर व्यक्तिक, जे विकट रूपक कर्मकाण्डी अछि संगहि जकरामे राक्षसी वृत्ति छैक आ तकर प्रतिदिनुक निकटता जतय कपाल-कुण्डलामे मानवक प्रति दयाक भाव जगबैत छैक ततय अपना प्रति कठोरताक भाव सेहो, जाहि कारणेँ ओकरामे भावीक प्रति अन्धविश्वास उत्पन्न होइत छैक। बंकिमचन्द्रक अन्यान्य उपन्यास जकाँ एहिमे कोनो ज्योतिषी द्वारा कपारक लिखलाहा नहि पढ़ल जाइत छैक। ओ मानवचरि-

त्रक एक अंगबनि गेल अछि। तेँ ई कोनो आश्चर्यजनक बात नहि जे कपालकुण्डलासन नारी शकुन्तला अथवा परडिटा वा मीरांडासँ भिन्न व्यवहार करैत अछि। परडिटा प्रकृतिक आङनमे स्वाभाविक रूपेँ जनमल हरियरीकेँ देखि ततेक आनन्द विभोर भऽजाइत अछि जे कृत्रिम रूपेँ लगाओल फूल सबकेँ नापसिन्न करय लगैत अछि, भने ओ फूल सब केहनो सुन्दर हो। परन्तु तरुणी शकुन्तला बाल्यकालेसँ फूल, लता आ पशु सबपर ओहिना स्नेह-वर्षा करैत आइलि छथि जेना कोनो माता अपन सन्ततिपर। कपालकुण्डला ओहन नहि अछि। ओकरा हेतु प्रकृति अपन रूक्षता तथा अमानुषिकताक अछैतो मोहक छैक। समुद्रतट बालुक ढेरसँ भरल छैक आ चारुकात जनमल सघन झाड़-झंखाड़ जीवनक समृद्धिक कोनो आभास नहि दैत छैक। पुरूषक उपस्थिति, जकरा मीरांडा अनेक वेरि वीर कहैत छैक, ओकरामे तथा परडिटा आ शकुन्तलामे संभोग तथा जननशीलताक भावना जाग्रत करैत छैक, किन्तु कोनो पुरुषकेँ संकटापन्न स्थितिमे देखिओ कऽ कपालकुण्डला सकरुण भऽउठैत अछि। यैह कारण छैक ओ नवकुमारक रक्षा हेतु अतिशय प्रयत्न करैत अछि, किन्तु ओकर अनुभव ओकरा अपना प्रति आश्चर्यजनक रूपेँ निरपेक्ष बना दैत छैक।

बंकिमचन्द्र कपालकुण्डलाक चरित्र-चित्रण मात्र ओकर भावना तथा ओकर वातावरणकेँ प्रत्यक्षरूपेँ अंकित नहि करैत छथिन, प्रत्युत एक अद्‌भुत अन्तरक माध्यमसँ सेहो करैत छथिन। कपाल-कुण्डलाक प्रतिद्वन्द्वी-ओकरा पतिक पहिल पत्नी पद्मावती अथवा मतिबीबी-कइतिहास आ व्यक्तित्व ओतबे विचित्र आ ऐन्द्रजालिक छैक जतेक ओकर अपन। पद्मावतीक बाप पहिने इस्लामधर्म स्वीकार कयलकै आ तखन अकबरक प्रमुख दरबारी बनल। एहीं प्रकारेँ पद्मावतीक नाम बदलि कऽ लुतफुन्निसा अथवा मतिबीबी भऽ गेलैक आ ओकरा मुगल दरबारक विभिन्न तथा अन्तरंग अनुभवप्राप्त भेलैक जाहिमे प्रेमलीलासँ लऽ कूटनीतिक एवं कपट-प्रबन्धसँ सम्बद्ध अनुभव सेहो छलैक। ओ एहन महिला अछि जे आनन्द आ सत्ता दूनूसँ प्रेम करैत अछि, किन्तु ठीक एकर विपरीत कपालकुण्डला दूनूसँ विमुख अछि। यद्यपि ई आश्चर्यजनक तँ अछि, किन्तु अस्वाभाविक नहि जे एहि दूनू महिलाक जीवन एक दोसरसँ टकराइत छैक, कारणजे मतिबीबी दरबारक कामुकतापूर्ण तथा षड्यन्त्रसँ भरल दिनचर्यासँ अकछि कऽ अपन पहिलुक हिन्दू स्वामीक प्रति अनुरक्त भऽ जाइत अछि, यद्यपि आब ओ कपाल कुण्डलासँ विवाह कऽ चुकल अछि। ई बड़ रोचक अछि जे दूनू महिला सोचैत अछि जे ओकरा सबकेँ भाग्य चला रहलैक अछि आ तैयो दूनू अपना-अपना ढंगेँ सोचैत अछि। जखन कपालकुण्डला कापालिक केँ छोड़ि अपन नवविवाहित पतिसंग पड़ाइत अछि तखन ओ देवी भवानीकेँ एकटा पात चढ़बैत छनि, किन्तु ओ पात मूर्ति परसँ खसि पड़ैत छैक तकर तात्पर्य ओ ई लगबैत अछि जे देवी ओकर अर्चना नहि स्वीकार

कयलथिन आ ने विवाहक हेतु आशीर्वादे देलथिन। धर्मक प्रति अतिशय निष्ठा रखनिहारि कपालकुण्डला अनुभव कयलक जे पत्नीक रूपमे ओकर जीवन विनाश-कारी होयतैक। एहि भावनासँ ओकरा अन्तरमे असांसारिकता भरि जाइत छैक जाहिसँ ओ एक विचित्र छटपटाहटि आ विरागसँ भरिजाइत अछि।

कपालकुण्डला कोनो यूनानीनाटकेक समान गीतात्मकताक दृष्टिएँ सुसंघटित मर्मस्पर्शीकृति थीक। ई दू गोट विलक्षण महिलाक कथा थीक। मूलत: एक एहन महिलाक जकरा प्रकृति तथा शिक्षा असांसारिक बना देलकै अछि। ई कोनो ऐतिहासिक उपन्यास नहि थीक, किन्तु यथेष्ट विलक्षणता ई छैक जे इतिहाससँ एहि कल्पनाश्रित तथा अस्वाभाविक कथाकेँ यथार्थक यथोचित पुट देबाक काज लेल गेलैक अछि। एहिमे केवल एकेटा प्रधान घटना छैक जे यद्यपि सशक्तरूपेँ कहल गेल छैक तथापि मुख्य कथासँ सर्वथा भिन्न प्रतीत होइत छैक। ई घटना मतिबीबीकेँ मेहरून्निसासँ, जे पछातिकाल इतिहासमे नूरजहाँक नामेँ प्रसिद्ध भेल, भेट होयब थीक। बंकिमचन्द्र अपन बहुरंगी कल्पना एक एहन नारीक हृदय पर केन्द्रित करैत छथि जे दू समान भावनाक मध्य पड़ि, पीड़ित छलि, एक दिस अपना पतिक प्रति अनुराग आ दोसर दिस शाहजादा सलीमक अक्षय प्रभाव, मुदा ई घटना सेहो मुख्य कथा सँ बहुत सूक्ष्मतासँ गुम्फित भेल छैक, कारण जे जँ मति-बीबीकेँ मेहरून्निसासँ साक्षात्कार नहि होइतैक तँ ओ सर्वदाक हेतु आगरा दरबार छोड़बाक हेतु प्रस्तुत नहि होइत। एहि रूपेँ भारतीय इतिहासक सर्वाधिकचमत्कृत कयनिहारि एक सुन्दरी कल्पनाक सँसारकेँ जगमगयबाक हेतु किछु काल लै आनलि जाइत अछि आ तकर बाद ओकर प्रसंग हम सब किछु सुनितो ने छिऐक। कोनो उपन्यासक मूल्यांकन हमरालोकनि विचारक मौलिकता अथवा चरित्र-चित्रणक कुशलता अथवा संरचना कोनो दृष्टिएँ करी, कपालकुण्डलासँ बढ़िकऽ कलाक परिपक्वता कोनो अन्यकृतिमे भेटब दुर्लभ अछि।

बंकिमचन्द्रक तेसर उपन्यास 'मृणालिनी' कपालकुण्डलाक समकक्ष तँ नहि छनि, मुदा अपनाढंगक ई एक उत्कृष्ट कृति थीक। इतिहासक एक बुझौअलि, जे बंकिमचन्द्र केँ आजीवन व्यग्र कयने रहलनि से छलनि जे कोना केवल सत्रहगोट अश्वारोही बख्तियारखिलजीक नेतृत्वमे सम्पूर्ण बंगालकेँ जीति लेलक? ओ अपन अनेक निवन्धमे ई दर्शयबाक प्रयत्न कयने छथि जे ई बुझौअलि मिनहा-जुद्दीनक आविष्कृत छल जकरा बादक इतिहासकार लोकनि बिनु कोनो ऊहापोह कयने मानि लेलनि, बख्तियार खिलजी तथा ओकर तुरन्त पछातिक उत्तराधि-कारीसब सन्दिग्ध रूपेँ गौड़ अथवा बंगालक एकछोट सन भागकेँ जितने छल। किन्तु आन कोनहुपात्रक अपेक्षा लेखकक दृष्टिकोणक बेसी प्रतिनिधित्व कयनिहार कमलाकान्त बंगालक राजनीतिज्ञ लोकनिक ई कहि उपहास करैत छनि जे जाहि जातिकेँ केवल सत्रहगोट अश्वारोही जीतिलेलक ओहि जातिकेँ राजनीतिक प्रसंग

चर्चा करबामे लज्जाक अनुभव करबाक चाहिऐक। अपन बहुत पहिलुकक्रृति 'मृणालिनी' मे बंकिमचन्द्र इतिहासक पुनर्लेखनक दिशामे एक अद्‌भुत प्रयास करैत छथि आ ओहि प्रकारक माध्यमसँ अरस्तूक भाषामे, आवश्यक आ संभाव्यकेँ दर्शबैत छथि। लगैत छैक जे एहिठाम इतिहास आ कविता एकाकार भऽगेल अछि आ हमरालोकनि अपना अन्तश्चक्षु मे मुस्लिम विजयक समयकेर गौड़क एक चित्र अंकित कऽ सकैत छी जाहिमे राजादुर्बल आ वृद्ध अछि, दरबार अन्धविश्वाससँ जकड़ल अछि, दरबारी सब खुशामदी अछि आ विश्वासघाती मन्त्री अछि।

मृणालिनीमे दूगोट कथा अछि—एक प्रकट ओ दोसर वास्तविक। प्रकट कथा-चित्र मृणालिनी आ हेमचन्द्रक थीक जे दर्शकक अतिसमीप अछि आ पृष्ठभूमिमे बख्तियारखिलजीक विजय आ बंगालक प्रधानमन्त्री पशुपति तथा ओकर अभागलि प्रेयसी तथा पत्नी मनोरमाक सत्यकथा अछि। मगधक प्रेमातुर राजकुमार हेमचन्द्रक कथा भावुकतापूर्ण तथा किछु अंशमे हास्यास्पद सेहो, जकर राज्य मुसलमान जीति लेने छैक आ तकरासँ लड़बाक हेतु उपहासास्पद प्रयत्न करैत अछि। हेमचन्द्र आ मृणालिनीक कथा ओहिना स्थूल रूपसँ चित्रित छैक जेना दुर्गेशनन्दिनीक जगतसिंह आ तिलोत्तमाक। एहू ठाम लड़बाक हेतु ओहने बतहपनी भरल जोश, ओहने भावनाक उन्माद, ओहने अविचारित ईर्ष्या आ ओहने परीक-कथाक सदृश सुखद अन्त छैक।

किन्तु हेमचन्द्र उपन्यासक नायक नामेटा लै अछि। वास्तविक प्रधानपात्र तँ थीक दुष्ट पशुपति जे मकड़ाजकाँ दुरभिसन्धिक तानी-भरनी बुनैत रहैत अछि, मुदा युद्ध नहि करैत अछि आ ओकरा पाछाँ अस्पष्ट रूपेँ देखिपड़ैछ मनोरमा, चित्रण बंकिमचन्द्र ओही सूक्ष्मतासँ करैत छथिन जतेक सूक्ष्मतासँ गियोकोंडे मे लियोनार्डोडा विंची, वशीकरणक प्रभाव उत्पन्न करैत छथि जे कोनो नारी मनुष्य-पर करैत अछि। उच्चादर्श कल्पनाकेँ विस्तृत करैत छैक आ दूरदृष्टि दैत छैक; किन्तु स्वार्थ संकीर्णता उत्पन्न करैत छैक संगहि धूमिल बनबैत छैक। तेँ पशुपतिक तुलना मकड़ासँ युक्तियुक्त पूर्वक कयल गेलैक अछि जे होइत तँ अछि पटुतामे अद्वितीय, किन्तु जाल एहनबुनैत अछि जाहिमे स्वयं फँसि जाइत अछि। निस्सन्देह मुसलमान सब सत्रह अश्वारोहीक रूपमे प्रवेश करैत अछि आ ओहि पर सुगमतासँ विजय सेहो प्राप्त करैत अछि, किन्तु से एहिकारणेँ जे देश अन्धविश्वास आ चाटुकारितासँ क्षीणबल भऽ गेल छल-जकर चित्रण संक्षिप्त, किन्तु सजीव कथाक रूपमे भेल अछि आ एहूकारणेँ जे विश्वासघात तँ ओकरा सभक हेतु स्वर्ण-सेतुक निर्माण कऽ देने छलैक। वस्तुतः ओहि सत्रह अश्वारोहीक पाछाँ पचीस हजार सेना सघनवनमे नुकायल छलैक। बंकिमचन्द्रक आँखिक सोझाँ प्लासीक युद्धक दृश्य टटका छलनि, ओ अपना कल्पनाकेँ थोड़ेक पाछाँ दौड़ाय बख्तियार-खिलजीक कथाकेँ साढ़ेनौसँ प्रस्तुत करैत छथि, केवल ओहिमे पशुपतिक

विश्वासघातक कथाकेँ जोड़ि दैत छथिन जाहिसँ सहजरूपेँ विजयक प्रसंग संभव भऽजाइत छैक ।

पशुपति आ मनोरमाक कथा सर्वतोभावेन हुनक अपन थिकनि आ मनोरमा वंगला साहित्य अथवा कोनो साहित्यक महत्तम आविष्कार थीक । मनोरमा प्रत्येक ओ नारी थीक जे प्रत्येक व्यक्ति द्वारा ध्यानपूर्वक देखल जाइछ, एक एहन बिम्ब जे मानस पटल पर व्याप्त रहैत अछि, चौँकबितो अछि आ बाटो घेड़ैत अछि । एकर आकर्षण क्लियोपाट्राक सदावसन्त आकर्षण समान नहि छैक जकरा कुस्वादु नहि कयल जा सकैत छैक । एहि अर्थमे जो सदिखन टटके अछि जे बाल्यकालक निर्विकारिता, युवावस्थाक मोहकता तथा प्रौढ़ावस्थाक परिपक्वता सब एकीकृत भऽगेल अछि तैयो ओहिमे किछु भिन्न स्वभावक अछि जे डेरबितो अछि आ आकृष्टो करैत अछि । ओ बहुधा स्वेच्छाचारी आ घताह जकाँ प्रकट होइत अछि, किन्तु ओकर विचार एवं गतिविधिमे तार्किकता स्पष्टरूपेँ झलकैत छैक आ ओकर निर्विकारिता ओही दृढ़तासँ जड़िपकड़ि लेने छैक जाहि दृढ़तासँ ओकर परिपक्वता । जेना ऊपर कहल गेल अछि जे ओ एक नारीक ओहि रहस्यमयताक सजीव प्रतीक थीक जे अपनादिस आकृष्ट करबाक संगहि भ्रमित करैत अछि, चोन्हरबितो अछि आ प्रकाशसँ परिपूरितो करैत अछि ।

मनोरमा एक डाइनि अछि आ ओ स्वयं पशुपतिक जादूमे जकड़ि जाइत अछि । ओकर हृदय प्रतिभासँ प्रोद्भासित छैक आ ओ एक दर्शनक व्याख्याकर्त्री भऽ जाइत अछि । तथापि विलक्षण बात ई अछि जे जाहि दर्शनक ओ अकाट्यतर्कक संग भाष्य करैत अछि ओ अतर्कक दर्शन थिकैक । दोसरो दृष्टिकोणसँ ई वदतो-व्याघातक सूचक थीक । बंकिमचन्द्र सावधान नीतिज्ञ रहथि । ओ संयम तथा कर्तव्यक प्रचारक छलाह । किन्तु हुनक उत्कृष्टतम सृष्टि मनोरमा उन्मुक्त भावना केँ प्रतिष्ठापित करय चाहैत छनि। ओ जनैत अछि जे ओ विधवा थीक । ओ ईहो जनैत अछि जे ओकर प्रेम विवाहमे परिणत भेलैक तँ तकर कतेक मूल्य चुकवय पड़तैक, किन्तु ओकरा तकर कनेको चिन्ता नहि छैक । ओकरा दृढ़ विश्वास छैक जे प्रेम परम पवित्र तथा अनिवार्य होइत छैक आ तर्क तथा नैतिकता जँ एहिबाट मे आबि जाइक तँ ओहने मूर्खतापूर्ण होयतैक जेहन ओ अहंकारी हाथी जे भगी-रथसँ छुटलाक बाद वहैत गंगाकेँ रोकबाक चेष्टा कयने छल । अन्तमे मनोरमा पता लगालैत अछि जे ओ बहुत पहिने हेड़ाइलि पशुपतिक पत्नी थीक । आब ओ अपन विवाहित जीवनकेँ छल-छद्मक न्यां पर नहिं ठाढ़ करय चाहैत अछि । किन्तु ई विशुद्ध काल्पनिक कथा थीक जकरा ज्योतिष आ लोकरीतिक स्वीकृति भेटि सकैत छैक । मनोरमाक महत्ता ओकर रहस्यमय आकर्षण तथा अतर्क्य प्रेमहुक ध्वजाकेँ आगाँ वहन करबामे छैक । हमरा लोकनि आश्चर्यचकित होइत छी जे एहि प्रकारक बलिदानक हेतु कोनो देशक स्वतन्त्रतो तुच्छ पुरस्कार तँ ने होय-तैक ?

बहुत पहिने कहल जा चुकल अछि जे उनैसम शताब्दमे बंगाल मे भेल पुनर्जागरणक एक विशेषता छलैक प्राचीन आदर्श तथा नवीन विचारक मध्य तनावक भावना। ओ संघर्षक भावना सशक्त रूपेँ मनोरमाक प्रसंगमे साकार भेल अछि आ पछातिओ कालक उपन्यास सबमे एहिसँ साक्षात्कार होइत अछि, विशेषत: मध्यावधिक उपन्यास सबमे, जाहिमे परम्परावादी नैतिकता तथा हृदयक प्रवृतिमे विरोध अछि। ई श्रेष्ठ साहित्यक वैशिष्ट्य थिकैक जे एहि दृष्टिएँ जीवनक सदृशो अछि अर्थात् एहिमे तथा जीवनमे मूलभूत विरोध बहुधा अनिश्चिते रहि जाइत छैक आ सुखान्त रचनाकेँ छोड़ि निर्णय कदाचिते सन्तेषजनक होइत छैक। विषवृक्ष, चन्द्रशेखर, रजनी तथा कृष्णकान्तक इच्छापत्र सदृश उपन्यासमे जे बात विशेषरूपेँ नीक लगैत छैक से थिकैक परस्पर विरोधी शक्तिक मध्य तनाव, यद्यपि एहि सबसँ परम्परा तथा परी-कथाकेँ बहुतदूर धरि प्रश्रय देल गेलैक अछि।

मध्यकालीन उपन्यास

बंकिमचन्द्रक चारिम उपन्यास विषवृक्ष (1873) एक उपन्यासकारक रूपमे हुनक लेखकीय जीवनक एक विश्राम-स्थानकेँ चिह्नित करैत छनि। ई अतीतसँ सम्बद्ध कोनो कल्पित कथा नहि थीक, प्रत्युत एहिमे किछु एहन घटनाक वर्णन भेल अछि जे बंकिम चन्द्रक समयमे बंगाली समाजमे घटित भऽसकैत छल। एकर कथा-वस्तुमे दू गोट विषय समक्ष अबैत अछि-एक विधवा-विवाह आ दोसर पुरूषक एकसँ अधिक विवाह। हुनका जीवनकालमे एहि दूनू समस्यापर घनघोर विवाद चलैत छल, किन्तु ओ एक सामाजिक समस्याक दृष्टिएँ वाद-विवाद नहि करैत छथि, तेँ विक्षवृक्षकेँ समस्याप्रधान उपन्यास मानव असमीचीन होयत। जँ नगेन्द्रनाथक दोसर पत्नी कुन्दनन्दिनी विधवा नहि भऽ कुमारिए रहैत तथापि कोनो अन्तर नहि पड़ितैक। आ दूनू पत्नी—पत्नीक रूपमे-एक संग रहलैक नहि। वस्तुत: लेखकक रुचि हुनक अपन पात्रक वैयक्तिक इतिहासमे छलनि, इतिहास द्वारा उठाओल एहन सामाजिक समस्या दिस नहि। क्यौ एकरा उपदेशात्मक उपन्यास कहि सकैत छथिन से उपदेशात्मकता एकर शीर्षकेसँ संकेतित अछि, मुदा समस्यामूलक उपन्यास ई नहि थीक।

पाठकक समक्ष एहि उपन्यासक नायिका सूर्यमुखी अछि आ सम्पूर्ण कथामे व्याप्त प्रतीत होइत अछि से तखनहु जखन ओ अपनाघरकेँ छोड़ि पड़ाइत अछि। बंकिमचन्द्रक दृष्टिएँ वैह मुख्यपात्र छलि। एक समय छल जहिया पाठक आ आलोचक सेहो सोचैत छलाह जे मूलत: ई कथा सूर्यमुखिएक थिकैक, किन्तु जँ हम-रालोकनि गंभीरतासँ विचार करी तँ पायब जे मुख्यपात्रसबमे सबसँ थोड़ रूचिक वैह अछि आ ओकर काज मात्र अपनपति नगेन्द्रनाथ एवं ओकर दोसर अभागलि-पत्नी कुन्दनन्दिनीक चरित्रकेँ उजागर करब छैक। सूर्यमुखी अपना ऊहिसँ काज-कयनिहारि पात्र नहि थीक। कहबाक तात्पर्य जे पड़ायबकेँ छोड़ि ओ अपन मनो-भाव आ आन्तरिक प्रवृत्तिसँ नियन्त्रित नहि होइत अछि, प्रत्युत ओहि आचार-संहिताक अनुगमन करैत अछि जे समाजसँ पाबि अंगीकार कयने अछि। सैह कारण छैक जे ओ प्रसन्नतापूर्वक अपन ओहि पतिक आलिंगनमे घूरि अबैत अछि

जे ओकरा प्रति विश्वासघाती प्रमाणित भऽ चुक्ल छैक आ जकरा अपना आ अपन पतिक मध्य कोनो दोसर नारीक आभास मात्र नहि भेलैक।

पति नगेन्द्रनाथ बिचबिचौआ स्तरक लोक अछि, ने कोनो तेहन गुणगौरव-युक्त आ ने कोनो तेहन दुराचारी अथवा दुष्ट। वस्तुतः बंकिमचंद्रक चरित्र-चित्रणक रहस्य नगेन्द्रनाथक सामान्यतामे छनि, किएक तँ ओ जाहि भावनामे बहैत अछि से तेहन प्रवल जैक जे एहि विषय दिस ककरो ध्यान जाइते ने छैक जे ओ महान् छल अथवा क्षुद्र। किन्तु जँ लेखक एहि पांत्रक चरित्र आरो तीक्ष्णतासँ रङने रहितथि तँ हमरालोकनिक ध्यान ओकर कामुकतासँ हटि जाइत। तेँ जाहि प्रकारेँ ई अवश्यम्भावी दुःखान्त घटना अपन पराकाष्ठापर पहुंचैत अछि, हमरा-लोकनिकेँ सोफोक्लीनक नाटकक कलात्मकताक स्मरण करा दैत अछि। प्रारब्ध एकर पूर्वसूचना दऽ चुकल अछि आ नगेन्द्रनाथो अपना कामुकताकेँ नियन्त्रित-करबाक पूर्णप्रयास करैत अछि, किन्तु ओ अपनाकेँ नियन्त्रित रखबामे अशक्त अछि आ कुन्दनन्दिनी अटलतासँ अपन विनाश दिस बढ़ैत अछि। समय समय पर भेटैत उपदेशसँ नहि, वस्तुतः एहने रचनाक माध्यमसँ हमरालोकनि अनुभव करैत छी जे अत्युच्च कलात्मकता नैतिक होइते होयतैक, किएक तँ मनुष्यक भ्रम एवं दुःख केँ आकस्मिक रूपेँ नहि प्रस्तुत कऽ सृष्टिक क्रमक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि अर्थात् मनुष्यक भ्रम प्रकृतिक अगाधशक्तिक प्राणघातक परिणामक रूपमे समक्ष अबैत अछि।

नगेन्द्रनाथ आ कुन्दनन्दिनीक मध्य प्रेम-व्यापारक आकर्षण एक दोसराक पूरक होयब थिकैक। नगेन्द्रनाथक व्यक्तित्वक बराबरि ह्रास भऽ रहल छैक जे कुन्दक मस्तिष्क आ चरित्रक अप्रत्याशित विकाससँ आरो स्पष्ट भऽजाइत छैक। आरम्भमे कुन्द एक छोट बालिकाक रूपमे अबैत अछि आ अन्तोधरि ओ अपना केँ स्थापित नहि कऽ पबैत अछि, किन्तु प्रेम ओकरा एक नारीक रूपमे विकसित करैत छैक आ बंकिमचन्द्र अपनहु ओकर मृत्युक तुलना मौलाइत फूलसँ करैत छथिन। प्रश्नठाढ़ भेल छलैक जे एहन नारीक सहृदयतापूर्ण चरित्र-चित्रण कऽ बंकिमचन्द्र अनैतिकताक उपदेश नहि करैत छलाह? एहिमे कोनो सन्देह नहि जे बंकिम एहिठाम अपन चरित्रांकन द्वारा भ्रान्त मानवताक प्रति गंभीर सहानुभूति देखबैत छथि। पूर्वक अनुच्छेदमे कहल गेल अछि जे सर्वोच्च कला नैतिक होइते होयत, किन्तु एहन कलाक अनैतिक होयब सेहो अवश्यंभावी छैक, किएक तँ दुर्निवार पाशविक प्रवृत्तिकेँ प्रकट करय पड़ैत छैक जे सामाजिक नियमसँ विशेष गंभीर होइत छैक। हमरालोकनिकेँ ई प्रवृत्तिसब निष्क्रिय पदार्थसँ जीवनाधारक प्रथम तत्त्व रूपमे प्राप्त भेल अछि आ मानवतर्क एवं नैतिकता बहुत पछाति भेटल। प्रसंगानुकूल तर्क कयल जा सकैछ जे पितामहपर पौत्रकेँ नियन्त्रण करबाक चाहिऐक?

विषवृक्षमे एक यूनानी दुःखान्त नाटकक सब विशिष्टता भेटैत अछि-ओकर प्रगीतात्मकता, कथावस्तुक प्राथमिकता पर ओकर जोर आ संगहि ओहिमे आधुनिक कल्पनाश्रित उपन्यासक तत्त्व अर्थात ओकर विस्तार आ कथा पर चरित्र चित्रणक प्रभुत्व। उच्चकोटिक दुःखान्तमे प्रारब्ध पात्र अछि, तेँ हेतु लोकके मने पहिने चेता देल जाइक, ओहिसँ बचबाक उपाय नहि छैक। एक कल्पनाश्रित दुःखान्तमे पात्रे प्रारब्ध होइत छैक अर्थात स्त्री-पुरुष स्वयं ओहि कथावस्तुक रचना करैत अछि जे ओकरा सबकेँ गीड़ि जाइत छैक। कुन्दनन्दिनीओकेँ ओहिना सचेत कयल जाइत छैक जेना सोफोक्लीनक नाटकमे लाइअस, जौकास्टा आ ईडिपसकेँ, मुदा सब निष्फल रहैत अछि। ईडिपसटाइरेन्नसक पात्र सब अपन रक्षाक हेतु जे डेग उठबैत अछि से ओकरा लोकनिकेँ निरूपाय करैत दुःखान्तक चक्रदिस लेने जाइत छैक। तहिना कुन्द सेहो असहाय अछि, जखन नगेन्द्रनाथसँ अपन सुरक्षा करबाक प्रार्थना करैत छैक, अपन पूर्वक वैधव्योपर ओकर वश नहि चलि सकैत छैक। मुदा नगेन्द्रक हेतु जे रागात्मकता से ओकर अपन थिकैक, जँ ओहो ओकरा नष्ट करैत छैक तैयो अपना भाग्यक निर्माण कयनिहारि तँ ओ अपनहि अछि।

कुन्दक प्रति सावधान रहबाक हेतु नगेन्द्रकेँ अलौकिक दृष्टिपायब आवश्यक नहि छलैक। ओहो एहि प्रकारक चेताउनिक हेतु बहुत पहिनेसँ प्रौढ़ तथा स्पष्ट दृष्टि रखनिहार अछि आ ओकरा परिवेशमे रहनिहार लोकसब सेहो उचित परामर्श देनिहार छैक। अतः कुन्दक अपेक्षा अधिक ओकरा हेतु चरित्रे प्रारब्ध थिकैक, यद्यपि ओ आ सूर्यमुखी अपन कठिन परीक्षासँ शान्ति ओ आश्वस्ति पूर्वक बहराइत अछि, ई आशा करब मनकल्पिते होयत जे ओकरासभक आवेग समाप्त भऽ गेल छैक ओ मानसिक शान्ति भेटि गेल छैक। हीरा ओना ओकरा सभक जीवनमे अपन आकांक्षाक पूर्ति हेतु संगहि सूर्यमुखीक प्रसन्नताकेँ नाश करबाक उद्देश्यसँ प्रवेश करैत छैक, परन्तु दोसराक हेतु संकट उत्पन्न करबाक अपेक्षा ओ अपना हेतु आरो पैघ संकट ठाढ़ कऽ लैत अछि। एहि तरहेँ चरित्रो प्रारब्धकेँ ओहिना प्रभावित करैत छैक जेना प्रारब्ध अपन रहस्यमय उद्देश्यक पूर्ति हेतु चरित्रकेँ अर्थात जकरा कल्पनाश्रितमे स्वतन्त्रता कहल जाइत छैक, उच्चश्रेणीक साहित्यमे तकर अनिवार्यता रहैत छैक आ एहि उपन्यासमे ई दूनू तत्त्व नीकजकाँ परस्पर आलिंगन-बद्ध अछि। संरचनाक दृष्टिसँ सेहो विषवृक्ष जेना यूनानी दुःखान्त रचना जकाँ गतानल अछि तहिना ओहिमे उनैसम शताब्दीक कल्पनाश्रित उपन्यासक शिथिलता सेहो छैक।

विषवृक्षक बाद बंकिमचन्द्र दू गोट कथा लिखलनि जाहि मे ओ एकमे समकालीन जीवनक कथ्यकेँ ग्रहण कयलनि, किन्तु दोसरमे अतीत दिस घुरि गेलाह आ एकरा बाद पुनः एक सम्पूर्ण उपन्यास (चन्द्रशेखर,) 1875 जे पुनः इतिहासक

आधार पर लिखलनि। हुनक पहिलुक उपन्यासक अपेक्षा चन्द्रशेखर इतिहासक आरो विस्तृत चित्र दैत अछि। एतय लेखक मीरकासिमक पराजय आ बंगालमे ब्रिटिश सत्ताक संगठन सदृश निकट भूत-कालिक किछु पैघ घटनामात्रकेँ नहि प्रस्तुत कयलनि, प्रत्युत ओहि सामान्य ग्रामवासीलोकनि पर पड़ैत प्रभावकेँ सेहो अंकित कयलनि अछि जनिका लोकनिकेँ अपन शान्त वातावरणकेँ छोड़ि ऐतिहासिक विप्लवमे फँसय पड़लनि। ई आपत्ति उठाओल जा सकैछ जे बंकिमचन्द्र इतिहास तोड़ि-मरोड़ि कऽ उपस्थित कयलनि अछि, कारण जे हुनकर मीरकासिम अंग्रेजकेँ मारि भगयबाक निष्फल प्रयासमे लागल एकक बाद दोसर युद्ध लड़निहार देशभक्त, युद्धमे संलग्न नवावक अपेक्षा एक सन्तुष्ट आ उन्मत्तपति अधिक प्रतीत होइत छनि, परन्तु ऐतिहासिक उपन्यास-रचनाक प्रति एहन दृष्टिकोण अपनायव समुचित नहि थीक जे पुरान घटनाकेँ पुनः प्रस्तुत नहि करैछ, प्रत्युत जेहन महान इतिहासकार टैविलियन कहने छथि-एहन रचना इतिहासकेँ एक औत्सुक्यपूर्णलालसाक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि जे निरन्तर परिवर्तन आ नित्य अपूर्णताकेँ निर्दिष्ट करैछ, किन्तु जे जीवन्त, जटिल तथा मानवताक सदृश विशाल अछि। इतिहासमे जे जटिलता रहैत छैक से सामाजिक, आर्थिक तथा सैन्यशक्तिक जटिलता थिकैक, मुदा उपन्यासमे आबि ओ मानवीय सम्बन्धक परस्पर संघर्षशील उत्कट आकांक्षा आ परस्पर विरोधक स्थान लऽ लैत छैक। सैर मुताखरीन नामक वृत्तान्तमे मीरकासिम द्वारा अपन सेनापति गुर्गिन खाँ पर कयल गेल अनुचित अनुग्रहक विशेष चर्चा छैक जे शक्तिशाली अहंकारी तथा पूर्ण अविश्वसनीय छलैक। वृत्तान्तमे आर्मीनियाँ निवासी वस्त्र-व्यापारीक रूपेँ सेनाधिपतिक पद धरि पहुँचबाक कोनो सन्तोषजनक उत्तर नहि भेटैत छैक आ ने नवाबक ओकरा प्रति अन्धरागात्मकताक कोनो कारणेँ। परन्तु रचनाशिल्पक श्रेष्ठ प्रतिभाशाली बंकिमचन्द्र गुर्गिनक बहिन आ मीरकासिमक वेगम दालानीक चरित्रक आविष्कार करैत छथि। एहिसँ इतिहासक ओझराहटि तँ सोझराइत छैक, किन्तु जीवनक रहस्य आरो गंभीर भऽ जाइत छैक। गुर्गिन अतिशय महत्वाकांक्षी अछि, अद्वितीय धूर्त सेहो, परन्तु दूरदृष्टि रखबामे दयाक पात्र। ओ जनैत अछि जे कोनो नवाबक पाँजरमे अंग्रेजक उपस्थिति काँटक समान होयत आ तेँ ओकरा निर्मूल करब परम आवश्यक। तकराबाद मीरकासिमसँ मुक्ति पायब सुगम होयत आ तखन ओ स्वयं नवाब बनि जायत। तेँ दालानीकेँ ओ प्रलोभन दैत छैक जे ओ ओकरा दोसर नूरजहाँ बना देतैक।

वास्तवमे जीवन एहि ठाम निरन्तर प्रवहमान छैक आ सर्वत्र छैक औत्सुक्य पूर्ण आकांक्षा। अभागल नवाब ब्रिटिशसताकेँ अन्ततक समाप्त कऽ देबय चाहैत अछि। दुर्भाग्यसँ ओ विफल रहैत अछि, किन्तु उत्साह अक्षुण्ण रहैत छैक आ यद्यपि ओ यदाकदा उन्मत्त जकाँ व्यवहार सेहो करैत अछि तथापि ओकर दृष्टि

चोन्हराइत नहि छैक। एहि कथाक नायक प्रताप एक अनैतिहासिक व्यक्ति थीक। अंग्रेजसँ लड़बाक ओकर अपन विचार छैक आ एक सैनिक रूपमे मरैत अछि। परन्तु ओ अमरताक आकांक्षाक प्रतीक सेहो अछि से मात्र अपन आध्यात्मिक अन्वेषणेमे नहि, अपितु ओहि युगान्तकारी घटनामे सेहो जाहिमे ओ प्रमुखरूपमे भाग लैत अछि, से एहिमे विदेशी सबमे ओकरा ओकर सभक रूप देखि पड़ैत छैक जे सब ओकर प्रत्येक प्रियवस्तुसँ शत्रुता रखैत छैक। ईस्ट इण्डिया कम्पनीक कर्मचारी सभक चरित्र-चित्रण एक एहन दृढ़ दलक रूपमे भेलैक अछि जकर सदस्य सब दृढ़प्रतिज्ञ, साहसी असाधारण रूपें पटु तथा नैतिक भावनासँ रहित छैक, परन्तु प्लासीयुद्धक उपरान्त ब्रिटिश साम्राज्यक नियतिपर ओकर अटूट विश्वास छैक। हिन्दू लखपती, जकरासँ लोक डेराइत छैक आ ओकरा सभक खुशामदो करैत छैक, अपनहि भयभीत अछि। एहिमे वर्णित घटना सबसँ ओकरा सभक कोनो साक्षात सम्बन्ध नहि छैक, परन्तु ओकरा सभक ढंग आ आचरणसँ तत्कालीन वातावरणमे व्याप्त अनिश्चितता आ परिवर्तन प्रतिविम्बित होइत छैक। यद्यपि एहि उपन्यासक अग्रभूमि ओ पृष्ठभूमि दूनूमे इतिहास भरल छैक, मुदा मुख्य कथानक अनैतिहासिक थिकैक आ प्रत्यक्षतः कोनो सामाजिक समस्या नहि थोपैत छैक।

उपर्युक्त वृत्तान्त कहैत अछि जे मीरकासिमकें ज्योतिषपर विश्वास छलैक आ बहुधा ओ हिन्दू ज्योतिषीलोकनिसँ परामर्श लैत छल। इतिहाससँ एतवा संकेत लैत वंकिमचन्द्र अपना उपन्यासक नामकरण नवाबक शिक्षक तथा परामर्शदाता ज्योतिषक प्रकाण्ड पण्डित चन्द्रशेखरक नामपर कयने छथि। एहिसँ चन्द्रशेखरक वैयक्तिक जीवनक घटना ऐतिहासिक घटनासँ जुटि जाइत छैक। मध्यमध्यमे अन्यान्यपात्रकें प्रमुखता दितहु ई उपन्यास पूरा जोर दैत चन्द्रशेखरक पत्नी शैवालिनीक कथा कहैत अछि जे बंकिमचन्द्रक रचना-संसारक सबसँ रोचक पात्र थिकनि। शैवालिनी अपन वाल्यकालमे प्रतापसँ प्रेम करैत छलैक आ विवाहक पछाति दृढ़संकल्पसँ आ निराशासँ जकर पछोड़ धयने छलैक से प्रताप शौर्यक चरित्र थीक आ ओ शूर वीरक मृत्यु अंगीकार करैत अछि तकर उद्देश्य शैवालिनीक वाटपरसँ सदाक हेतु अपनाकेँ हटयवे छैक। परन्तु प्रतापमे अनेक प्रभावशाली गुणक अछैतो उपन्यासमे ओकर अस्तित्व शैवालिनीक हृदयकेँ-दारूण यातनासँ मुक्ति देअयबाक हेतु छैक जेना विषवृक्षमे सूर्यमुखी नगेन्द्रनाथ एवं कुन्दनन्दिनीक प्रेम आ ओहि प्रेमसँ उत्पन्न घटनाकें उजागरकरबाक हेतु अछि।

शैवालिनी जखन आठे वर्षक छलि तहिएसँ प्रतापक प्रेममे फंसि गेलि। जहिना वयस बढ़ैत गेलैक, ओ एहि प्रेमक निस्सारताक अनुभव करय लागलि, कारण एहि दूनू गोटेक विवाह हिन्दू-कानून तथा सामाजिक नियमक विरुद्ध होइतैक। दूनू आत्महत्या करबाक निश्चय कयलक, परन्तु शैवालिनी डगमगा

गेलि आ प्रतापकें बचा लेल गेलैक। ओ चन्द्रशेखरसँ विआहलि गेलि, परन्तु प्रतापकें बिसरि नहि सकलि आ कतोक वर्ष बीतिगेलाक बादो ओ अपना प्रेमीसँ भेटकरबाक हेतु नैराश्यपूर्ण साहसिक काज कयलक। ओना ओकर एहन प्रयास अतर्क्य आ मूर्खतापूर्ण छलैक, कारण जे ई ओकरा निर्दिष्ट लक्ष्य धरि पहुँचयबाक बदला कतहु अन्यत्र पहुँचा सकैत छलैक। परन्तु एतय एक अप्रत्याशित घटना घटित होइत छैक। प्रतापसँ ओकरा भेट भऽजाइत छैक आ दोसरो बेरि मिलि कऽ आत्महत्या करबाक अवसर भेटैत छैक, परन्तु एहि बेरि प्रतापे ओकरा रोकैत छैक। ओ घूरि अबैत अछि आ एक सन्यासी, रामानन्द स्वामीक सहायतासँ आत्मशुद्धिक प्रक्रियामे लगैत अछि जे सन्यासी आत्मिक अथवा यौगिक शक्तिक प्रयोग करैत अछि। एहिठाम दान्तेक सशक्त प्रभावक अछैतो शैवालिनीक कथाक ई अंश अप्रतीतिकर लगैत छैक। ओकर वैह पहिलुकरूप जखन ओकरामे विप्लवी भावना छैक, ओ ककरो अन्वेषणमे अछि आ पराजित होइत अछि, सैह हमरा लोकनिक ध्यान आकृष्ट करैत अछि। अन्तलोक-रीतिक स्वीकृतिक रूपमे छैक। उपन्यासमे वैह प्रश्न उपस्थित होइत छैक जे प्रश्न शैवालिनी उपन्यासक मध्यमे उठौने छलि: ओ तथा प्रताप एके डारि पर फुलायल दुइ फूलक समान छल। की धर्म एवं समाजकँ ओहि दूनूकें फराक-फराक करबाक कोनो अधिकार छलैक ?

चन्द्रशेखरक बाद दूगोट उपन्यास अबैत अछि। रजनी (1877) तथा कमलाकान्तक इच्छापत्र (1878) एहि दूनूक मध्यमे एक कथा अबैत छनि— 'राधारानी' एहि सबकृतिकें इतिहाससँ कोनो सरोकार नहि छैक। ओ सब सामाजिक, पारिवारिक आ वैयक्तिक थिकनि। एहिमे सबसँ पहिल-रजनी मे कथ्य तथा निर्वाह दूनू दृष्टिएँ किछु विशेष विलक्षणता छैक। एकर कथा-नायिकाफूल बेचनिहारि एक आन्हरिकन्या थिक जे अनुरागपूर्वक प्रेममे पड़ि गेल अछि। बंकिमचन्द्रकें एहि प्रकारक पात्रक संकेत लिट्टनक कृति 'द लास्ट डेज आफ पौम्पाई' मे नाइडियाक रूपमे भेटलनि जाहिमे एक आन्हरि कन्या इन्द्रिय-जनित चेतना प्राप्त करैत अछि आ अपन ओहि भावनाकें अभिव्यक्त करैत अछि। बंकिमचन्द्र एही भावनाकें पुनः प्रस्तुत करबाक प्रयास करैत छथि आ ताहिमे उल्लेखनीय सफलता प्राप्त भेलनि अछि। एहि कथामे ने ओ विस्तार छैक आ ने करूणारसपूर्ण श्रेष्ठता जे लिट्टनक उपन्यासकें ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान करैत छनि। एहिमे उदास चुप्पी मिश्रित विषयसुखक ओ गहनता सेहो नहि छैक जे नाइडियाक कथाकें भयंकर इन्द्रजालमे लपेटैत छैक। यद्यपि ओहिठाम किछु संकटक अवसर सेहो छैक, तथापि एकर अन्त सुखद नहि होयतैक एहन आशंका हमरा लोकनिकें नहि होइत अछि। आ एहिमे परी-कथाक तत्त्व सेहो छैक जे बहुधा बंकिमचन्द्रक उपन्यासमे पाओल जाइत छनि। एहिमे विस्मयोत्पादक उप-कथा पबैत छी जे एक फूल बेचनिहारि कन्या एक इच्छापत्रक प्रसादें अकस्मात

विपु सम्पतिक उत्तराधिकारिणी भऽ जाइत अछि आ एक संन्यासी अछि जकरा असंभवकेँ संभव वना देबाक शक्ति छैक। किन्तु एहि परी कथाक ढाँचामे एक कथाबन्द अछि जे मानवीयगुणकें सन्निविष्ट कयने अछि। सन्यासीक एहि अलौकिक शक्ति कें हम सब ओही रूपमे स्वीकार कऽ सकैत छी जाहि रूपमे हेमलेटमे भूतक सत्यताकें स्वीकार करैत छिऐक। एहि शक्ति द्वारा लवंगलताक बुद्धि तीक्ष्ण भऽ जाइत छैक आ यद्यपि भुतिअवैत छैक बहुत तथापि इच्छापत्र भेटि गेलासँ रजनी आ अमरनाथक चरित्र निखरि अवैत छैक।

ई किछु अद्भुत लगैत अछि जे यद्यपि बंकिमचन्द्रक कल्पना इतिहासमे खूब रमैत छलनि तथापि एहि उपन्यासकें ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देबाक प्रसंग किएकने सोचलनि जखन कि लिट्टनक उपन्यासमे एकर संकेत कतोक वेरि भेटलनि? वस्तुतः ओ वहुत चतुरतासँ मुख्य कथावस्तुक बीच एक दोसर नारी लवंगलताक कथा गुम्फित कऽ ओझराहटि लगा देलथिन अछि आ अमरनाथ, जे एहि दूनू युवतीमे सँ एकसँ निराश भऽ गेल अछि, दोसर विवाह करवा लै उद्यत अछि, दूनू उपकथाकें एकठाम जोड़ैत छैक। लवंगलता एक एहन वृद्ध पतिक दोसर युवती पत्नी थीक जकर पहिल पत्नी जिविते छैक। ओकरामे बुद्धिक चमक तथा सुखक उत्साह सेहो छैक। की बंकिमचन्द्र जे हृदयसँ परम्परावादी छलाह, ई देखबय चाहैत छलाह जे कोनहुपरिस्थितिमे वहुपत्नी प्रथा अधलाह नहि थीक? जँ एहन वात हो तँ हमरालोकनि एतवे कहि सकैत छी जे हुनक कल्पना हुनक मूल आशय सँ आगाँ वढ़ि गेलनि अछि आ ओ वर्जित प्रेमक एक मार्मिक कथा लिखि अपन महान उत्तराधिकारी शरच्चन्द्रक दिस हाथ वढ़ौलनि अछि, किएक तँ लवंग-लताक भावनात्मक ओझराहटि देवदासमे पार्वतीक ओझराहटिसँ आधारभूत रूपें भिन्न नहि छैक। एक समय ओ अपन पहिलुक प्रेमीक प्रति कठोर छलि, आब ओ रजनीकेँ प्राप्त करवाक ओकरा प्रयासकें विफल करय चाहैत अछि, संगहि जाहि बूढ़क संग ओकर विवाह भेलैक अछि तकरा प्रति अपन प्रगाढ़ प्रेम प्रदर्शित करैत अछि। ओकरा प्रेमक सत्यतापर सन्देह करबाक कोनो कारण देखवामे नहि अवैछ, परन्तु एहि सँ ईहो स्पष्ट नहि होइत अछि जे ओ आत्म-प्रवंचनाक आखेट वनि गेलि अछि अथवा नहि। प्रत्यक्षतः ओकर व्यापार आ गतिविधिक पाछाँ जे किछु होइक, किन्तु ओकरा हृदयक एक शान्त कोनमे अमर नाथक साम्राज्य छैक। एहि संसारमे, जेना ओ मनमसोसि कऽ आ अँटकि-अँटकि कऽ कहल करैत छैक-ओ अपन वाक्यकें पूरो नहि कऽ पवैत अछि—दीप नहि जरतैक, फूल नहि फुलयतैक, तथापि ओ एहन आशकेँ पोसि कऽ रखने अछि जकरा स्पष्टतः व्यक्त करबाक ने ओकरामे शक्ति छैक आ ने साहस। ओ सूक्ष्म बुद्धि तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व रखनिहारि नारी अछि, तें कोनो प्रकारक विरोध ओकरा सोझाँ ठहरि नहि पवैत छैक, तथापि अमरनाथक सम्मुखीकरण होइते ओ

डगमगा जाइत अछि तथा बहुत कातरता पूर्वक प्रार्थना करय लगैत छैक जे ओ ओकर इच्छाशक्तिक आरो परीक्षा नहि लैक ।

कथाक प्रस्तुतीकरण हेतु बंकिमचन्द्र एहन पद्धति अपनौलनि जाहि सँ प्रत्येक प्रमुखपात्र अपन कथा अपने कहय। घर-बाहर मे रवीन्द्रनाथटैगोर सेहो एही पद्धतिकेँ अपनौने छथि । एहि प्रकारेँ कथाकेँ प्रस्तुत करवामे रचनाकारकेँ विशेषसुविधा होइत छैक आ से थिकैक नाट्यात्मक संगति अथवा औचित्य। प्रत्येक व्यक्ति घटनाक वर्णन अपना दृष्टिएँ करैत अछि आ विशिष्ट भावनाकेँ व्यक्त करैत अछि । आ हमरालोकनि प्रत्यक्षतः ई बूझि पबैत छी जे एक प्रमुख पात्र दोसर प्रमुखपात्रक विषयमे की सोचैत अछि। परन्तु एहि पद्धतिमे एक आधारभूत त्रुटि छैक। ई कृत्रिमताक प्रभाव उत्पन्न करैत छैक, एहिसँ हमरालोकनिकेँ ई मानि कऽचलय पड़ैत अछि जे घटनाकेँ जीति गेलाक पश्चात् पात्र सब एक समिति बना लेलक अछि आ ओहि सहकारी प्रवासमे अपन-अपन इतिहासकेँ पुनर्निर्मित करवाक भार सबकेँ दऽ गेलैक अछि। यदि हमरालोकनि एहि आरंभिक सीमापर बिचार करब छोड़ि दी तँ हमरा लोकनिकेँ मानय पड़त जे कथा सुचारु तथा सशक्त रूपेँ कहल गेल अछि आ ज़तय ततय पुनरूक्तिक आभास होइतो ई पराकाष्ठाक बिन्दु धरि तीव्रतासँ बढ़ि रहल अछि। पुनः एक आन्हरि बालिका द्वारा अपन वासनात्मक अनुभूति एवं भावनाकेँ अपन परिचित कल्पना-बिम्बक माध्यमसँ प्रकट करब नाट्यात्मक प्रासंगिकता सेहो रखैत अछि। एहि सरणिक दोसर गुण ई छैक जे अमरनाथ आ लवंगलताक सम्बन्धक ओझराहटि थोड़सँ थोड़ शब्दमे अपन पूर्ण शक्तिक संग समक्ष अबैत छैक, किएक तँ यद्यपि दूनू पात्र एक दोसरासँ घनिष्ठ रूपेँ परस्पर सम्बद्ध अछि तथापि एक दोसराक दुर्दान्त शत्रु सेहो अछि। व्यक्तित्वक ई टकराहटि ओ अपनहि अपन कथा कहैत स्पष्ट कऽदैत अछि, लेखककेँ वर्णनात्मक शैली अपनाय दुर्बोधता पसारबाक प्रयोजन नहि होइत छनि ।

कृष्णकान्तक इच्छापत्र सेहो आनन्द मठ जकाँ बंकिमचन्द्रक सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यास थिकनि आ सर्वाधिक विवादास्पदो । परन्तु आनन्दमठसँ ई एहि दृष्टिएँ भिन्न छनि जे एहिमे कोनो प्रकारक धार्मिक अथवा राजनीतिक बाह्यतत्व नहि छनि। ई शुद्ध कलात्मक कृति थिकनि-एक पारिवारिक तथा सामाजिक उपन्यास, जे मुख्यतः घटनाक प्रभावक अन्तर्गत चरित्रक विकासकेँ रेखांकित करैत अछि। एकर मुख्य वैशिष्ट्य एकर सरलता थिकैक। ई जन-सामान्यक भाषामे लिखल गेल अछि। ई सर्वथा यथार्थवादी अछि। एहिमे कोनो प्रकारक काल्पनिकता अथवा ज्योतिषक आश्रय नहि लेल गेल छैक। एहिमे एकमात्रकथा छैक-भ्रमर, रोहिणी आ गोविन्दलालक। एक निशाकर अछि जे कथाकेँ एक उत्तेजनात्मक मोड़ दैत छैक आ अन्तकेँ दुःखद बनयबामे प्रबल सहायता करैत छैक।

परन्तु ओ बाहरीए व्यक्ति बनल रहि आइत अछि आ ओहिना अकस्मात हटि जाइत अछि जहिना आविर्भूत होइत अछि। विषवृक्ष सेहो कृष्णकान्तक इच्छापत्र सँ कतोक अर्थमे साम्य रखैत अछि तैयो ओहिमे देवेन्द्र आ हीराक प्रसंग मुख्य कथावस्तुकेँ सुसज्जित करैत छैक। कृष्णकान्तक इच्छापत्रमे कथावस्तुक जे जटिलता छैक से कथाकेँ एकमात्रक कथा होयबाक कारणेँ छैक।

गोविन्दलाल आ भ्रमर प्रसन्नतापूर्वक विवाहित अछि आ एक दोसरासँ प्रगाढ़ प्रेम करैत छैक। ओकरा सभक एहि वैवाहिक जीवनक शान्त भावकेँ एक रोहिणीनामक सुन्दरी तथा धूर्तविधवा भंग करैत छैक जे गोविन्दलालक प्रति वासनाभिभूत भेलि आकृष्ट अछि। गोविन्दलाल अपनहु ओकर मोहिनीरूपक मायाजालमे ओझरा जाइत अछि आ दूनू उठि पड़ा जाइत अछि तथा बहुत दूर प्रसादपुर नामक स्थानमे एक ढहैत ढनमनाइत महलमे अपन आवास बनबैत अछि। ओ कोठी कोनो निलहा साहेबक छलैक। ओ दूनू समाजक संपर्कसँ हटि किछु दिनधरि संगसंग रहैत अछि। ओहिठाम एक दिन अकस्मात् निशाकर नामक नितान्त अनभुआर लोक पहुँचि जाइछ। गोविन्दलाल तँ ओकरा जोरसँ झझकारि दैत छैक, मुदा रोहिणी ओकरामे रूचि लेबऽलगैत छैक आ गुप्त बैसक करबाक जोगाड़धरा लैत अछि। ओ दूनू पाँचो मिनट संग रहल कि नहि, तावत एकाएक गोविन्दलाल ओतय पहुँचि जाइछ आ रोहिणीकेँ घिसियबैत घर घुरा अनैत छैक आ ओतय आनि गोली मारि दैत छैक।

एहि उपन्यासक आलोचक लोकनि, जाहिमे अग्रसर महान् लेखक शरच्चन्द्र चटर्जी छलथिन, एक प्रश्न उठबैत छथि-रोहिणीक एहन अन्त की ओकरा संग न्याय करैत छैक? अथवा की ई पारम्परिक नैतिकताक समक्ष आत्म-समर्पण नहि थीक जाहिमे एहन विधवाक प्रति कनेको सहानुभूति नहि छैक जे ककरोसँ प्रेम-करय आ ककरो स्वामीकेँ प्रेम-पाशमे फँसाबय? की ई मनोवैज्ञानिक दृष्टिसँ सम्भव छैक जे ओ रोहिणी जे गोविन्दलालक प्रेममे डूबलि अछि, जे कृष्णकान्तक घरसँ ओहि इच्छापत्रकेँ चोरा कऽ अनबाक दुःसाहस करैत अछि, जाहिसँ गोविन्दलाल अपन उत्तराधिकारसँ वंचित भेल जाइत अछि, आ जे अपन निष्फल प्रेमसँ मुक्ति पयबाक हेतु आत्महत्या कऽ लेबऽ चाहैत अछि, ओहन पहिले पहिल आयल अनभुआरक प्रति आकृष्ट भऽ जायत जे ओकर वेश्यापनक एकाकी जीवन मे उपस्थित भेलैक अछि? शरच्चन्द्र कहैत छथि जे एहन अन्त संकीर्णनैतिक दृष्टिकोणेसँ उत्पन्न होइत छैक आ ई नारी जातिक अपमानो थिकैक। ओ अपने अपना उपन्यास सबमे नारीक परम दीप्तिमान चित्र अंकित कयने छथि।

तथापि यदि हमरालोकनि नारीजातिक प्रति समस्त पूर्वाग्रहकेँ छोड़ि ध्यानपूर्वक उपन्यासक अनुशीलनकरी तँ पायब जे एहि प्रकारक मोड़ ओहि रोहिणीक हेतु असंगत-नहि छैक जकरा कथाक पूर्व भागमे हमरालोकनि पहिने देखि

चुकल छिऐक। ओ कुन्दनन्दिनीजकाँ एक कोमल वालिका नहि अछि, प्रत्युत अत्यन्त कर्कशा, उद्देश्यपूर्तिमे दृढ़ महिला अछि जे प्रारब्धक विरुद्ध अछि, बिनु कोनो अपराधक अपना प्रसन्नताकेँ झौँसाइत देखि उद्विग्न अछि। ओकरा चरित्रमे मुख्य वात विषय-सुखक उत्कट लालसा थिकैक आ ताहिसुखक पूर्ति हेतु ओ किच्छु करवाक हेतु प्रस्तुत अछि। एहि एक अत्यावश्यक विषयक नैराश्य ओकर नैतिक चेतनाकेँ क्षीण कऽ देने छैक आ ओकर निर्भयवुद्धि कामुकताक दासी भऽ गेल छैक। वंकिमचन्द्र हास्यात्मक रूपेँ संकेत करैत छथि जे एहि इन्द्रियविषयक पूर्ति हेतु नहि किछु तँ ओ विलाड़िओकेँ कनखी-मटकी मारय लगैत छैक आ उपद्रवी कोइली ओकर कामुक लालसाकेँ उद्दीप्त कऽ दैत छैक। जँ एहन मौगी चुपचाप गार्हस्थ्यजीवन अपना लैत तँ एक प्रकारेँ ई हमरासभक नैतिक बोधेक प्रति नहि, अपितु हमरा सभक सौन्दर्यवोधहुक प्रति आघात होइत।

अपनकामुकताक भूखकेँ जकरा कामुकता अथवा प्रेम सेहो कहल जा सकैत छैक, शान्त करवाक हेतु एक उन्मादी इच्छाक वशीभूत ओ प्रसादपुरक हेतु उड़ि-जाइत अछि, परन्तु समाजक सुसंस्कृत परिवेशमे रहि कऽएहन दुष्प्रवृत्तिकेँ ओ मानवक दैनिक भोजनक अंग नहि बना सकैछ। एहन जीवन जाहिमे एकमात्र प्रवृत्तिक पोषण कयल जाय आ आत्माभिव्यक्तिक शेष सब द्वारबन्द कऽ देल जाइक तँ से क्लान्तिकारकहोयबाक चाही आ ईहो असंभव नहि जे एहन माउगि जे हरलालकेँ ताही तत्परतासँ स्वीकार करवाक हेतु उद्यत छलि जाहि तत्परतासँ ओ गोविन्दलालकेँ फंसोने छलि तँ से कोनो तेहल्लो प्रभविष्णु युवकक प्रति थोड़बो उत्तेजित होयबे करैत। ओ जानिबूझिकऽ गोविन्दलालकेँ धोखा देबऽ नहि चाहैत छलैक, ओ पहिने ओकरासँ मधुर-मधुर गप-सप करवाक हेतु लालायित छलि जाहिसँ ओकरा औनाहटि भरल जीवनसँ दसो मिनटक हेतु आश्वस्ति भेटितैक जाहि जीवनमे आब ने विविधता आ ने कोनो कौतूहल रहि गेल छलैक, प्रत्युत अपना संगीक ध्यान सतत अपन परित्यक्ता पत्नीमे डूबल भेटैत छलैक।

उपन्यासक पहिल भागमे, जाहिमे रोहिणीक वर्द्धमान आवेगक वर्णन कयल गेल छैक, वर्णनक गति अपेक्षाकृत मन्द छैक, कारण जे एखन रोहिणीक चरित्रकेँ सम्मुख आनबाक छैक आ समस्त रंगाकेँ देखार करवाक छैक, जाहिसँ कथामे सत्य आभा-सिक्त भऽ पबैक। परन्तु पश्चात्क स्थलमे यैह पद्धति असंगत नहि, अपितु अंकछायय-वाला सेहो होइतैक। एही कारणेँ वंकिम चन्द्र विभिन्न विशिष्टकलाकेँ अपनो-लनि अछि अर्थात् संकेत तथा विम्बक माध्यमसँ वर्णन कयलनि अछि। जाहि मे रोहिणी आ गोविन्दलाल रहैत अछि ताहि घर एवं टोलक वर्णन सेहो अपन विशे-षता लेने भेलैक अछि। ई एक एहन महल अछि जाहिमे क्यो ने रहैत अछि, जे विगतकालमे भेल अत्याचारक गन्धसँ गम्हाइत अछि आ जे लोकक आवाससँ दूर अछि, एहि भवनक लग दऽबहैत नदी सेहो मरनै जकाँ भऽगेल अछि। अर्थात् ई

ओहि व्यवहार विरुद्ध संसर्गक क्षीण होइत उत्तापक समुपयुक्त प्रतीक थीक जकर ई मूक साक्षी रहल अछि। महलक आन्तरिक दृश्य आरो सांकेतिक अछि। एक-आध दोकानदार, जे कखनहुकाल अपन हिसाबबाड़ी चुकता करय आयल करैत अछि, तकरा छोड़ि, भेट घाट करय क्यो नहि अबैछ। कोठली सब खूब सजल-सजाओल छैक, मुदा सेहो सदिखन सोहाओन नहि। घरक मालिक गोविन्दलाल-ओहि धौरबीमे व्यस्त रहैत अछि तैयो अन्यमनस्क। संगीतक पाठ सेहो चलैत छैक, किन्तु वर्णनसँ स्पष्ट भऽजाइत छैक जे ताहिमे कोनो जान नहि रहैत छैक घरमे रहनिहार अन्य लोक दूगोट खबास-जीवैत मनुष्यक बदला प्रेतसन देखि पड़ैत छैक। एहन घरमे भ्रमर नामक उच्चारणमात्र वमबिस्फोटक काज करैत छैक आ सबवस्तु नष्ट-भ्रष्ट भऽ जाइत जैक। एहन उपक्रममे निशाकरसँ भेट उपयुक्ते परिणाम थिकैक। एतय बंकिमचन्द्रक सम्बन्ध आवेग आ पीड़ासँ परिपूर्ण एक मानवक कथासँ छनि, पत्नीक जातिव्रत्यक आदर्शवाद अथवा अवैध परन्तु विशुद्ध भक्तिसँ नहि। ओ भ्रमरक गुणवर्णन तँ कयलथिन अछि परन्तु ओ अपन समकक्ष विषवृक्षक सूर्यमुखीजकाँ कर्त्तव्यक प्रतीक नहि अछि। ओ नेनाजकाँ अपने इच्छें जे मन फुरय से कयनिहारि आ क्षमा नहि कयनिहारि माउगि अछि। एहित्रुटि सभक मिश्रणे ओकरा मनुक्खो बनवैत छैक। रोहिणीमे विशुद्ध प्रेरक स्फुलिंग छैक, मुदा मानसिक विकासपूर्णरूपेँ नहि भेल छैक आ बुद्धि भावावेगक दासी छैक। महत्वपूर्ण बात ई छैक जे ओ अपन विसंगतिएमे तदनुरूप अछि। कहल जाइत छैक जे बंकिमचन्द्रकेँ अपन समस्त उपन्यासमे कृष्णकान्तक इच्छापत्र सबसँ अधिक प्रिय छलनि। ओना एकर कारण सेहो छलैक, यद्यपि प्रत्येक प्रशंसकक अपन-अपन दृष्टिबोध होइत छैक।

बंकिमचन्द्रक अग्रिम उपन्यास राजसिंह (1882) ऐतिहासिक तथा प्रचारात्मक छनि। बंकिमचन्द्र हिन्दूक सैनिक पराक्रमकेँ घोषित करय चाहैत छथि आ अपना कथ्यक समर्थन हेतु राजपूतक शौर्यदिस घुरि अबैत छथि। ओ ईहो दर्शयबाक हेतु उत्सुक छथि जे धार्मिक अन्धता कोना एक महान राज्यसत्ताकेँ उन्मूलित कऽ दैत छैक। औरंगजेब हुनका एहि हेतु उपयुक्त दृष्टान्तरूपमे भेटैत छनि। बंकिमचन्द्रक अपन मत छलनि जे राजसिंह एकमात्र हुनक ऐतिहासिक उपन्यासथिकनि, कारण जे एकर मुख्य कथावस्तु-मुगल तथा राजपूतक युद्ध-ऐतिहासिक आधार पर छनि आ एहि हेतु हुनका अनेक स्रोत ताकय पड़लनि। परन्तु ई एक एहन मत थीक जकरा कतोकव्यक्ति लज्जास्पद मानथि। हुनका लोकनिक विचारेँ बंकिमचन्द्र दुर्गेशनन्दिनी तथा चन्द्रशेखरमे इतिहासक मुइल हडडीमे प्राण-संचार करबामे सफल भेल छथि, यद्यपि एहि दूनू उपन्यासक मुख्य कथा अनैतिहासिक थिकैक। मृणालिनीमे सेहो मुसलमानक पहिल जीतक समयकेर जर्जर भेल बंगालक परिवेशकेँ विश्वस्तरूपेँ पकड़ल गेल छैक। जँ हमरालोकनि ट्रेवेलियनक

भाषाक आश्रय ली तँ कहि सकैतछी जे एहि रचनासबमे घटनासब, जखन कि ओ सब अनैतिहासिक सेहो अछि, तैयो इतिहासक अनुकरणक अद्‌भुते उदाहरण अछि। राजसिंहमे लेखक प्रचारात्मकताक उत्साहमे पड़ि कथामे आत्मप्रवंचनाक आखेट बनि गेल छथि। बिनु सम्यक् विचार कयनहि टाड, ओरमे आ मानुक्कीक मन्तव्यकेँ स्वीकार कऽलैत छथिन तथा औरंगजेबकेँ अपना उपन्यासमे एक एहन असमर्थ तथा सठिआयल वृद्ध व्यक्तिक रूपमे चित्रित करैत छथिन जे ने अपना हरम पर नियन्त्रण राखि पबैत अछि आ ने अपनशत्रुकेँ वशमे राखि सकैत अछि। ओरमेंक हिस्टोरिकल फ्रेग्मेन्ट्स (ऐतिहासिक टुकरी) खण्डितरूपमे छैक आ ऐतिहासिक नहि छैक। आ कोनो नीर-क्षीरविवेकी पाठक देखि सकैत अछि जे टाडक वृत्तान्त सेहो अतिशय कल्पनाश्रित छनि जकरा गम्भीर इतिहास नहि कहल जा सकैत छैक। मानुक्की दारा तथा ओकरपरिवारक चिकित्सक छलैक। बंकिमचन्द्र केँ ई तथ्य ध्यानमे नहि अयलनि जे एहन इतिहासकारक दृष्टि पूर्वाग्रहसँ चोन्हरायल भऽ सकैत छैक। औरंगजेब आओर जे किछु रहल हो, दुर्बल प्राणीधरि नहि छल। वस्तुतः बौद्धिक चापल्य आ शारीरिक शौर्यक दृष्टिएँ किछुए भारतीय शासक होयताह, जनिक तुलना औरंगजेबसँ कयल जा सकनि। परन्तु एहि उपन्यासमे पूर्णतः ओ मौगी द्वारा शासित अछि। ओ पीने वुत्त जे उदीपुरी तकरा पर अनुरक्त अछि। यद्यपि ओ धर्मान्ध अछि तथापि उपन्यासकारक अपना आविष्कारक अनुसार अपन हिन्दू रानीकेँ कट्टर हिन्दूजकाँ रहबाक अनुमति दैत छैक आ जखन एक उच्छतगरि राजपूतकन्या ओकरा महलमे अबैत छैक तँ आसानी सँ ओकर खेलबड़पनमे आबिजाइत अछि। बंकिमचन्द्र पहाड़क दर्रा मे भेल छोट-मोट लड़ाइकेँ बहुत चढ़ाबढ़ा कऽ कहैत छथिन जाहिमे औरंगजेब दू दिन पूर्णतः राजसिंहक दया पर पड़ल रहैत अछि। ई एक आधारहीन प्रसंग थिकैक जकरा बिनु सोचने विचारने ओरमेसँ ग्रहण कऽ लेलनि अछि, मुदा यदुनाथ[1] सरकार सदृश आधुनिक इतिहासकार लोकनि कोनो स्थान नहि देने छथिन। ईहो विशेष रूपेँ ध्यातव्य जे बंकिमचन्द्रक समयक मान्यता प्राप्त मध्यकालीन इतिहासवेत्ता एल्फिस्टन एहि प्रसंगकेँ चुप्पहि उपेक्षित कऽदेने छथिन।

राजसिंह आ औरंगजेबक मध्य युद्धक कथा कहबाक समय तथा माणिक लाल एवं निर्मलाकुमारी तथा ओकरासभक अद्‌भुतकार्यक कथा गढ़बाक समय बंकिमचन्द्र अपन प्रचारात्मक आवेगमे नहि बहकि गेलाह अछि, प्रत्युत कथा गढ़बाक प्रेममे सेहो। परन्तु ककरो एहि प्रभावमे नहि पड़ल रहबाकचाहिऐक जे राजसिंह श्रेष्ठता अथवा शक्तिमे न्यून छथि। रवीन्द्रनाथ हमरालोकनिक ध्यान फलकक विस्तीर्णतादिस आकष्ट करैत वर्णनक ओहि गत्यात्मकतासँ परिचित करौलनि अछि जे एक युग दोसर युग दिस बढ़ैत दृष्टिगोचर होइछ। कलाक दृष्टिएँ वर्सा-

1. ईधरि मानए पड़त जे सरकार राजसिंहकेँ सत्यपरक ऐतिहासिक उपन्यास मानैत छथि।

धिक मार्मिक प्रसंग मुबारक, जेबुन्निसा आ दारियाक छैक, यद्यपि एहूठाम मुबारक कें पुनर्जीवन प्राप्तिमे परीकथाक पुट छैक। प्रारब्ध मुबारककें खेहारैत छैक आ ओ दू गोट असाधारण महिलाक आवेगमय कामातुरतासँ आप्लावित भऽ जाइत अछि, जाहिमे एकटा सामाजिक सोपानक शिखर पर अछि आ दोसर एकदम तल-पर। परन्तु दूनूकें एके पुरुषक प्रति प्रेम-दारियाक भवितमे उन्माद छैक तथा जेबुन्निसाक आवेगमे वक्रता-दूनूकें एके स्तर पर आनि दैत छैक। भुटियादारिया अपन राजसी साज-सज्जामे अस्पष्टरूपें विशाल लगैत अछि, मुदा पराक्रमी शाहंशाहक पराक्रमी बेटीकें अन्ततः बोध भइए जाइत छैक जे ओहो ओही तत्त्व सँ बनलि अछि जाहिसँ एक साधारण मानव। ओकरा सभक मध्य पराक्रमशील मुबारक कृत्रिमनिद्रामे असहाय सूतलमे चलनिहार सन लगैत अछि आ ओहि तीनू व्यक्ति पर ओहि प्रारब्धक छाया मड़राइत रहैत छैक जकर काज अविचलित रूपें पीड़ा देब छैक। मुख्य कथामे घटनासभक नाटकीयतापर ध्यान केन्द्रित रहैत छैक आ जेना टैगोर कहने छथि जे सूक्ष्म चित्रांकनक हेतु विशेष अवकाश नहि छैक। परन्तु मुबारकसँ सम्बद्ध प्रसंग मानवीय संभावना सबसँ परिपूरित छैक आ युद्धक कथाकें गम्भीरता तथा गरिमा प्रदान करैत छैक, यद्यपि उत्तेजना दैत छैक, मुदा केवल जीवनक छोरकें स्पर्श करैत छैक।

एक उपन्यासकारक रूपमे बंकिमचन्द्र अपन एहि मध्यावधिमे तीन गोट कथा लिखलनि ताहूपर विचार करब एतय आवश्यक थीक। ई कथा सब थिकनि इन्दिरा (1873) युगलांगुरीय अथवा दू अँउठी (1874) आ राधारानी (1877)। ई कथासब विशुद्ध कथा-विधाक अनुरूप नहि छनि जेना हमरालोकनि कथा एवं उपन्यासमे भेद करैत छिऐक। कथामे एक विलक्षण क्षणकें प्रस्तुत कयल जाइत छैक, कथ्यक निरन्तरता ओहिमे नहि होइत छैक। यद्यपि एकरो स्वरूपमे आरम्भ मध्य तथा अन्त एक भऽसकैत छैक, तथापि एकर सम्पूर्ण भाव एक विशेषबिन्दु पर केन्द्रित रहैत छैक। ई एक चिनगीक सदृश होइछ जे जहिना अकस्मात चमकि उठैछ तहिना अकस्माते मिझाइओ जाइत अछि। बंकिमचन्द्रक कथामे एकाग्रता नहि छनि। ओ सब लघुउपन्यास थिकनि, जाहि मे सामान्यतः उपन्यासक सब विशेषता छैक, आकारमात्रमे ओ सब थोड़ेक छोट आ जटिल सेहो कम छनि। कल्पनाशीलता पर्याप्त छैक। वस्तुतः बंकिमचन्द्र स्वयं ओकरासबकें परीकथा (उपकथा)क श्रेणी देने छथिन। ओना तँ हुनक अधिकतम रचनासबमे उपकथाक तत्त्व विद्यमान छनि तैयो वृहत् उपन्यास सबमे ई तत्त्व मनोविज्ञान तथा संभाव्य ओ आवश्यक तत्त्वक समावेशक कारणें नियन्त्रित भऽगेल छनि। एहि उपकथा सबपर कल्पनाक अधिकार सर्वोपरि छैक।

एहि तीनूमे राधारानी सबसँ दुर्बल छनि जाहि प्रसंग विस्तारसँ टिप्पणीक प्रयोजन नहि प्रतीत होइछ। पद-पद पर अविश्वसनीयता छैक आ जाहिठाम-

यथार्थप्रतिपादनक चेष्टा कयल गेल छैक ततय गलचौथीअलिए वेसी बुझना जाइत छैक। परन्तु युगलांगुरीयमे असंभव बात सम्भव सन लगैत छैक। कथाक कथावस्तु एहन समयसँ सम्बद्ध छैक जहिया ताम्रलिप्त (तामलुक) एक समुद्री बन्दरगाह छलैक आ बंगालक तीव्र व्यापार सुदूरस्थित सिलोन (श्रीलंका) क संग होइत छलैक। ताहू समय लोकके ज्योतिष पर ओहने विश्वास छलैक जेहन कि एखनहु छैक, परन्तु जे तत्त्व हमरा लोकनिक ध्यानके बान्हि रखैत अछि से थीक मानवक क्रियाकलाप आग्रह-नक्षत्रक गतिविधिक आश्चर्यजनक तादात्म्य। एक वर आ एक कनेयाँक विवाह आँखिपर पट्टी बान्हि, कऽ देल जाइत छैक, ओहिमे ककरो ई ज्ञान नहि छैक जे ओकर जीवनसंगी के भेलैक अछि। पाँच वर्ष बीतिगेला पर जखन दूनूके परिचय कराओल जाइत छैक तखन ई ज्ञात होइत छैक जे वर-कनेयाँ-हिरण्मयी आ पुरन्दर-कतोक वर्षसँ एक दोसरके जनैत छलैक आ एक दोसरासँ प्रेम करैत छलैक। अर्थात हिरण्मयी जकरा अपवित्र सम्बन्ध बुझैत रहलैक से वस्तुतः एक पत्नीक अविचल आराधनाक प्रतिफल छलैक। कथा ततेक कुशलतासँ कहल गेलैक अछि जे मूल असंभावना हमरासमक कल्पनासँ टकराइत नहि अछि आ भले कतोक यातनापूर्ण मोड़ अबैत छैक तथा अघटित घटना घटित होइत छैक, तथापि हिरण्मयीक पुरन्दरक प्रति आत्मीयता यथावत् रहैत छैक। ओकर संकोच, ओकरा समक पारस्परिक सामंजस्य तथा ओकर सभक्तिक स्वीकृति ओकरा संलग्नताके आरो उद्भासित करैत छैक।

इन्दिरा युगलांगुरीयक अपेक्षा वेस पैघ आ उत्कृष्ट रचना थिकनि। ई आसन्न अतीतक कथा थिकैक जहिया कलकत्ता विशाल नगरक रूपमे विकसित भऽ रहल छलैक। परन्तु गाम सब डाकू सभसँ तैयो पीड़िते छल, तावत धरि रेलगाड़ी नहि छलैक। पालकीसँ यात्रा करव भयावह रहैक। इन्दिराक विवाह भेलाँ आठवर्ष बीति गेल रहैक। ओकर स्वामी विवाहक वाद तुरन्त जीविकाक खोजमे बाहर चल गेलैक तेँ ओहि दूनूके नीकजकाँ भेटो नहि भऽ सकलैक। इन्दिरा अपना बापेक घर मे सम्पूर्ण सुख सुविधासँ रहैत छलि, परन्तु भावनात्मक रूपेँ उदास, एकसरि छलि तखन एहीठामसँ कथा आरम्भ होइत छैक-ओकर स्वामी अपन घर घुरि अबैत छैक आ इन्दिरा खुशीसँ मातलि पतिसँ मिलनक हेतु तुरत यात्रा पर चलि दैत अछि। बाटमे डाकू दल ओकरा दलपर आक्रमण करैत छैक, सब किछु लूटिपाटि, घोरजंगलमे ओकरा छोड़ि दैत छैक। इन्दिरा एहिठामसँ एक प्रकारक दुष्कर परीक्षामे पड़ि जाइत अछि आ अनेक विपर्ययक, जाहिमे किछु कठिन तँ किछु हल्लुक सेहो, सामना करैत अन्ततः अपना स्वामीक लग पहुंचिए जाइत अछि। बंकिमचन्द्र ई सोचि जे प्रायः कथाक अन्त आकस्मिक होयबाक चाही, तेँ अनेक छोट-छोट उपकथा सबके जोड़ि कथाक एहि भागके बढ़बय चाहैत छलाह। आ से एहि रूपेँ जे पति आ पत्नी एक दोसरसँ तावत धरि नहि मिलि पबैछ जा धरि

ओ किछु वर्षधरि फराक-फराक रहि प्रारंभिक परीक्षासँ नहि गुजरि जाइछ। कथाक प्रथम भागक परिकल्पना सर्वथा प्रभावकारी छैक, किन्तु इन्दिरा जाहिघर मे आश्रय लेने अछि ताहि ठाम ओकरा पतिकेँ आबि गेलाक बाद कथाक रोचकता मन्द पड़य लगैत छैक। तकर बाद उपन्यासकार हमरालोकनिक ध्यान कृत्रिमढंगसँ आकष्ट करबाक चेष्टा करैत छथि आ से कखनहु-कखनहु रूक्षतासँ सेहो।

इन्दिरा एक कथारूपमे प्रशसनीय तँ छैके तत्रापि ई लघुउपन्यास कथ्यक अपेक्षा शैलीक दृष्टिएँ वेसी विलक्षण अछि। कथा कहनिहारि बराबरि इन्दिरा स्वयं अछि जे अपन कहब अपना अनुसन्धानक विजयपूर्ण अन्तसँ आरंभ करैत अछि। ओ जाहि घटनाक वर्णन करैत अछि अथवा जाहि कल्पनाक उपयोग करैत अछि ताहि सबमे अपन दीप्ति, अपन उत्साह विनोदप्रियताक अपन सूक्ष्म चेतना केँ विस्तारसँ व्यक्त करबाक प्रयास करैत अछि। फलतः ओ वर्णन आदिसँ अन्त-धरि प्राणवन्त बनल रहैत छैक। अन्तमे, जेना पहिने कहल गेल अछि, कथा जखन-रोमांचित करबाक गुणसँहीन होअय लगैत अछि, ओकर आनन्दपूर्ण उत्साह तथा ओकर वर्णन करबाक क्षमता ओहिमे नवजीवनक संचार कऽदैत छैक। परन्तु वर्णनक ई दीप्ति आयासपूर्वक कयल कला-प्रदर्शनक परिणाम नहि थिकैक, ई ओकर अपन अदम्य उत्साहक अनायास प्रवाह थिकैक। एहि औपन्यासिक रचनापर प्रकाश देबाक हेतु वंकिमचन्द्र एकरा आरंभेमे कविशैलीक किछु पंक्ति देने छथिन—

रेयरली रेयरली कमेस्ट द्याऊ
स्पिरिट आफ डिलाइट।
कखनहु कखनहु तोँ अबैत छेँ
आनन्दक भावना।

इन्दिरा आनन्दक भावनाक प्रतीक थीक आ जतय धरि शब्द कोनो पात्रक चरित्रकेँ अंकित कऽ सकैत अछि, ओकर गणना बंगला साहित्यक जीवंततम व्यक्तित्वमे होयतैक।

अन्तिम अवधिक उपन्यास

आन्दमठ (1882) देवीचौधुरानी (1884) आ सीताराम (1887) अंतिम अवधिक एहि तीनू उपन्यासमे पुनः अपन सामग्रीक हेतु इतिहास दिस मुड़ि गेलाह, परन्तु ताहिमे ओ ततेक परिवर्तन आ ततेक परिवर्द्धन कयलनि जे ओ अपना पाठक केँ चतौलनि जे ओ लोकनि एहि सबकेँ ऐतिहासिक उपन्यास नहि मानि लेथु। ओ सब एहन साधारण औपन्यासिक कृति सेहो नहि थीक जकर लक्ष्य मात्र खिस्सा कहि देव रहैत छैक अथवा चरित्र-चित्रणकऽदेब मात्र। ओ सब वैचारिक उपन्यास थीक। यद्यपि ओहू सबमे रोमांचकारी घटनासभक अभाव नहि छैक, तथा किछु पात्रक चरित्र-चित्रण सेहो बहुत प्रौढ़ता पूर्वक भेलैक अछि तथापि ओ घटना सब तथा पात्र सब मुख्यतः किछु विशिष्ट धार्मिक, दार्शनिक तथा राजनीतिक विचारकेँ वहन करबाक उद्देश्य रखैत अछि। एहि अवधिक सबसँ अधिक प्रख्यात उपन्यास आनन्दमठ 1770 क बंगालक भीषण दुर्भिक्ष तथा ताहिसँ सम्बद्ध किछु जिलाधरि सीमित, संन्यासी विद्रोह पर आधृत अछि जे जनजागरणक काज कयलक। यद्यपि बंकिमचन्द्र ताहिदुर्भिक्ष तथा ताहिसँ पसरल अराजकताक भयंकर चित्रण करैत छथि तथापि ओहि विप्लवक स्वरूपकेँ ताहिरूपेँ बदलि देलथिन जे ओ चिन्हबामे नहि अबैत छैक। केवल पात्रे काल्पनिक नहि छनि, प्रत्युत धार्मिक तथा राजनीतिक पुनरुत्थानक विचारक जड़ि सेहो इतिहासमे उपलब्ध नहि होइत छैक। ओ संन्यासी फकीर लोकनि जनिक चर्चा हमसब इतिहासमे पबैत छी, बंगालीसँ इतर छलाह तथा जाहि जिला सबमे ओलोकनि क्रियाशील रहथि ताहि सब जिलाकेँ उचित अर्थमे बंगालक भाग नहि मानल जा सकैछ। जेना यदुनाथ सरकार स्पष्ट करैत छथि जे ओ सब विशुद्ध आ साधारण लुटेरा छल तथा न्याय आ सुरक्षाक सिद्धान्तपर राज्य स्थापित करबाक बिचार ओकरासभक माथमे कहिओ नहि अयलैक। परन्तु ऐतिहासिक पृष्ठभूमि असंगत नहि छैक। एही ऐतिहासिक पृष्ठभूमिकेँ अनदेखल कऽदेबाक कारणेँ एहि उत्कृष्ट कृतिक पछाति कटु आलोचना भेलैक। वस्तुतः इतिहासे एहि उपन्यासक कथावस्तु निर्धारित करैत छैक। आनन्दमठ 1882 मे प्रकाशित भेल छल, ई ओ समय छलैक जखन भार-

तीय राष्ट्रिय कांग्रेसक स्थापनासँ केवल तीन वर्ष पहिने इलबर्ट विधेयक पर आन्दोलन ठाढ़ भऽ गेल छलैक। एहि कृति द्वारा भारतकेँ अपन श्रेष्ठ राष्ट्रगीत प्राप्त भेलैक जकर रचना पूर्वहि भऽ चुकल छलैक। आ ई राष्ट्रगीत मृतप्राय भारतीय देशभक्तिक हेतु सम्मिलित आह्वानगीत बनि गेल। मुदा कथाकेँ तँ ठोस परिवेश भेटब आवश्यक छलैक, अन्यथा ओ वायवीय आ सर्वथा काल्पनिक बुझि पड़ितैक। आ परिवेश सेहो पुरातन समय ः बंगालक नहि भऽओहि समयक होयबाक चाहैत छलैक जखन मुस्लिम सत्ता अन्तिम दम तोड़ैत सन हो आ अंग्रेज तावतधरि चारूदिस पसरल अराजकताकेँ नियन्त्रित नहि कऽ सकल हो। एहने पृष्ठभूमि एहन क्रान्तिधर्मी उपन्यासकेँ उपयुक्त परिप्रेक्ष्य दऽ सकैत छलैक। एहि परिवेशमे जँ क्रान्तिकारी लोकनिकेँ ऐतिहासिक पात्र जकाँ विश्वसनीय बनयबाक हो तँ आवश्यक जे राजनीतिक स्वतन्त्रताकेँ हिन्दू साम्राज्यक पुनरूज्जीवनक रूपमे सोचथि। मुदा साम्प्रदायिकताक एहि पक्षकेँ, जे संयोगवश कथामे आबि गेल अछि, मूल विचारसँ कोनो सरोकार नहि छैक। जखन हमरालोकनि उपन्यासक वैचारिकतापर विचार करैत छी तँ ऐतिहासिक ढाँचाक सीमाकेँ उपेक्षित कऽदेबाक चाही अथवा ओतवे महत्त्व देबाक चाही जतबा वांछित हो, अर्थात, ई कहल जा सकैछ जेना हमरालोकनि वन्देमातरम् केर ओहि आरंभिक पंक्तिक उपेक्षा करैत छिऐक जाहिमे बंगालक शस्य-श्यामला भूमिक वर्णन तँ छैक मुदा राजस्थानक बालुकामय भूमि वा पर्वतखण्डक उल्लेख नहि छैक, अथवा सात करोड़ बंगालीक उल्लेख छैक, मुदा तीस-चालीस करोड़ भारतीयक नहि। तखन ई पूछल जा सकैछ जे लेखकक आधारभूत वैचारिकता की छनि तथा ओ अर्पण आ कविक स्वप्नकेँ कोना साकार कयलनि? आनन्दमठ, मोक्षधाम, क संस्थापक सत्यानन्द अपनाकेँ वैष्णववादक प्रवर्त्तक कहैत छथि, श्रीचैतन्यक कोमल शान्तिवादी वैष्णववाद नहि, प्रत्युत मूलभूत ओ वैष्णववाद जे महाभारतमे प्राप्त होइत अछि आ जकर व्याख्या हमरालोकनिकेँ बंकिमचन्द्रक कृष्णक जीवन तथा अन्यान्य धर्म सम्बन्धी निबन्ध मे भेटैछ। एतय प्रतीक रूपमे ईश्वर उपस्थित कयल गेल छथि, प्रेमक प्रतींक रूपमे ओतेक नहि जतेक न्यायक प्रतीक रूपमे। ओ शक्तिक हथियारकेँ काजमे अनैत छथि आ ओ दण्डो दैत छथिन आ रक्षोकरैत छथिन। एकर ऐतिहासिक महत्त्व किछु होउक, ई एक सामान्य विचार थिकैक, एतवेसँ बंकिमचन्द्रक चित्रकेँ महत्ता नहि भेटि सकैत छनि। एहिमे जे मौलिक आ विशिष्ट छैक, से थिकैक देशभक्तिक अवधारणा अर्थात् देशकेँ मातृस्वरूप बूझव। सन्तान सव एहीमाताक बच्चासब थिकनि, ओ आन सम्बन्धकेँ नहि मानैत छथि। एक माताक रूपमे ओ पारिवारिक जीवनमे जे किछु पवित्रतम अछि, सभक प्रतीक थिकीह आ वैह धर्मकपूर्ण रूप थिकीह। हुनकासँ भिन्न अथवा ऊपर किछु नहि अछि। ईश्वरत्व सम्बन्धी हमरासभक समस्तविचार हुनकेमे समाहित अछि आ अधिष्ठात्री होयबाक सम्बन्धेँ

एकनिष्ठ आज्ञाकारिता तथा अन्यान्य सब सम्बन्धक विच्छेदक मांग करैत छथि। एही कारणेँ सन्तान एहन संन्यासी लोकनि छथिन जे लोकनि संसारक परित्याग कऽदेने छथि।

बिचार भलेँ कतबो महत्त्वक हो, जावतधरि जीवन्त प्रतीक़क माध्यमसँ ओकर अभिव्यक्ति नहि होइत छैक तावतधरि कलात्मक दृष्टिएँ ओ सर्जनशील नहि भऽ पबैत अछि। एही कारणेँ कला मार्मिक तथा जीवन स्फूर्तिसँ परिपूर्ण पात्र चाहैत अछि। एहि उपन्यासमे अपना घरसँ महेन्द्र आ कल्याणीक पलायनसँ कथा आरम्भ होइत छैक, परन्तु हेमचन्द्र आ मृणालिनी जकाँ ओ सब कथाक सूत्रपात मात्र करैत छैक, ओना यद्यपि यदाकदा ओकरा सबकेँ अग्रभूमिमे आनल जाइत छैक, तथापि ओकरा सभक इतिहास अपनामे कोनो महत्त्व नहि रखैत छैक। किएक तँ से भलेँ महेन्द्र ओहि विरुप्लवमे केहनो भूमिकाक निर्वाह करैत हो, वास्तविक अर्थमे ओ सन्तान नहि थीक। सन्यासी सभक साहसिक कार्य तथा युद्ध सबल रूपेँ वर्णित छैक, किन्तु वर्णनमात्र चरित्रांकनक हेतु पर्याप्त नहि होइत छैक। माताक आह्वान केहन निरंकुश आ निषेधक भऽ सकैत छैक, तकर आभास सत्यानन्दक दूगोट प्रमुख सहयोगी भवानन्द आ जीवानन्दक इतिहाससँ देखल जा सकैत अछि। माता समस्त सम्बन्धक निश्चयात्मक समर्पण चाहैत अछि, परन्तु जीवधारी व्यक्तिक आदिम आवेग स्त्री-पुरुषक मध्य यौन आकर्षणक कारणेँ अन्तरमे उठैत प्रचण्ड बिहाड़ि आ ज्वरक की भऽ सकैत छैक? उपन्यासक अत्यावश्यक दृष्टिएँ महेन्द्रक पत्नी होयबाक सम्बन्धेँ ततेक महत्त्व नहि छैक जतेक ओहि नारीक सम्बन्धेँ जे भवानन्दक विश्वासक आधारकेँ डोला देलकैक अछि। एतय हमरालोकनिकेँ तनावक नाटके नहि भेटैत अछि, प्रत्युत समस्या सभक ओ ओझराहटिओ, जकरासँ प्रत्येक क्रान्तिकारीकेँ कखनहु ने कखनहु सामना करहि पड़तैक। जीवानन्दक जीवनमे यैह समस्या दोसररूपेँ उपस्थित होइत छैक। ओ एक विवाहित व्यक्ति अछि जे अपन पत्नी शान्तिसँ मिलबाक हेतु अपन प्रतिज्ञा भंग कऽ लेलक, किन्तु ओकर पत्नीओ संन्यासी सबमे मिलि जाइत छैक आ सन्तान सभक दिससँ बेस वीरताक भूमिकाक निर्वाह करैत अछि। जीवानन्द आ शान्ति संग तँ रहैत अछि, किन्तु पति आ पत्नीक रूपमे नहि। ओ दूनू अपन-अपन वासनात्मक मनोभावकेँ देशभक्ति एवं धर्मसँ युक्त आदर्शक अन्वेषणमे सखाभावमे परिवर्त्तित कऽ लेने अछि। वासनाक ई शुद्धीकरण वाला प्रसंग परीकथाक संस्पर्शे करैछ, मुदा परीकथाक ओ वातावरण समस्याक वास्तविकता अथवा संवेद्य-विन्दु केँ गूढ़ नहि बनबैत अछि। गोर्कीक उपन्यासमे सेहो हम सब पढ़ैत छी जे क्रान्तिकारी होइत पत्नीक संग रहब असुविधाजनक व्यवस्था थिकैक। बंकिमचन्द्र केवल सुविधाक दृष्टिएँ ओहि विषय दिस दृष्टि नहि देलनि। क्रान्तिकारीक हेतु एकमात्र माता सर्वस्व थिकथिन, वैह सबदेवक देव थिकथिन, जे अन्य कोनो सम्बन्धकेँ

निषध करैत छथिन। एहना स्थितिमे द्वन्द्व भऽ सकैछ वा दुर्घटना भऽ सकैछ अथवा निर्मलीकरण भऽ सकैछ, मुदा सामंजस्य नहि।

देवी चौधुरानीक ऐतिहासिक आधार आनन्द मठहुसँ अधिक सन्देहास्पद छैक। एहूठाम ओही अवधिक प्रसंग निर्देश छैक जखन मुस्लिम राज्यक अन्तिम दिनमे बंगालमे अराजकता प्रबल भऽ उठल छलैक आ वारेनहेस्टिंग्स भारतमे ब्रिटिश शासनक आधार सुस्थिर नहि कऽ सकल छल। अराजकता एवं कुशासनक एहिकालमे बंगालक किछु जिलामे डाकूसभक द्वारा लूटि-पाटि, अपहरण आदि चलि रहल छलैक जाहिमेसँ दू गोटेक-भवानीपाठक आ एक महिला देवी चौधुरानीक-चर्चा हंटर अपनाग्रन्थ 'स्टैटिस्टिकल एकाउन्ट आफ बंगाल'क सातम खण्डमे कयने छथि। देवी चौधुरानी पाठकक संगठनमे छलि आ नावमे रहैत छलि। परन्तु एहिठाम मुख्य पात्र सभक ऐतिहासिकता समाप्त भऽ जाइत छैक, कारण जे इतिहासक पात्र पाठक ने विद्वान् अछि ने उदार, जेहन बंकिमचन्द्र ओकरादर्शे ने छथि। हमरालोकनिकेँ देखबामे अबैत अछि जे देवी चौधुरानी वास्तवमे लूटि-पाटि करैत अछि, मुदा एहि हेतु कोनो प्रदर्शन नहि करैत अछि। इतिहासकार लोकनिक अनुसार अराजकताक एहि स्थितिक-वर्णन प्रगाढ़ तथा समीचीन भेलैक अछि, परन्तु ओकरा सभक चरित्र आ विचार बंकिमचन्द्रक अपन थिकनि।

जेहन पहिने कहल गेल अछि, ई अन्तिम अवधिक उपन्यास सब विचारक उपन्यास थिकनि, तेँ समीक्षात्मक विवेचन करबाक काल हमरालोकनिकेँ विचारसँ कथावस्तु आ पात्रक दिस जयबाक चाही, कथावस्तु आ पात्र सबसँ विचार दिस नहि। बंकिमचन्द्र संस्कृतिक धर्मक चित्रण करय चाहैत छथि, जकर दार्शनिक विश्लेषण ओ अपन धार्मिक निबन्धसबमे दैत छथि। संस्कृति अथवा धर्मक तात्पर्य थिकैक शारीरिक, सौन्दर्यबोधात्मक एवं आध्यात्मिक प्रत्येक प्रकारक क्षमताक समन्वित विकास आ एहि विकासक प्रतिफल थिकैक समस्त स्वार्थमय आकांक्षा पर विजय, जाहिसँ कोनो पुरुष वा नारी अपनाकर्त्तव्यक पालन बिनु कोनो फल-प्राप्तिक कामनासँ करैत जाय। एही स्थितिमे कर्म ईश्वरनिष्ठ भऽ सकैत अछि आ एहि धर्मक पालन सांसारिक कृत्यक पालन द्वारा सबसँ अधिक सुगम अछि, त्यागेँक माध्यमसँ नहि, कारण तकर अर्थ होयत सांसारिक कर्त्तव्यसँ मुह मोड़ब। महाभारतमे भगवान श्रीकृष्ण गीताक माध्यमसँ यैह सन्देश देने छथि। रवीन्द्र-नाथ टैगोर जेना कहने छथि वादमे मुक्ति ? ई मुक्ति कतय प्राप्य अछि। हमरा सभक स्वामी स्वयं प्रसन्नतापूर्वक सृष्टिक एहि बन्धनकेँ अंगीकार कयने छथि, ओ सर्वदाक हेतु हमरालोकनिसँ जुटल छथि।

भवानीपाठक एही धर्मक शिक्षा दैत छथिन आ प्रफुल्ल एकर निर्वाह करैत अछि। ओ अपनापतिक घरमे स्वीकार नहि कयल जाइत अछि, कारण जे ओकर सासुर ओकरा मायक प्रसंग निराधार अपवादक कथा सुनि चुकल छथिन। ओकरा

अकस्मात् प्रचुर सम्पत्ति हाथ लागि जाइत छैक आ भवानीपाठक सन महा डकैत सँ भेट भऽ जाइत छैक जकरा द्वारा बहुत परिश्रमपूर्वक शिक्षा-दीक्षा देलाक बाद ओकर समस्त क्षमताक विकास होइत छैक आ तखन ओकरा देवी चौधुरानीक रूपमे एहि संसारमे सर्वथा निष्काम भावसँ निर्भय तथा व्यक्तिगत लाभक बिनु कामना कयने एक रानी जँका-दुर्बलक रक्षा करब आ दुष्टकेँ दण्ड देबाक कर्त्तव्य पालन करबाक हेतु छोड़ि दैत छैक। पाँच वर्ष धरि ओ राजसी ठाठबाटसँ, किन्तु विनम्रतासँ अर्थात् एक सम्राज्ञीजकाँ सेहो आ एक त्यागीजकाँ सेहो अपन कर्त्तव्यक पालन करैत अछि आ तखन चिर दिनुक पछाति अपन पतिसँ भेट भऽ जाइत छैक। पतिकेँ देखैत देरी ओकर सुषुप्त पत्नीत्वभाव जागि उठैत छैक जकर तात्पर्य जे भवानीपाठक द्वारा देल गेल कर्त्तव्य पालनसँ पैर पाछु करब। आब ओ एहि दिशामे एक इंच आगाँ नहि बढ़य चाहैछ। पहिने तँ ओ सोचैत अछि जे न्याय विरुद्ध आचरणक कारणेँ ओ अंग्रेजक समक्ष आत्मसमर्पण कऽ फाँसीपर लटकि जाय, मुदा ई आश्वासन भेटलापर जे प्रायः ओकर पति पुनः आबहु ओकरा स्वीकार कऽ लैक, ओकर जिजीविषा जागि जाइत छैक। एही काल दैवी कृपास्वरूप बिहाड़ि आबि जाइत छैक। ओ बाँचि जाइत अछि आ अपनापतिक घर घुरि अबैत अछि जतय ओकर हृदय केहनो सेवाकरबाक हेतु प्रस्तुत भऽ जाइत छैक। परन्तु ओकरामे एक प्रकारक निःसंगता छैक, जाहि सँ ओहि ठाम रहितो ओकरासँ अत्यधिक दूर रहि सकैत अछि। ओकरासँ सब प्रसन्न छैक, एतेक धरि जे ओकर सौतिन नयनतारा पर्यन्त, एतय प्रसन्नतासँ आवृत हजारो बन्धन छैक, मुदा ओहीमे वास्तविक मुक्ति आ सत्यआनन्दक अनुभव होइत छैक।

सामाजिक एवं पारिवारिक जीवनक हल्लुक रंगक छोटसन चित्र एहि उपन्यासमे सुन्दर रूपेँ चित्रित अछि आ प्रकृति तथा अराजकताक वर्णन प्रबल ओ सजीव छैक। किन्तु मुख्य कथ्य-संस्कृतिक धर्मकेँ मूर्त्तिमान करबाक काज मन्द-गति आ वेढंग जकाँ भेलैक अछि। एहिमे कल्पनाक एकतत्त्व छैक जे सुदूर अतीतक ऐतिहासिक उपन्यासमे तँ सह्य भऽ जाइत छैक, मुदा पारिवारिक जीवनक कथामे असंगत सन लगैत छैक। काल्पनिकताक ई रूप बिहाड़ि वाला प्रसंगमे अपन पराकाष्ठापर पहुँचि जाइत छैक आ हमरालोकनिसँ आशा कयल जाइछ जे हमरा-लोकनि एकरा प्रफुल्लक उद्धार हेतु विशेष उद्देश्यसँ ईश्वर द्वारा पठाओल मानी। जँ हमसब एकरा छोड़िओ दिऐक तैयो देवी चौधुरानीक विकास प्रफुल्लक रूपमे आरो अविश्वसनीय छैक। पाँचवर्षधरि ओकरा प्रत्येक अनुशासनक क्षेत्रमे-मुक्का-बाजीसँ दर्शन धरिक विस्तारपूर्वक प्रशिक्षण देल जाइत छैक आ तखन ओ अपन एक रानीक कर्त्तव्यक अनुपालन करैत अछि। एहि अवधिक क्रियाकलापक कथा कथ्यक प्राणभूत थिकैक, मुदा तकर विस्तृत चित्रण नहि कऽ ओकर सारांशमात्र पाँच छौ शब्दमे कहि देल गेलैक अछि। तखन की वास्तवमे प्रफुल्ल निः संग

अछि ? प्रकृतिक एक स्पर्श मात्र ओकरा समस्त संसारसँ विमुख बना दैत छैक। ई ओकर पत्नीत्व-भाव विशुद्ध वैयक्तिक विषय थिकैक-आसँह ओकरापर व्याप्त भऽ जाइत छैक तथा ओकर रानीक स्वरूपकेँ शून्य बना दैत छैक। ई कहल जा सकैछ जे ओ अपना पतिक गृहमे संस्कृतिक धर्मक निर्वाह करैत अछि, किन्तु एहि प्रसंग हमरा सबकेँ विशेष जनतब नहि प्राप्त होइछ। केवल अन्तिम अध्यायमे हड़बड़ीमे थोड़ बहुत दर्शा देल गेलैक अछि। अर्थात् उपन्यास एहन बिन्दुपर समाप्त भऽ जाइत छैक जाहिठामसँ आरंभ होयवाक चाहिऐक। हम सब कहि सकैत छी जे आरम्भ नीक भेलैक अछि, मध्य भरिगर आ अन्त तँ छैके नहि। बस हमरासबकेँ एतावन्मात्र ज्ञात होइत अछि जे प्रफुल्ल अपन पारिवारिक कर्त्तव्यक निर्वाह सुचारुरूपेँ करैत रहलि आ ओकर परिजन ओकरासँ प्रसन्न रहैत छैक। ई हमरा-लोकनिकेँ उल्लेखनीय रूपमे प्रभावित नहि करैत अछि, विशेषतः तखन जखन हमरासबकेँ ई ज्ञात भऽ जाइत अछि जे ओकरा ससुरक विरोध कहिया ने समाप्त भऽ चुकल छैक। ई एक प्रकारेँ पराकाष्ठाक प्रतिकूल प्रतीत होइत अछि, जखन हम सब सोचैत छी जे की ओ भयंकर देवी-चौधुरानी ओसब केवल ओहि बुड़िबक सबकेँ परतारबाक हेतु सिखने छलि ?

हुनक अन्तिम उपन्यास सीतारामपर जखन हम सब अबैत छी तँ कलात्मक कौशलमे आरो ह्रास देखबामे अबैत अछि। ई आध्यात्मिक विशुद्धता आ गीतामे प्रतिपादित निष्काम कर्मपर नीरस प्रवचनमात्र थीक। इतिहासक एक पातर सन परत मात्र छैक आ फराक फराक घटनाक वर्णन, विशेषतः आरंभिक अध्यायमे बहुत प्रौढ़। वस्तुतः इतिहासकारलोकनिमे सर्वाधिक प्रामाणिक यदुनाथ सरकारक मतेँ यद्यपि बंकिमचन्द्र तथ्यमे स्वछन्दताक आश्रय लैत छथि आ जहिना अठारहम-शताब्दीक आरंभिक समयक बंगालक सामाजिक ओ राजनीतिक जीवनक, तहिना ओहि समयक युद्धक रीतिक चित्रण बहुत निकटतासँ करैत छथि, परन्तु जखन हमसब ऐतिहासिक ढाँचाकेँ दृष्टि निरपेक्ष करैत छी तँ कथा अथवा ओकर पात्र ने संभाव्य प्रतीत होइछ ने आवश्यक।

वैचारिक धरातल पर एक श्रेष्ठ व्यक्तिक उच्छृंखल विषय-सुखक इच्छाक कारणेँ पतन एकर कथ्य विषय छैक। एन्टोनीजकाँ सीताराम सेहो अपन संसार केँ एक मौगी द्वारेँ नष्ट कऽ लैत अछि, मुदा श्रीनामक ओ माउगि, जकरा ओ प्रेम करैत छैक, क्लियोपाट्राक समान अपूर्व बुद्धि वाली वेश्या नहि थीक, प्रत्युत ओकरेसँ बिछुड़लि ओकर श्रद्धावनत पत्नी थिकैक, कारण जे ओ एक विवाहिता नारी थीक जे साध्वी बनि संसारकेँ त्यागि देने अछि। ओ राति-दिन अर्थात सदिखन समीपमे रहबाक अनुमति तँ दैत छैक, परन्तु ओ ओकरा छुविओ नहि सकैत छैक। ई एक असंभव स्थिति थिकैक, एकरा सूक्ष्म मनोवेगक अन्तरंग चित्रण द्वारा ईश्वरीय उक्तिमँ संभव बनाओल जा सकैत-छलैक। परन्तु मनोविज्ञानक

आश्रय लेबाक बदला बंकिमचन्द्र सीतारामक राज्यक भाग्यपर पड़निहार एहि अतिशय अनुरागक प्रभावकेँ अस्वाभाविक वर्णन मात्र दैत छथि।

जखन हम सब पतिसँ पत्नीक दिस बढ़ैत छी तखनहु ई चित्रण विशेष ग्राह्य नहि प्रतीत होइछ। ज्योतिषीक एक भविष्यवाणीक परिणाम स्वरूप सीताराम अपन स्त्री श्रीकेँ त्यागि देने छलैक ओ अबला एकसरिए उत्कंठित बौआइत रहलि। हमरा लोकनि ओकर आरंभिक जीवनक बड़सुन्दर वर्णन पबैत छी जहिया, जे ओकरात्यागि देने छलैक ताहिपतिक प्रति, ओकर हृदय औत्सुक्यपूर्ण विचारसँ भरल छलैक। तखन बहुत शोचनीय स्थितिमे ओकरा सीतारामसँ भेट होइत छैक। भविष्यवाणीक बात से ज्ञात होइत छैक, तेँ एहि वेर स्वयं ओकरा छोड़ि कऽ चल जाइत अछि। जयन्तीनामक एक साध्वीसँ भेट होइत छैक आ ओ संन्यास लऽ लैत अछि। जखन ओ पुनि अपना पतिक गृह घुरैत अछि तखन परिवर्तित नारीक रूपमे अर्थात् सीतारामक पत्नीक अपेक्षा ओ जयन्तीक शिष्या अधिक अछि। ओ पतिक संग पत्नीक रूपमे नहि रहैत अछि। ओ पतिक भावावेशकेँ जगा तँ दैत छैक, मुदा तकर पूर्त्ति नहि करैत छैक, ओ अपनाकेँ जाग्रत रखैत अछि आ पतिक भावावेगकेँ ध्वस्त करबामे सहायता करैत छैक। ओ दू प्रकारेँ ज्योतिषक भविष्य वाणीकेँ पूरा करैत अछि, अपन एक प्रियकेँ नष्ट करैत अछि आ अपन भाय गंगारामक मृत्युक कारण बनैत अछि आ ओकरे कारणेँ सीतारामक नैतिक पतन आ राज्यध्वस्त भऽ जाइत छैक। ई कहल जा सकैत छैक जे ओकर कर्त्तव्यबोध भ्रामक छलैक। सबसँ पहिने, बंकिमचन्द्रक व्याख्याक अनुसारेँ, संन्यासक अपेक्षा सांसारिके जीवनमे धर्माचरणक अवकाश बेसी रहैत छैक। वास्तविक धर्म, कर्म, ज्ञान तथा पवित्रता सभ दृष्टिएँ मानवताक समन्वित विकासकेँ मानिए कऽ चलैत अछि। संन्यास तँ एकभगाह होइत अछि, कारण जे एकर तात्पर्य होइत छैक एक आवश्यक क्षेत्र-सामाजिक कर्त्तव्यसँ विमुख होयब। दोसर बात जे कर्त्तव्य थीक की? बंकिमचन्द्रक परम्परावादिताक सीर एहीठाम प्राप्त होइत अछि। हुनक मन्तव्य छनि-कर्त्तव्य वैह थीक जे जाही परिस्थितिमे होइ, हमरा करहिटा पड़ैत अछि। आ जेँ हेतु श्री एक पत्नी थीक, तेँ ओकर मुख्य कर्त्तव्य अपना पतिक स्वाभाविक इच्छाक पूर्ति करब थिकैक। किन्तु संन्यासोन्मुख आदर्शवादकेँ अपनयबाक कारणेँ ओ अपन एहि प्रथम कर्त्तव्यक उपेक्षा करैत अछि। ओ सोचैत अछि जे एहि आदर्शवादक कारणेँ ओकरा भीतरक स्त्रीक स्वाभाविक प्रवृत्ति छीजि चुकल छैक।

दर्शनक विचारमे ई समीचीन, असमीचीन, किछु भऽ सकैत अछि। परन्तु कला केवल दर्शनक उपदेश नहि दैत अछि, एकर प्राथमिक उद्देश्य प्राणवंत प्रतीकक सर्जना करब थिकै। की श्री उपन्यासक उत्तर भागमे एक सजीव नारी थीक अथवा एक अमूर्त्त विचार मात्र? ओ अपनहु संन्यासक पड़ल मोट पपड़ीक तरमे यदा-

कदा अपन स्त्रीसुलभ इच्छाकेँ जाग्रत पौने होयत। ओ एक बेर अपन गुरु जयन्तीक समक्ष स्वीकारो करैत अछि जे राजा सहित ओकर बारह गोट शत्रु छैक आ ओकरा बहुधा प्रतीत होइत छैक जे ओ एक पत्नी थीक, एक संन्यासिनी नहि। परन्तु ई तीव्र-आध्यात्मिक द्वन्द्वक आभास मात्र थिकैक। जयन्तीक परामर्श पर श्री अपना समस्याक समाधान पलायन कऽ तथा अपनाकेँ फराक राखि करैत अछि आ एहि प्रकारेँ कला अतिनाटकीयताक वेदीपर बलि चढ़ि जाइत अछि। हम सब एहि समाधानक तुलना रजनीमे लवंगलता-अमरनाथक प्रसंगसँ एवं शरच्चन्द्रक विख्यात उपन्यासमे राजलक्ष्मी आ श्रीकान्तक मध्य भावनाक आलोड़न-विलोड़न तथा निराशा सँ कऽ सकैत छी आ देखि सकैत छी जे एहिसँ केहन जटिलता उत्पन्न भेलैक। तर्कमे ईहो कहल जा सकैत अछि जे जँ बंकिमचन्द्र केँ एही आध्यात्मिक द्वन्द्वसँ सरोकार छलनि तँ हुनका ऐतिहासिक उपन्यासक बृहद् माङ्केर उपेक्षा कऽ देबाक चाहैत छलनि, कारण जे एहन उपन्यासमे तँ राज्यक उत्थान-पतन सैह रहैत छैक आ व्यक्तिकेँ बनबाक-बिगड़बाक चित्रण प्रासंगिके रूपमे होइत छैक। किन्तु एहिसँ उपन्यासकलाक प्रसंग एक गंभीर प्रश्न उपस्थित भऽ जाइछ यथा—की ऐतिहासिक उपन्यासमे पैघ-पैघ घटनाक अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मताक समावेश भऽ सकैत छैक? समष्टिरूपमे कहल जा सकैछ जे सीतारामे उद्वेलित करयबाला प्रसंग तथा मार्मिक वर्णन छैक, ओ केवल पात्रक गंभीर समस्या सभक चारूकात चक्कर लगबैत रहि जाइत छैक।

साहित्यिक समालोचना

उपन्यासकारक रूपमे वंकिमचन्द्र महान तँ छलाहे, एक सुप्रसिद्ध समालोचक सेहो छलाह, परन्तु सर्जनाशीलकलाकारक रूपमे जे हुनक वर्चस्विता एवं भारतीय पुनरुत्थानमे हुनक भूमिका से हुनक समीक्षकक पक्षकें थोड़-बहुत धूमिल बनौने रहलनि, । तथापि यदाकदा हुनका द्वारा देल उपदेशात्मक प्रवचनकें जँ छोड़ि देल जाय तँ हुनक समालोचना प्रशंसनीय छनि, कारण ओ सूक्ष्म आ यथार्थ, विश्लेषणात्मक तथा कल्पनाशीलतँ छनिहें, प्राचीन रीतिसँ सर्वथा मुक्त सेहो। थोड़ शब्द मे एकरा अनुभव-सिद्धताक उत्कृष्टरूप कहल जा सकैत छनि ।

बंकिमचन्द्र मूलतः भावना ओ प्रवेशमे आधुनिक छथि। यद्यपि कतोक अर्थमे ओ प्राचीनतावादी रहथि, परन्तु समालोचना ओ पुरातनवादी भारतीय पद्धतिकें नमस्कार कइए कऽ आरंभ कयलनि। हुनक कहब छलनि जे आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे संस्कृतक अलंकार अथवा काव्यक हेतु प्रयुक्त लक्षणादि कोनो अर्थ नहि रखैत अछि । मानवचरित्रक अनेकानेक पक्षकें केवल आठ अथवा नओ गोट भावघरि सीमित रखबाक ओ विरोध करैत छथि। ओ कहैत छलथनि जे पण्डित लोकनिकें प्रणाम कऽ हुनका लोकनिक अनर्गल वचनकें बिदा कऽ देबाक चाही। बंकिमचन्द्रक आरंभ-विन्दु थिकनि सौन्दर्यक प्रति मानवक नैसर्गिक प्रेम जे विभिन्न रूपमे संप्रेषित होइत अछि। ओ अपना कें रंग, आकार, गति, ध्वनि तथा सार्थक शब्दक माध्यमसँ व्यक्त कऽ सकैत अछि। ओ कलाकार, जे रंगकें माध्यम बनबैत अछि, चित्रकार बनैत अछि। सुरूपताकें अभिव्यक्त करबाक इच्छा दू प्रकारें पूर्ण भऽ पबैत छैक। एक रूपकें स्थापत्यकला कहल जाइत छैक, जाहिमे ठोस सामग्रीसँ वनस्पति तथा जीव-जन्तुक बाह्य संसारक वृहदाकार वस्तुकें नवीन संरचनात्मकता प्राप्त होइत छैक। आ जाहिमे वनस्पति तथा सचेतन प्राणीक आकारक सौन्दर्यकें प्रतिविम्बित कयल जाइत छैक से मूर्तिकला कहबैत छैक। नृत्यगतिक माध्यमसँ प्राप्त सौन्दर्य बोधकें संप्रेषित करबाक प्रयास थिकैक आ ध्वनि संगीतक आधार तथा अर्थपूर्ण शब्द कविताक आधार होइत छैक।

उपर्युक्त विश्लेषण व्यावहारिक ज्ञान तथा व्यावहारिकतासँ पूर्ण थिकैक जे

अरस्तूक पोयटिक्सक स्मरण देयबैत अछि। बंकिमचन्द्र सर्जनात्मक साहित्यक समष्टि रूपकेँ अपना ढंगे काव्यक विभिन्न रूपमे श्रेणीबद्ध करैत छथि-नाटक, महाकाव्य, स्वरतालबद्ध गेय पद आदि-आदि। परन्तु अरस्तू जाहि प्रकारेँ महाकाव्य तथा नाटकमे भेद करैत छथि, ई ओना नहि कयने छथि। दूनू विधामे क्रिया तथा संवाद रहैत छैक, किन्तु नाटकमे समस्त अभिव्यक्ति अभिनेताक संभाषण द्वारा होइत छैक, कथा-वस्तुक प्रथमता पात्रक समक्ष गौण भऽ जाइत छैक। वर्णनात्मक कविता, वृहत् महाकाव्य अथवा लघुआकारक कथाकाव्यमे क्रियेक प्रमुख महत्त्व होइत छैक आ तें कथावस्तु चरित्रकेँ आक्रान्त कऽ लैत छैक। एतय स्वर-तालबद्ध छन्द (प्रगीतक) परिभाषा बंकिमचन्द्रक सर्वथा मौलिक देन थिकनि मानवक मस्तिष्कमे रहस्यमय गंभीरता छैक। किछु एहनो भावना होइत छैक जे साहित्यमे बाह्य क्रिया द्वारा, अर्थात् महाकाव्य अथवा एहने कोनो अन्य वर्णनात्मक विधि द्वारा अभिव्यक्त नहि भऽ सकैत छैक आ ने ओकरा संवादक माध्यमसँ अभिव्यक्ति भेटि सकैत छैक जे नाटकक हेतु अनिवार्य उपादान थिकैक। एहन भावनाक झलक केवल आत्म-संभाषण द्वारा देल जा सकैत छैक आ प्रगीतक यैह वैशिष्ट्य थिकैक, यद्यपि आब एकरा वीणा आदि वाद्य उपकरणक सहायतासँ नहि गाओल जाइत छैक आ ने गाओल जयबाक आवश्यकता रहि गेलैक अछि। कारण जे वस्तुतः प्रगीत आत्माक गंभीरताकेँ तकैत छैक आ जतय ई पहुँचि सकैत अछि ओतय धरि साहित्यक कोनो अन्य रूपक पहुँच नहि भऽ सकैत छैक। आकार मे तँ ई छोट होइत अछि, किन्तु एकर प्रभाव महाकाव्य (अथवा उपन्यास) तथा नाटकसँ अधिक तीव्र होइत छैक। वैशिष्ट्यक प्रसंग हमरालोकनि महाकाव्यक वैभव, नाटकीय जटिलता अथवा अन्तरक गप्प करैत छी, किन्तु प्रगीतक प्रसंग ओकर तीव्रतेक चर्चा होइत छैक। बंकिमचन्द्र ताहूसँ आगाँ विचार कहैत छथि जे जहिना जहिना प्रगीतक सन्दर्भक्षेत्र विस्तृत होइत जयतैक-जेना हुनका समकालीन काव्यमे भेलैक-ओहिमे ओ तीव्रता नहि रहि सकतैक, उदाहरणार्थ जेना विद्यापति तथा चण्डीदास सदृश वैष्णव कविलोकनिमे छलनि, कारण हुनका लोकनिक अधिक्षेत्र सीमित छलनि। ई एक परामर्शसँ अधिक किछु नहि थीक, किन्तु ई विचारणीक अवश्य अछि। ई निरभिप्राय नहि अछि जे जखन टी०एस० इलियट आधुनिक काव्यमे-डनसँ लऽ कऽ हुनका समयधरि-विभिन्न स्रोतसँ विवरणजुटयबाक गप्प करैत छथि, तँ हुनकर तात्पर्य यैह होइत छनि जे एहन काव्यक आकर्षण ओहिमे विपरीतधर्मी तत्त्वसभक एकरूप होयबापर निर्भर रहैत छैक। टी० एस० इलियट केँ बंकिमचन्द्रक कथनक-आभास नहि छलनि तथापि ओ एहि परामर्शक संग बाहुयुद्ध करैतसन प्रतीत होइत छथि।

बंकिमचन्द्रक समालोचनामे एक हृदयग्राही गुण ई छनि जे ओ अन्तिम निष्कर्ष देबासँ बचैत छथि। जखन प्रगीत काव्य तथा जयदेव आ विद्यापति पर लिखल

हुनक निबन्धक पुनर्मुद्रण भेलनि तखन ओ एक पाद-टिप्पणीमे लिखने छथनि जे ई निबन्ध सब जाहि समय लिखल गेल छल ताहि समय धरि रवीन्द्र नाथ टैगोरक प्रमुख रचनासब, जे अधिकतर प्रगीतकाव्य छनि, प्रकाशित नहि भेल छलनि। तेँ ई संभव प्रतीत होइछ जे जँ टैगोरक रचना हुनकासमक्ष रहितनि तँ ओ ओहि अन्तरकेँ परिवर्तित कऽ दितथिन, जँ ओकरा छोड़ितथि नहि, जे ओ मध्यकालीन एवं आधुनिक प्रगीतात्मक काव्यक प्रसंग कयने छथि।

वस्तुतः ई अद्भुत बात अछि जे क्रोचेसँ पहिनहि ओ मानि लेने छलाह जे साहित्यिक वर्गीकरण अथवा विधा सभक सूत्रीकरणक सम्बन्धमे कोनो अन्तिम निश्चय नहि भऽ सकैछ। यद्यपि मिल्टनक 'कोमस', गेटेक 'फाउस्ट' आ बायरनक 'मैनफ्रेड' संभाषणक रूपमे लिखल छनि, किन्तु हुनका अनुसारेँ ओ प्रगीतात्मक अधिक आ नाट्यात्मक थोड़ छनि। ओ ईहो प्रश्न करैत छथि जे स्काटक 'द ब्राइड आफ लेमरमूर' केँ उपन्यासक बदला नाटक किएक ने कहल जाइनि?

आदर्शवाद आ यथार्थवाद अथवा नीक आ सुन्दर सदृश दर्शनमूलक भेद सब केँ सेहो ओ सर्जनात्मक रचनाक सन्दर्भमे सापेक्ष मानैत छथि। वास्तवमे ई सत्य जे पत्रकार तथा पद्य-व्यंग्यकार ईश्वर गुप्त सदृश सेहो किछु लेखक होइत छथि जे स्वकीय निकृष्ट अनुभव अथवा दूरसँ देखल असंगत वस्तुक वर्णन करैत छथि। एहन यथार्थवादीलोकनिकेँ अपन सीमित परिधिसँ बाहर देखबाक कल्पनाशीलता नहि रहैत छनि, हुनका महान कवि नहि कहल जा सकैत छनि। परन्तु हमरा-लोकनिकेँ एतय स्मरण राखय पड़त जे यथार्थवाद आ आदर्शवाद मध्य विभाजन अन्तिम नहिथिकैक। नाटककार दीनबन्धु मित्रक प्रसंगमे लिखैत ओ सर्जनशील क्षमताकेँ तीन तत्त्व मे विश्लेपित करैत छथि—अनुभव अथवा पर्यवेक्षण, सहानु-भूति तथा सर्जनात्मक कल्पना आ कहैत छथि जे एक महान लेखकमे ई तीनूतत्त्व सम्मिश्रित एकाकार भऽ जाइत छनि। संभवतः अरस्तू जखन कहने रहथि जे काव्य ओकर अनुकरण नहि करैछ जे अछि, प्रत्युत ओकर जे भऽ सकैत छलैक से एही एकरूपताकेँ ध्यानमे राखि। एहि 'भऽ सकैत छलैक' मे उत्कृष्टता आ सौन्दर्य दूनू समाहित छैक आ ओहीसँ उत्पन्न होइत छैक जे छैक।

कविमे मौलिक प्रतिभा रहैत छनि आ यैह मौलिक प्रतिभा हुनका अन्यव्यक्ति सँ पृथक करैत छनि आ रचनाशील बनबैत छनि। किन्तु शून्यमेसँ ओ किछु नहि बाहर कऽ सकैत छथि जेना बर्नार्डशॉ कहने छलाह जे गाछ हवामे नहि जनमि सकैछ। अतः ई आवश्यक छैक जे ओ स्थितिक निकटतासँ अध्ययन करथि आ अध्ययनक क्षेत्र जतेक विस्तृत होयतनि, रचना ततेक महत्तर होइत जयतनि। कारण जे सर्जनशील कलाकार अपन अनुभवेकेँ अंकित करैत छथि आ तेँ साहित्य जीवनक संग प्रबलतासँ जुटल रहैत अछि, दोसर शब्दमे, साहित्य जीवनक दर्पण थीक। वंकिमचन्द्रक मतेँ महाभारतक कृष्णक पहिल रूप एवं भागवत सम्प्रदायक

कृष्णकेर बादक रूपमे जे भिन्नता छनि से पहिने कहल जा चुकल अछि। साहित्य मे ई भिन्नता आओरो स्पष्ट भऽ जाइत अछि, यदि हमरा लोकनि, जेना बंकिमचन्द्र उल्लेख कयने छथि, वाल्मीकि द्वारा चित्रित रामचन्द्र तथा पुनः कतोक शताब्दक पछाति भवभूतिक उत्तर रामचरितमे वर्णित रामचन्द्रक तुलना करी। प्रत्येक रामचन्द्र ओहि युगक उपजा थिकाह जाहि युगमे कविद्वारा चित्रित भेलाह अछि, यद्यपि सार्वकालिकरूपमे ओ अपने युगक उपजा मानल जयताह। ई निश्चित रूपेँ मानल जा सकैछ जे बंकिमचन्द्र भवभूतिक नायकक प्रति स्पष्ट नहि छथि, किन्तु हुनक मूलतर्क ठोस छनि—प्रत्येक कलाकार अपने अनुभवसँ उपादान प्राप्त करैत अछि आ से अनुभव ओकर अपने परिवेशसँ नियन्त्रित होइत छैक। यद्यपि ओ ओहि अनुभवकेँ दोसर रूप दैत छैक, परन्तु एहीसँ ओकर परिसीमा आ किछु अंशधरि ओकर कलाक गुणवत्ता निर्धारित होइत छैक।

स्थितिक निरीक्षण मात्रसँ व्यक्ति जे किछु सूक्ष्मतासँ देखलक अछि तकर वर्णन कऽ सकवामे समर्थ होइत अछि, किन्तु एक कलाकार होयवाक हेतु एक अतिरिक्त क्षमता ओकरामे होयबाक चाहिऐक जकरा बंकिमचन्द्र सहानुभूति कहैत छथिन, किन्तु आधुनिक मनोवैज्ञानिक एकर सांकेतिक नाम तदनुभूति (एम्पैथी) देलथिन अछि। (सह अनुभूतिकेँ तत् अनुभूति)। जाहि वस्तु अथवा स्थितिक कवि निरीक्षण करैत छथि तकरामे डूबि कऽ अनुभवकरबाक चाहिऐनि तथा ओहि व्यक्ति अथवा वस्तुक भीतर प्रविष्ट भऽ जयवाक चाहिऐनि जे हुनक कलाक उपादान बनैत छनि। जँ ओ एहन नहि कऽ सकथि तँ हुनक नायक एक प्रतिमा तथा प्रतिनायक राक्षस होयतनि। शेक्सपीयरकेँ अपन अनुभव आ निरीक्षणक अन्तस्मे प्रविष्ट भऽ जयबाक क्षमता छलनि, तेँ हुनकएरियल आ कैलिबान सदृश आत्मा आ राक्षस मानवीय व्यक्तित्वसँ सम्पन्न छनि। यैह ओ क्षमता थिकैक जे एक महानलेखककेँ ने केबल यथार्थवादी, अपितु एक आदर्शवादी सेहो बना दैत छैक। एही कारणें नीलदर्पण सदृश नाटकक रचयिता दीनबन्धु मित्र अपन अग्रणी, मात्र पद्यव्यंग्यकार ईश्वरचन्द्र गुप्तसँ तुलनामे विशिष्ट भऽ जाइत छथि।

छुच्छ सहानुभूति सिमसिमायल भावुकता बनि रहि जाइत छैक। भारतीय पौराणिक कथासँ एक उदाहरण लेलजाय—जँ वाल्मीकिकेँ शोकाकुल क्रौंचक प्रति छुच्छ सहानुभूतिएटा रहितनि तँ ओ ओहि अतिसामान्य घटनाकेँ एक अमर काव्यक रूप देबाक बदला केवल कानि कलपि कऽरहि जइतथि। कवि होयबाक हेतु व्यक्तिमे कल्पनाशीलताक होयब अनिवार्य छैक आ एहन कल्पनाक विशिष्ट गुण थिकैक निस्संगता। ओकर सहानुभूति ओहि सामान्य व्यक्तिक मित्रभाव नहि थिकैक जे ओकर टाङ खीचैत रहैत छैक आ जे एहन रचना नहि कऽ सकैछ जकर एक अपन स्वतन्त्र अस्तित्व होइक। ई कविक कल्पने थिकैक जे कविकेँ अनुभव

ओ निरीक्षणक सामर्थ्य दैत छनि आ हुनक आदर्शकेँ आश्रय स्थल ओ विशेषता प्रदान करैत छनि। आ एहि प्रकारेँ जे निजी व्यक्तिगत वस्तु रहैछ से सार्वभौम रूप ग्रहण कऽ लैत अछि। एही कारणेँ वाल्मीकि अपन प्रथम पद्यक रचना कऽ आ ओहिसँ निस्संग भेल ओहि पर विचार करैत रहलाह आ सहसा बाजि उठलाह ई हमर सहानुभूति हमरा कोन शिखर पर आनि देलक ? बंकिमचन्द्र समीचीने कहलथिन अछि जे वास्तविक कवि सहानुभूतिकेँ कल्पनाक अधीन राखि सकैत अछि।

यद्यपि बंकिमचन्द्रक साहित्यिक समालोचना सिद्धान्तकारक प्रति उपहासात्मक कटाक्षसँ आरम्भ होइत छनि, किन्तु ओ स्वयं विस्तृत सिद्धान्त सबकेँ सूत्रबद्ध कयने छथि जे सब उपयोगी एवं विचारोत्तेजक छनि आ एहि प्रकारेँ दर्शौंलनि अछि जे एक व्यावहारिक एवं प्रयोगसिद्ध आलोचक सेहो जकर दृष्टि-केवल सर्जनशीलताक ठोस पक्ष पर रहैत छैक, विनु सार्वभौम अनुकूलताक आदर्श साधारणीकरण कयने किछु नहि कऽ सकैत अछि। आ एहि प्रकारेँ ओ विभिन्न कृति तथा पात्रसभक तुलना कऽ जेना शकुन्तलाक तुलना 'डेस्डीमोना'आ 'मीरांडा' क संग, शेक्सपीयरक संग भवभूतिक अथवा जयदेवक वर्ड्सवर्थक संग कऽ हमरा लोकनिक आलोचक स्वरूपकेँ विस्तृत कयलनि आ तुलनात्मक आलोचनाक आधार स्थिर कयलनि जे आब तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन नामेँ अभिहित होइत अछि। जे सिद्धान्त ओ निरूपित कयलनि से पूर्व अरस्तूक स्मरण करबैत अछि तथा बेनेडिटो क्रोचेसँ आगाँ पहुँचिगेल अछि आ जेनापहिने कहल जा चुकल अछि जे ओ आधुनिको समाजवादी आलोचनाक पूर्वज्ञान रखनिहार छथि जे आलोचना-पद्धति सामाजिक-आर्थिक शक्तिक उत्पादित साहित्यिक निष्पक्षभावेँ विचार करैत अछि तथा सामयिक प्रवृत्तिकेँ स्वीकृति दैत अछि। संभवतः बंकिमचन्द्र स्वीकारवादी दर्शनसँ एतय प्रभावित छलाह।

बंकिमचन्द्रक व्यावहारिक समीक्षा कखनहु विस्तृत आ विश्लेषणात्मक छनि आ कखनहु सारगर्भित आ संक्षिप्त, किन्तु सदा जेना सुरूचिसम्पन्न प्रौढ़ निर्णायक सँ आधिकारिक घोषणाक आशा कयल जाइछ तेहने सौष्ठवपूर्ण, स्पष्ट आ न्याय्य छनि। यदि ओ कोनो पूर्वाग्रह-ग्रस्तो होथि, तथापि हुनक अन्तर्दृष्टि अतिसूक्ष्म होइत छनि। ओ लोकप्रियकवि जयदेवक तुलना वास्तविक अर्थमे रचनाशील कलाकार विद्यापतिक संग कऽ ओकरा तराशि देबाक प्रयत्न कयने छथि। हुनका दृष्टिमे जयदेव केवल एक मधुर, कामवासनाकेँ उत्तेजित कयनिहार कवि रहथि। हुनक विषयासक्तिक कारण बंकिमचन्द्रकेँ हुनक बाह्य प्रकृतिक अतिरिक्त अनुराग प्रतीत भेलनि आ एहीकारणेँ ओ हुनक तुलनावर्ड्सवर्थसँ कयलथिन, परन्तु वर्ड्सवर्थ ओकर सर्वथा विपरीत छथि, कारण जे ओ सतत आत्माक मर्मस्थलकेँ देखनिहार छथि। प्रकृतिक एहन महान् कविपर एहन टिप्पणीकरब

बहुतो अंश मे न्याय्य नहि छनि, कारण जे वर्ड्सवर्थ स्वयं 'द एजुकेशनआफ नेचर' एवं 'रूथ' मे दर्शौने छथि जे प्रकृतिक प्रभाव मनुष्यक स्वभावमे अन्तर अयलापर कोना परिवर्तित होइत रहैत छैक। कपालकुंडलाक रचयिताम सेहो ई वस्तु अशोभनीय रूपें दृष्टिगत होइत अछि, जाहि कपालकुण्डलाक काम-प्रवृत्ति प्रकृतिक अंचलमे प्रारंभिक शिक्षा भेटलाक कारणें कुंठित भऽजाइत छैक अथवा मनोरमाक अशान्त आत्माकें रातुक अन्धकार तथा एकान्त सरोवरक शीतलजलमे शान्ति प्राप्त होइत छैक। परन्तु ई स्मर्तव्यथीक, एहि हेतु जे वर्ड्स-वर्थ क कविताक आध्यात्मिक आधारकें एहिसँ वल भेटैत छनि जे प्रथम दृष्टि-निक्षेपमे इन्द्रियजनित प्रतीत होइत अछि।

जेना पहिने संकेत कयल जा चुकल अछि जे बंकिमचन्द्र सौन्दर्यशास्त्रक सैद्धान्तिक व्याख्याकारक अपेक्षा व्यावहारिक आ निष्पक्ष समीक्षक अधिक रहथि। ओ काव्यशास्त्रक आधारभूत समस्या तथा काव्यक परिभाषा दिस कहिओ उन्मुख नहि होथि, यद्यपि अरस्तू तथा क्रोचेक वहुत निकट छलाह। हुनक विचार चलैत-चलैत एक उन्मुक्त सुझाव मात्र छलनि, जेना सुझावकें होयवाक चाही। ओहि विचारकें अन्तिम सिद्धान्तक रूप देबाक हेतु सहमत नहि रहैत छलाह। हुनक किछु दूरगामी अर्थसँ युक्त स्फुलिंग सदृश टिप्पणी पत्रिका सबमे पुस्तक-समीक्षाक रूपें लिखल छनि जे सव दीर्घजीवी नहि होइत अछि। उदाहरणार्थ एहने कोनो समीक्षामे ओ प्रहसनक स्वभावक अनुशीलन करैत परामर्श देलनि अछि जे भ्रमक अपेक्षा अशुद्धिकें हास्यक विपय होयबाक चाहिऐक। अरस्तूक पोयटिक्ससँ क्षणिक स्वांगक ई विवेचना बहुत दूर पड़ि गेल छनि। तथापि ई विशेपरूपें द्रष्टव्य थीक जे अरस्तू निर्णयक भ्रमकें दुःखान्त रचनासँ जोड़ैत छलाह, सुखान्त रचनासँ नहि।

जेंहन आशा कयल जाइछ, बंकिमचन्द्र ओहि समय अपन चरमपर पहुँचि जाइत छथि जखन चलैत-चलैत देल गेल टिप्पणीक माध्यमसँ हमरालोकनिकें महत्तम कवि शेक्सपीयर दिस लऽ चलैत छथि जनिकर हुनक रचनात्मकतापर सबसँ अधिक गंभीरतम प्रभाव पड़ल छनि। एहन टिप्पणीसबमे भवभूतिक नाटक उत्तर राम-चरित नाटकक विश्लेपण करैत काल देल गेल टिप्पणी उत्कृष्टतम छनि। सीता अपन सतीत्वक दोसरवेर प्रमाण देबासँ अस्वीकार करैत धरतीमाताक गर्भमे समा जाइत छथि आ उद्विग्न राम एक्सरे भार ऊघि रहल छथि। हुनका वार्त्ता भेटैत छनि जे धर्मशास्त्रक आज्ञाक उल्लंघन कऽ ब्राह्मण जकाँ निम्नजातिक एकशूद्र तपस्या कऽ रहल अछि जकर फलस्वरूप हुनका राज्यमे भयंकर महामारी पसरि रहल छनि। रामचन्द्र अपन शस्त्र उठौलनि आ पंचवटी दिस-जतय अपन वनवासक समय ओ सीताक संग प्रसन्नतापूर्वक बितौने रहथि-ओहिपापीक अन्वेषणमे चलि देलनि। मूल कथासँ हटि कऽ भवभूति एतय सीताकें रामचन्द्रसँ

भेट करयबाक हेतु वनदिस घूरि जाय दैत छथिन, यद्यपि सीता एक आत्माक रूपमे अदृश्य रहैत छथि। रामचन्द्रक अयवाक उद्देश्य जानि कऽ भवभूति सीतासँ कहबैत छथिन-भाग्यवश ई राजा (जे अपन प्रजाकेँ सन्तुष्ट रखबाक हेतु हुनका निर्वासित कयने छलथिन) एखन धरि अपन राजकीय कर्त्तव्यक पालन करबामे कोनहु प्रकारेँ शिथिल नहि भेलाह अछि। एहि सारगर्भित वाक्यक उद्धरण दैत बंकिमचन्द्र टिप्पणी करैतछथिन-साहित्यिक उत्कृष्टताक दृष्टिएँ एहि प्रसंगक तुलना कोनहु भाषाक नाटकक सम्पूर्ण सौन्दर्यक संग कयल जा सकैत अछि। एहन वाक्य केवल शेक्सपीयरक रचनामे भेटैत अछि। ई टिप्पणी दर्शबैत अछि जे बंकिमचन्द्रकेँ शेक्सपीयरक केहन गंभीर ज्ञान छलनि। भवभूतिक नाट्य प्रतिभाक प्रति ई एक अत्युत्तम उद्गार थिकनि, किन्तु संगहि एहिसँ बंकिमचन्द्रक समालोचनाक गहनता तथा प्रवेशक अनुमान सेहो होइत अछि।

विविध रचना

वंकिमचंद्र हमरालोकविक प्रथम उपन्यासकार रहथि आ कतोक समालोचकक मतानुसार रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं शरच्चन्द्र चटर्जी सदृश साहित्य महारथीक आगमनक अछैतों एखनहु ओ महत्तम छथिहै। परन्तु ओ एक एहन बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न व्यवित छलाह जे अपन जादूक छड़ी औपन्यासिक कृतिक अतिरिक्त गद्य साहित्यक अन्यान्यो विधा पर घुमौलनि। हुनक प्रारंभकालिक साहित्यिक प्रयासक उल्लेख परिचायक अध्यायमें कयल जा चुकल अछि, तेँ पुनः एतय ओहि सबपर विस्तृत टिप्पणी करब अनुपयुक्त होयत। हुनक उपन्याससँ भिन्न, पछातिकालक गद्यरचना असाधारण रूपेँ सशवत छनि आ कमला कान्तक दफ्तर, जे हुनका अपनहु बड़प्रिय छलनि, मौलिकता तथा कलात्मक कुशलताक दृष्टिएँ हुनक सर्वोत्कृष्ट उपन्यासक समकक्षमे राखल जा अकैत छनि। पछातिकालक हुनक अधिकांश रचना 1872 मे हुनके द्वारा प्रारम्भकयल बंगदर्शन नामक पत्रिकामे प्रकाशित करबाक हेतु लिखल गेल छलनि। ओ चारि वर्षधरि एकर सम्पादन कयलनि आ 1877 मे जखन हुनक भायक सम्पादकत्वमे एकर पुनः प्रकाशन आरंभ भेलैक तखन यैह ओकर मुख्य आधार रहथिन। 1872 सँ लिखल हुनक प्रायः सब रचना प्रथमतः बंगदर्शनेमे प्रकाशित होइत छलनि, जे पत्रिका बंगला पत्रकारितामे एक नवीन आदर्श स्थापित कयने छल, तकर बाद 'प्रचार' तथा 'नवजीवन' नामक पत्रिकामे। बंगदर्शनमे, जकरा संग मुख्यतः हुनकर नाम जोड़ल जाइत छनि, सबप्रकारक मानसिकओ बौद्धिक भोज्य सामग्री तथा उपन्यास आ कथा, गंभीर आ हास्य रसात्मक निवन्ध आ एहि रूपक साहित्यिक समीक्षा, छपैत छलैक। स्मर्तव्य जे बंकिमचन्द्र एहिमे केवल अपने रचना नहि छपबैत छलाह, अपितु ईहो चेष्टा रहैत छलनि जे उत्कृष्ट लेखनक तथा नीक व्यवहारक स्तर सेहो निर्धारित हो। एक समयकहेतु ओ विद्धत्समाजक प्रामाणिक अधिकारी मानल जाइत रहलाह। हुनक बहुतो सामयिक निबन्ध बकवादी आ व्यंग्यात्मक होइत छलनि, किन्तु यद्यपि ओ क्षणिक पत्रकारिताक हेतु प्रस्तुत करैत छलाह, तथापि समयक कसौटी पर समीचीने सिद्ध भेलनि अछि। दीर्घजीवी पत्रकारितों तँ साहित्यक एक अंगे थीक।

बंकिमचन्द्रक उपन्यास सबमे हास्यक फुहारा प्रसंगवशे देखल जाइत छनि आ ताहिसबमे बहुतोक अन्त सुखद सैह छनि, किन्तु 'इन्दिरा' ताहिसबमे स्पष्ट रूपसँ हास्य प्रधान छनि। हुनक विविध निबन्ध सबमे (पछाति 'लोक-रहस्य नामे प्रकाशित) हुनक हास्यमूलक प्रतिभा उन्मुक्त भावेँ अभिव्यक्ति पबैत छनि। हुनक हास्य वेस चोखगर व्यंग्य छनि। तेँ साहित्यिक विशुद्धतापर जोर देनिहार एकरा-सबकेँ प्रत्युत्पन्नमतित्वक नमूना कहि सकैत छथि, कारण जे ओ सहानुभूतिक भावनाक अपेक्षा बिशिष्टताक भावनासँ उत्पन्न होइत छैक आ अपन अधिकतर शक्ति ओ शाब्दिक चतुरतासँ प्राप्त करैत अछि। किन्तु एकरा हुनक श्रेष्ठताकेँ अपमानित करबाक रूपमे नहि लेबाक चाही, कारण जे शाब्दिक चातुरी सेहो कल्पनाशवित, भावना तथा खिस्सा पिहानी द्वारा उद्भासित होइत छैक। उदाहरण स्वरूप, ओ अपन किछु निबन्धमे मानवतापर ओहिना दृष्टि निक्षेपकरैत छथि जेना कोनो सिंह अपन अज्ञानता तथा निःसंगताक स्थितिमे कऽसकैत अछि। ओ आन निबन्धमे कल्पना करैत छथि जे महाभारतमे आधुनिक बंगालीबाबू सम्बन्धी आकाशवाणी भेलनि अछि तथा ओहि दुर्बल बाबूकेँ ईश्वरक एक अवतारक श्रेणीमे मानि लेल गेलनि अछि ।ई थिकनि हुनक निन्दात्मक व्यंग्य, पुनः जाहि द्वारा ओ भारतीय समाज तथा साहित्यक प्रसंग अंगरेज सभक उद्दण्डतापूर्ण अज्ञानक अद्भूत रूपेँ उपहास कयलनि अछि। एहि सबमेसँ अधिकतर हुनक शब्द-चित्रमे कल्पनाक उड़ानक उत्कृष्ट कारण व्यंग्य भऽ जाइत छनि, हँऽएहि व्यंग्यमे रेबेलक ओ छबि नहि छनि, ई स्विफ्टक अधिक स्मरण करबैत अछि।

बंकिमचन्द्रक प्रतिभाक सम्पूर्ण कोरक बूननि कमलाकान्तक दफ्तरमे एकात्मरूप भेल छनि। राजनीतिक व्यंग्यात्मक निबन्ध सभक एहि संग्रहकेँ आधा हास्य भावेँ आ आधा गंभीरतासँ ओ स्वयं अपन सर्वोत्तम कृति मानैत छलाह। एतय हमरालोकनि काल्पनिक उड़ान, व्यंग्य, ज्ञान, बुद्धि-विलास सब ज्वलन्त आदर्शवाद द्वारा सुपुष्ट भेल पबैत छी। कमलाकान्तक दफ्तरक उत्सक प्रसंग समीक्षक चिन्तित रहैत अयलाह अछि। कमलाकान्त हफिमची अछि आ ई निबन्ध सब वैयक्तिक स्वप्न थिकैक। किछु पाठक अनुमान कयलनि अछि जे बंकिमचन्द्रकेँ डे क्विंसींक रचना कनफेशन्स आफ एन ओपियम ईटर मे एकर आभास भेटल होयतनि अथवा किछु अन्य पाठकक मत छनि जे ईहो भऽ सकैछ जे पिकनिक पेपर्स मे मैजिस्ट्रेटक कोर्टक दृश्य एकर मूलस्रोत रहल होइनि। एहि दूनू उदाहरण मे समता ततेक सूक्ष्म छैक जे एहि सबसँ नीक यैह होयत जे एहि साहित्यिक उत्तराधिकारक परामर्शकेँ छोड़ि दी आ कमलाकान्तकेँ एक मौलिक सृष्टि मानि ली। अन्यत्र कोनो साहित्यमे एहन काल्पनिकता आ यथार्थ, प्रगीतात्मक कल्पना तथा मर्मभेदी व्यंग्य, वैभवपूर्ण निःसंगता तथा तीव्रभावनाक सम्मिश्रण भेटब दुर्लभ अछि आ कमलाकान्त अपन दरिद्रता तथा ज्ञान, हफीमक दुरभ्यास आ दूधक प्रति अनु-

रागक कारणों बड़ प्रिय व्यक्तिक रूपमे समक्ष अबैत अछि ।

सामाजिक चिन्तन एवं दर्शनकें बंकिमचन्द्रक जे देन छनि ताहि प्रसंगपूर्वहि कहल गेल अछि आ स्थानाभाव आओरो विस्तृत चर्चा करबाक अनुमति नहि दैत अछि । हुनक विज्ञान सम्बन्धी निबन्ध सब एहि दृष्टिएँ विलक्षण छनि जे ओ लोक-प्रियरूपमे विज्ञानक प्रस्तुतीकरणक मार्ग देखबैत छनि । परन्तुसाहित्यक रूपमे ओ स्थायी नहि भेलनि, संभवत: विज्ञानक सत्य ओहन स्मरणीय नहि होइछ जेहन साहित्य ओ कलाक । एक अथवा दू बेर पाठ्य-ग्रन्थक क्षेत्रमे सेहो ओ आक्रमण कयलनि, मुदा ओहि रचना सभक विवेचना वा समीक्षाक आवश्यकता प्रतीत नहि होइछ । एक निर्णायक टिप्पणी हुनक अनेक समालोचनात्मक रचनाक प्रसंग अवश्य कयल जा सकैत छनि, विशेषत: हुनकामे प्रतिविम्बित समालोचनात्मक-स्थितिक प्रसंग बंकिमचन्द्र साहित्यमे कोनो एक आदर्श नहि स्थापित कयलनि । हुनका विचारें साहित्यक समक्ष दुइए गोट उद्देश्य होयबाक चाहिऐक-सौन्दर्यक सृष्टि तथा मानवकल्याण । परन्तु प्रश्न उठैत अछि जे की जे सुन्दर अछि से कल्याणकारी नहि अछि ? ओ साहित्यमे दू प्रकारक भेद कयने छथि ओ साहित्य जे अन्तरमे निहित आवेग तथा उच्च आकांक्षाकें प्रकट करैत अछि तथा ओ साहित्य जेहन ईश्वर चन्द्रगुप्तक जे एहि धरातलक गप्प करैत अछि, जे ओतवे देखैत अछि, ओतवे व्यक्त करैत अछि आ ओतवे उद्घाटित करैत अछि जे एहि धरातल पर विद्यमान अछि । कवि जयदेव जकाँ विषयी तथा वर्डसूवर्थजकाँ आध्यात्मिक भऽ सकैत छथि । मुदा दूनू अतित्याज्य होयबाक चाही । एकसिद्धान्तकारक रूपमे ओ एहि दून विचारक मध्य समन्वय स्थापित करबाक चेष्टा नहि कयलनि आ हमरालोकनिकें हुनक अपनहु रचनामे नैतिक शिक्षक तथा सौन्दर्य स्रष्टा, दूनूक उपस्थितिक आभास होइत रहैत अछि । ई दूनू उद्देश्य कृष्णकान्तक इच्छापत्र, आनन्दमठ तथा मनोरमाक रूपमे मृणालिनीमे एकीकृत भेल छनि । कपालकुण्डमामे एहन कलात्मकता भेटैछ जे सत्य आ उत्तमताक द्वन्द्वसँ अभिव्यंजित भेल अछि । यैह वस्तु विषवृक्ष आ रजनी ताहूमे देखबामे अबैछ, मुदा कखनहु-कखनहु ई दूनू फराकोफराक देखि पड़ैछ । राजसिंह, देवी चौधुरानी तथा सीतारामे सर्जनात्मक कल्पना कतहु-कतहु प्रचारात्मक आवेगमे दबल सन बुझाइछ । 'आस्कर वाइल्ड' कहने छलथिन जे सम्पूर्ण कला अनैतिक थीक, परन्तु ईहो ओतवे समीचीन थीक जे समस्त सर्जनात्मक कला नैतिक थीक, कारण जे मानवीय व्यवहारकें सौन्दर्यबोधसँ युक्त करबाक संगहि हमरा सभक सहानुभूतिकें विस्तृत करैत अछि आ मानसिक क्षितिज कें बढ़बैत अछि । एहि अर्थ मे जखन कखनहु सौन्दर्यक सृष्टि कयलनि तखन एहि वृहत् नैतिकता शिक्षा सेहो देलनि । अत: आरंभिक शैवालिनी पछातिक शैवालिनी सँ अधिक नैतिक अछि, सूर्यमुखी अथवा आयशाक अपेक्षा मनोरमा अधिक नैतिकता सिखबैत अछिआ लवंगलताक दुर्बलता ओकरा शक्तिमें थोड़ आनन्ददायक आ सामाजिक दृष्टिएँ थोड़ मूल्यवान नहि प्रतीत होइछ ।

वन्देमातरम्
(1876-1976)

'वन्देमातरम्' बंकिमचन्द्र द्वारा संस्कृत-बंगला मिश्रित भाषामे रचल गेल अछि जे भारतीय संस्कृतिक अनुपम निधि थीक। ओना देशभक्तिपूर्ण गीत तथा राष्ट्रीय भजन प्रथमतः प्रादेशिक आकर्षण रखैत अछि, तेँ कोनो एक देशक राष्ट्रियगानक तुलना कोनो दोसर देशक राष्ट्रिय गानसँ करब कठिन छैक, कारण एहि प्रकारक समस्तगान स्थानीय भूगोल, इतिहास एवं परम्परासँ सम्बद्ध भेल करैत छैक। तथापि ई दृढ़तापूर्वक कहल जा सकैछ जे एहन राष्ट्रिय गान बहुत थोड़ होयत जे वन्देमातरम् जकाँ जनमानसक अन्तस्तलकेँ एतेक गहनता आ व्यापकतासँ स्पर्श कयने हो। एही प्रकारेँ बहुत थोड़े एहन नारा होयत जे एतेक अधिक लोककेँ प्रेरित कयने हो।

ई गीत सर्वप्रथम आनन्दमठ नामक उपन्यासमे प्रकाशमे आयल जे उपन्यास पहिने बंगदर्शनमे धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित भेल आ 1882 मे पुस्तकक आकार ग्रहण कयलक। वन्देमातरम् केर उपन्यासक आत्मा एवं कथावस्तुक संग सर्वथा सामंजस्य छैक तथा ई मुख्यपात्रक ठोरपर स्वाभाविक रूपेँ अबैत रहैछ। ई सुनि पाठक आश्चर्यचकित होइत रहैछ जे एकर रचना प्रेरणाक कोनो क्षणमे आकस्मिक रूपेँ 1875-76 मे ओहि युगान्तकारी रचना, अर्थात आनन्दमठक रचनासँ किछु वर्ष पहिने भेल छलैक, जकर सन्देश ई संक्षेपमे प्रस्तुत करैत अछि। तथापि जेना भारतीय गणतन्त्रक प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद कोनो अन्य सन्दर्भमे बाजल छलाह-बंगालसँ बाहरक हजारक हजार लोक एहि गीतकेँ एकमंचसँ दोसर मंच पर गबैत रहल तथा ओ कोटिक कोटि लोक वन्देमातरम् नाराक जयजयकार करैत रहल-ओहि कथावस्तुक प्रसंग किच्छुटा नहि जनैत छल जकर ई अंग छल।

1882 मे जखन बंकिमचन्द्र अपन आनन्द मठ प्रकाशित कयलनि, ओहि समयमे सर्वत्र राजनीतिक उत्तेजना पसरल छलैक आ यूरोपियन तथा स्थानीय जनताक मध्य श्रेष्ठतर न्यायक माङक संग स्थानीय व्यक्तिकेँ प्रशासनमे अधिकसँ अधिक व्यक्तिक सन्निवेशक माङसेहो छलैक। 1885 मे भारतीय राष्ट्रिय कांग्रेसक स्थापनासँ लोकक इच्छाकेँ अभिव्यक्ति भेटलैक, जाहि संस्थाकेँ भारतक भविष्यक

निर्माणमे प्रभावशाली भूमिकाक निर्वाह करबाक छलैक। प्रत्येक श्रेष्ठ कलाकृति अपन स्वरूप ओ आकारमे परिसीमित रहैछ आ ओकरा एके दृष्टिमे समेटल जा सकैछ। परन्तु एहिमे सार्वभौम तत्त्व सेहो प्रस्तुत करबाक योग्यता होयबाक चाहिऐक। एहि अर्थमे भने संरचनात्मक अन्वितिक हेतु आनन्दमठ अपनाकेँ स्थानीय विद्रोहे धरि सीमित रखैत हो, परन्तु ई ओहि सम्पूर्ण आधुनिक भारतक स्वतन्त्रता संग्रामक प्रतीक सेहो बनैत अछि जाहि भारतमे अनेक पैघ-पैघ राज्य छलैक तथा जतय कतोक जातिक लोक निवास करैछ। आ ई गान एक कंठसँ दोसर कंठ होइत दसे वर्षक अभ्यन्तर राष्ट्र गानक रूपमे प्रतिष्ठापित भऽगेल। भारतक सर्वाग्रगण्य कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर 1896 क कांग्रेस अधिवेशनमे एकरा गौने छलाह।[1]

अग्रिम दशकक अन्तमे लार्डकर्जन द्वारा बंगालक विभाजन भेलैक जकर कुटिल उद्देश्य राजनीतिक विद्रोहकेँ दबायब छलैक, परन्तु तकर विपरीते प्रभाव भेलैक अर्थात् विद्रोहमे आरो जीवनीशक्ति बढ़ि गेलैक संगहि विभाजनविरोधी आन्दोलन आरम्भ भऽ गेलैक जे बहुत शीघ्रे पूर्ण-स्वराज्यक हेतु विकट संघर्षक रूप ग्रहण करैत गेलैक। एकर पृष्ठभूमिमे स्वदेशी एवं बहिष्कार आन्दोलन सेहो छलैक। ई आन्दोलन, एकर एक वाक्पटु प्रवक्ताक शब्दमे, सम्पूर्ण देशमे एक छोट सन गामसँ लऽ एक नगरसँ दोसर नगर, एक प्रान्तसँ दोसर प्रान्त धरि पसरैत गेलैक आ वन्देमातरम् ओहि देशभक्त आ हुतात्मा लोकनिक उद्घोष बनि गेलनि जे लोकनि ओहि महान कार्यमे अपन बलि दऽ देलनि। ओलोकनि एकोक्षण बिनु कोनो तारतम्य कयने मन्त्रमुग्धजकाँ वन्देमातरम् केर उच्चार करैत फाँसी पर चढ़ि जाइत गेलाह। श्री अरविन्द, जे स्वयं एक कवि छलाह, ओहि आन्दोलनक अग्रगामी लोकनिमे प्रमुख रहथि जे अपन प्रमुख दैनिकपत्रक नाम 'वन्देमातरम्' रखलनि, जाहिमे ओ 1907 मे लिखने रहथि : एकराष्ट्र अथवा मानवताकेँ एक महान तथा प्राणदायक सन्देश देबाक छलनि, ईश्वर ओहि मुखक चयन कऽ लेलनि जाहि द्वारा सन्देशक ई शब्द आकार ग्रहण करत। एक महत्त्वपूर्ण दृष्टिकेँ प्रकट करबाक छलनि आ एहि हेतु ओ शक्तिमान पहिने ओकर आँखि फोलथिन(वाङ्मय, ग्रंथ 17, पृ० 344)।

ई महान गीत उद्घोषक संग अपन आरंभ होइते राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्वतन्त्रताक हेतु एक आन्दोलनकेँ प्रेरित कयलक आ समस्त संसार

1. हेमचन्द्र वन्द्योपाध्यायक कविता राखीवन्धन मे एक सन्दर्भक आधार पर कहल गेलैक अछि जे सर्वप्रथम ई 1986 क अधिवेशन मे गाओल गेल। परन्तु ई मत सुप्रमाणितनहि अछि प्रत्युत हेमचन्द्र स्वयं 1986 कांग्रेस अधिवेशनक सन्दर्भ दैत दृष्टिगोचर होइत छथि। हुनक संकलित रचना राखी वन्धन महारानी विक्टोरियाक जयन्ती उत्सव 1887 सँ सम्बद्ध विजयगीत तथा बंकिमचन्द्रक देहावसान 1894 सँ सम्बद्ध शोकगीतक बाद अबैत छनि।

देखलक जे एक प्रभावशाली राष्ट्र अपन अजेय बन्धनकेँ झकझोरि, सूतलसँ उठल जकाँ अपनाकेँ एक दृढ़ व्यक्तिक रूपमे जगा कऽ ठाढ़ कऽ देलक। ई आश्चर्यक बात नहि जे एहिसँ शासक वर्ग सहसा भयकम्पित भऽ गेल आ वन्देमारम् भारतीय प्रायद्वीपक जानबुलक दोसर द्वीपक हेतु साँढ़केँ भड़कौनिहार लाल वस्त्रक रूपमे परिवर्तित भऽ गेल। ई नारा राजद्रोहक कसौटीवनि गेल आ यद्यपि आनन्दमठ प्रतिबन्धित होयबासँ बाँचि गेल, जनता द्वारा गाओल जाइत वन्देमातरम् पर प्रतिवन्ध लागि गेलैक। 1905 मे एक अद्भुत घटना घटित भेलैक जाहिसँ ताहि दिनुक विस्फोटक स्थितिक नीकजकाँ विश्लेषण कयल जा सकैछ। गोपालकृष्ण गोखले वाराणसीमे भारतीय राष्ट्रिय कांग्रेसक अध्यक्षता कऽ रहल छलाह आ उपस्थित व्यक्ति लोकनिमे टैगोरक भतीजी सुप्रसिद्ध गायिका सरला देवी सेहो छलीह। हुनक विवाह किछुए दिन पूर्व निर्भय राष्ट्रवादी रामभुज दत्त चौधुरीक संग भेल छलनि। हुनका देखैत देरी उपस्थित समुदाय हल्ला करय लागल जे 'वन्देमातरम् गाओल जाय। आयोजक लोकनिकेँ असमंजस भेलनि। हुनका लोकनिकेँ भय भेलनि जे एहिसँ पुलिसकेँ सभाकेँ भंग करबाक अवसर भेटि जयतैक। एहि आशंकासँ ग्रस्त अध्यक्ष सरला देवीकेँ एक पूर्जी लिखि पठौलथिन ई कहैत जे जनताकेँ संतुष्ट करबाक हेतु किछु पंक्ति गावि देथुन, अन्यथा ओ नियन्त्रणमे नहि रहि सकत। परन्तु जहिना सरलादेवी प्रथम पंक्ति गौलनि, उत्साहसँ भरल श्रोता-वर्ग सम्पूर्ण शक्ति लगाय हुनकजयध्वनि करयलागल आ अध्यक्ष द्वारा मना कयलो उत्तर हुनका सम्पूर्ण गीत गावय पड़लनि। परन्तु की विलक्षणता जे पुलिसकेँ बीचमे हस्तक्षेप करबाक साहस नहि भेलैक।

सरकारक शत्रुतामे कोनो प्रकारक शैथिल्य नहि अयलैक, मुदा वन्देमातरम् प्रशासकीय उत्पीड़नक अछैतो, प्रत्युत किछु किछु ओहू कारणेँ, अपन प्रेरक प्रभाव दीतहि रहल। तखन स्वाभाविक रूपेँ एक परिवर्तन आयल जे अप्रत्याशितो नहि छल। प्रथम विश्वयुद्धक समाप्ति अपनासंग सम्पूर्ण विश्वक प्रसंग आ विशेष रूपेँ भारतीय स्थितिक सन्दर्भमे एक नवीन युग लेने आयल। जालियाँवाला बागमे भेल नरसंहारक पछाति, जाहिसँ साम्राज्यवादक वास्तविक रूप उद्घाटित भेल, एवं असहयोग आन्दोलनकेँ प्रारंभ भेलाक पछाति, जे ब्रिटिश सरकारकेँ पिशाचवत् दोषीक रूपमे स्थापित कयलक, वन्देमातरम् सबल रूपमे समक्ष आयल। प्रत्युत नौकरशाही अनुभव कलयक जे आब पर्याप्त भऽ गेल, एहि गीत अथवा नाराक संग कोनो हस्तक्षेप करब निरर्थक होयत। आ एहीकारणेँ प्रतिबंध स्वयमेव विलुप्त जकाँ भऽ गेल।

यदि वन्देमातरम् नौकरशाहीक बाधा पर कोनहुना विजय पाबिओ गेल तैयो आन्तरिक षड्यन्त्रसँ बाँचब कठिन भऽगेलैक, कारण जे ओ षड्यन्त्र सेहो साम्राज्य-वादी कूटनीतिक एक कनोजड़ि छलैक। जखन कर्जनक स्थान पर अपेक्षाकृत

अल्पमहत्त्वक एक सामन्त लार्डमिन्टो भारतक बड़ालाट नियुक्त कयल गेल तँ कर्जन तीव्र निराशाक स्वर मे चिचिया उठल—हमराबाद मिन्टो ? परन्तु जतय तड़क-भड़क रखनिहार कर्जन विफल रहल ततय विनम्र आचार-व्यवहार रखनिहार मिन्टो सफल भेल। मोर्ले सहयोगसँ ओ किछु नरम भारतीय राजनीतिज्ञकेँ जितबाक हेतु किछु सुधार लागू कयलक अथवा केवल सुधारक ढोंग कयलक, परन्तु संगहि हिन्दू आ मुसलमानक हेतु फराक-फराक मताधिकार व्यवस्था कऽ ओहि दूनूक बीच पच्चर ठोकि देलक। यद्यपि दूनू बंगालक पछाति एकीकरण भऽ गेलैक, परन्तु परस्परमे फोड़ू आ राजकरू वाला नीतिक अन्तिम परिणाम ई भेल जे धर्मक आधार पर संघर्ष होअय लागल जाहि मे वन्देमातरम् केँ लक्ष्य बना ओल गेल। जखन चारिम दशकक उत्तरार्द्धमे कांग्रेसी मंत्रिमण्डल एकरा प्रान्त सबमे राष्ट्रगानक रूपमे स्वीकार कयलक तँ प्रबल विरोध कयल गेल जे एहिमे हिन्दू देवत्ववादक गन्ध अबैत अछि। एहि कटु वाद-विवादक इतिहास बहुतोठाम कहल गेल अछि, परन्तु राजेन्द्र प्रसादक 'इण्डिया डिवाइडेड' (1945) सँ अधिक तटस्थ रूपेँ कतहु नहि, जे ओहि अवधिमे किछु समयक हेतु काँग्रेसक सभापति रहथि। परिणाम ई भेल जे 1937 मे कांग्रेस कार्यकारिणी समिति वन्देमातरम् केँ राष्ट्रगानक रूपमे रहय तँ देलक, मुदा अपूर्णरूपमे, केवल आदिसँ दू पद सार्वजनिक सभामे गाओल जयवाक योग्य मानल गेल। परन्तु दसेवर्षक अभ्यन्तर बंगालकेँ विभाजित करवाक योजना पुनर्जीवित भऽ उठल आ विभाजन एक निर्णीत तथ्य भऽ गेल। सर्वोच्च व्यंग्यकार जे इतिहास से अपन व्यंग्यवाण छोड़बासँ बाज नहि आयल। 1947 मे जे नवीन विभाजन भेल, ओकर संगहि ब्रिटिश साम्राज्यक सेहो अन्त भऽ गेलैक जकरा 1905 में लार्ड कर्जन बंगाल विभाजन द्वारा सुस्थिर रखबाक प्रयास कयने छल।

स्वाधीन भारत टैगोरक जन-गण-मनकेँ स्वर-तालक सुविधा तथा अंशतः साम्प्रदायिक पक्षपाती सभक मुहबन्द रखबाक हेतु सरकारी स्तरपर राष्ट्रगान रूपमे स्वीकार कयने अछि। परन्तु वन्देमातरम्, राष्ट्रिय चेतनाकेँ एहन दृढ़तासँ जमौने अछि जे सुगमतासँ हटाओल नहि जा सकैछ। तेँ दोसर श्रेणीमे राष्ट्रगान रूपमे मान्यता देलगेल छैक। तहियासँ एखनधरि तीन दशक बीति चुकल अछि आ पुरना विवादक चिनगी सेहो नितुआन भऽ गेल अछि। अतः आब एहि गीतक काव्यात्मक गुण तथा राष्ट्र-गानक रूपमे एकर लोक-प्रियतापर विनु कोनो पूर्वाग्रहक पुनः एकबेर विचार अपेक्षित अछि। जन-गण-मन एक सुन्दर कविता अछि, मधुर शाब्दिक सौष्ठवपूर्ण आ ई भारतीय राष्ट्रियताक प्राणवन्त चित्र उपस्थित करैत अछि, परन्तु कवि ओ कविताक प्रति समस्त आदरभावपूर्वक ई कहल जा सकैछ जे ने एहिमे मे वन्देमातरम् केर शक्ति छैक ने ओ आगि तथा ने ऐतिहासिक सम्बद्धता सैह। वास्तवमे यदि क्यो निकटसँ साम्प्रदायिक आपत्तिपर दृष्टिपात

करय तँ पता चलतैक जे राष्ट्रिय वन्दनागीतमे वैह तँ ओकर विशिष्ट गुण होइत छैक। कहल जाइत छैक जे वन्देमातरम् भारत सदृश देशक, जाहिमे विभिन्न धर्मावलंबीजाति निवास करैछ, राष्ट्र-गान नहि भऽसकैत अछि, एहिमे हिन्दूक बहुदेवत्व पर बल देल गेल गेल अछि आ ई देवीसभक विशेष गुणवर्णन करैत अछि। परन्तु एहन दृष्टिकोण उत्थर आ भ्रामक थीक।

काव्यात्मकता तथा वैचारिकताक दृष्टिएँ वन्देमातरम्केर मुख्य आकर्षण ई छैक जे माताकेँ अन्तःस्थित एवं अतिश्रेष्ठरूपमे उपस्थित करैत अछि। एहि प्रकारेँ ई कारड्क्कीक 'ओड ऑनदि क्लाइटमनसं सदृश कवितासँ भिन्न अछि, जाहिमेइटालियाक भावना धरती आ इतिहाससँ जोड़ल गेल छैक, परन्तु पुरान देवी-देवता सभक प्रासंगिक निर्देशक विरोध कयल गेल अछि, ओ अपन ऐहिक सीमाक उल्लंघन कदाचिते करैत अछि। टैगोरक जन-गण-मन तथा एहिसँ मिलैत जुलैत कवितासबसँ सेहो समाने भिन्नता छैक। एहिमे भारत एक ईश्वरक अधीन अछि जे एकर भाग्य निर्धारित करैत छथिन अथवा एक आन्तरिक सारथी अछि जे भारतक नियन्त्रण करैत अछि जेना अन्यान्य देशक। एहि गीतमे जाहि देवी सभक निर्देश अछि से माताक विविधरूपक व्यक्तित्वक भिन्न-भिन्न पक्ष थिकनि। एहिगीतक समकक्ष एकमात्र अछि जाहिदिस हमर मित्र एन्० सी० एम्०[1] हमर ध्यान आकृष्ट करैत छथि-ई साम्य डेल्फिक प्रीस्टहुड नामक एक गुप्त समाजक आदर्शवाक्य तथा धर्ममे पाओल जाइत अछि। ई संस्था उनैसम शताब्दक आरंभेमे इटलीक स्वतन्त्रता तथा एकीकरणक हेतु संघर्ष करैत छल। ई नाम स्वयं पुराकालक मूर्त्ति-पूजाक स्मरण करबैत अछिः डेल्फिक पुरोहित, देशभक्त पुरोहित युद्ध-रत पुरोहित सब एना बजलाहः समुद्र हमरा माताक झूल थिकनि, उच्च पर्वत-श्रेणी राजदण्ड। आ जखन पूछल गेलनि जे हुनक माथके थिकथिन तँ उत्तर भेटलनि-ओनारी जनिक कारी अलकावली छनि, सौन्दर्य अमूल्य धन थिकनि, बुद्धि तथा अतीतशक्ति, जनिका स्त्रीधन रूपमे लहलहाइत उद्यान भेटल छनि जे सुगन्धित पुष्पसँ पूरिपूर्ण छनि, जतय जैतूनक गाछ आ अंगूरकलता विकास पबैत छनि आ जे आब हृदयपर छूराक आघातसँ कुहरि रहलि छथि (सम्पूर्ण काल आ सब देशक गुप्त समाज ले० सी० डब्लू हेकेथार्न, लन्दन, 1897 भाग द्वितीय पृ० 188) आनन्दमठक मुख्यपात्र सत्यानन्द एक देशभक्त तथा संघर्षशील पुरोहित अछि जे माताक छवि ओहने बनबैत अछि जेहन ओ छलीह, जेहन ओ छथि आ जेहन हुनका होयबाक चाहिऐनि।

बंकिमचन्द्र एक महान रचनाशील कलाकार छलाह संगहि विस्तृत क्षेत्रक जिज्ञासा रखनिहार परम व्युत्पन्न विद्वान् सेहो छलाह। की ई संभव नहि जे हुनका डेल्फिक सोसाइटीक प्रसंग ज्ञान प्राप्त करबाक कोनो अवसर भेटि गेल होइनि ?

1. देखू एन. सी. एम. पोटेंट्स आ मेमायर्स।

ई गीत

वन्देमातरम् स्वयं पाठक एवं श्रोताक ध्यान आकृष्ट करबामे समर्थ अछि, परन्तुएकसर कोनो व्यक्ति यदि एकर सन्देशकेँ प्रचारित करबामे तथा एकरा भारतीय राष्ट्रवादी लोकनिक समर-गीत बनयबामे योगदान कयलनि तँ से थिकाह श्रीअरविन्द जे अंग्रेजी पद्य ओ गद्य दूनू रूपमे एकर अनुवाद कयलनि। पद्यानुवाद केँ विशेष प्रसिद्धि प्राप्त भेलैक, परन्तु से एकर निकट अनुवादसँ अधिक कविक पुनारचना सैह थिकनि।

रूपान्तरकारक अभिमत

कोनो पद्यात्मक रचनाकेँ भाषान्तर कयला उत्तर ओहिपद्यक समस्त सौन्दर्यकेँ निखारब कठिने नहि असंभवप्राय छैक।

तथापि पाठककेँ बंकिमचन्द्रक मूल भावनासँ परिचित करयबाक हेतु एकर गद्यात्मक रूपान्तर उद्धृत कयलगेल अछि, कारण एहिमे मूल अर्थक संग लयक सौन्दर्यक निर्वाह सेहो गद्यक अनुरूप भेल अछि।[1]

1. संस्कृत मिश्रित वंगला मैथिलीक प्रति निकट रहलाक कारणेँ एतय मूलगीत उद्धृत कयल जाइछ।

वन्देमातरम्

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरम् ।
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम् ।
सप्त कोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले
द्विगुण भुजैर्धृत खरकरवाले
के बले मा तुमि अबले
बहुबल धारिणीं नमामितारिणीम्
रिपुदल हारिणीं मातरम् ।
तुमि विद्या तुमि धर्म
तुमि हृदि तुमि मर्म
त्वं हि प्राणा: शरीरे
बाहुले तुमि मा शक्ति
हृदये तुमि मा भक्ति
तोमार प्रतिमा गड़ि मन्दिरे मन्दिरे
त्वं हि दुर्गा दश प्रहरण धारिणी
कमला कमल दल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी नमामि त्वाम् ।
नमामि कमलां अमलां अतुलां
सुजलां सुफलां मातरम् ।
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषितां
धरणीं भरणीं मातरम्
वन्दे मातरम् ।

बंकिमचन्द्रक कृति

1. ललिता ओ मानस : बाल कविता, 1856
2. दुर्गेशनंदिनी : उपन्यास, 1856
3. कपालकुण्डला : उपन्यास, 1866
4. मृणालिनी : उपन्यास, 1869
5. विषवृक्ष : उपन्यास, 1873
6. इंदिरा : उपन्यास, 1873
7. युगलांगुरीय (औंठीक जोड़ी) उपन्यास, 1874
8. लोक-रहस्य : हास्य प्रधान शब्द-चित्र संग्रह-1874
9. विज्ञान-रहस्य : विज्ञान सम्बन्धी निबन्ध संग्रह, 1875
10. चन्द्रशेखर : उपन्यास, 1875
11. राधारानी : उपन्यास, 1875
12. कमलाकान्तेर दफ्तर (कमलाकान्तक दफ्तर), 1875
13. विविध समालोचना : निबन्ध, 1876
14. रजनी : उपन्यास, 1877
15. कृष्णकातेर विल (कृष्णकान्तक इच्छापत्र) : उपन्यास 1878
16. कविता पुस्तक : 1878
17. साम्य : निवन्ध संग्रह, 1879
18. प्रबन्ध पुस्तक : निबन्ध संग्रह, 1879
19. राजसिंह : उपन्यास 1882
20. आनन्दमठ : उपन्यास, 1882
21. मुचीराम गुरेर जीवन चरित (मुचीराम गुरक जीवन चरित) : व्यंग्य, 1884
22. देवी चौधुरानी : उपन्यास 1884
23. कृष्ण चरित्र (कृष्ण चरित) : निवन्ध, 1886
24. सीताराम : उपन्यास, 1887

25. विविध प्रवन्ध, भाग-1 निबन्ध संग्रह, 1887
26. धर्मतत्त्व, (धर्मक सिद्धान्त), भाग-1, एवं अनुशीलन (संस्कृति), 1888
27. विविध प्रबन्ध, भाग-2 : निवन्ध संग्रह, 1892
28. सहज रचना शिक्षा (दोसर संस्करण) : पाठ्य पुस्तक, 1894
29. सहज अंग्रेजी शिक्षा (तेसर संस्करण) : पाठ्य पुस्तक, एकर कोनो प्रति उपलब्ध नहि।
30. श्रीमद्भगवद्गीता : गीताक अनुवाद एवं टीका (अपूर्ण), मृत्यूपरांत 1902 मे प्रकाशित।
31. राममोहन्स वाइफ : अंग्रेजी उपन्यास (इंडियन फील्ड मे 1864 मे धारा-वाहिक प्रकाशित), पुस्तकाकार पहिल वेर 1935 मे प्रकाशित।

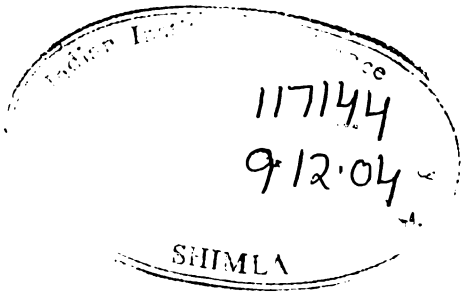

बंगालक साहित्यिक संसारमे बंकिमचन्द्र चटर्जी (1838-1894) क आविर्भाव आकाशमे भेल सूर्योदयक सदृश अछि। हमरालोकनि हुनक चिन्तनक मौलिकता एवं गुणवत्ताक मूल्यांकन कोनहु रूपें करिऐनि, आधुनिक भारतक प्रथम उपन्यासकारक रूपमे हुनक स्थान सुनिश्चित छनि ओ सर्वदा श्रेष्ठतम उपन्यासकारक रूपमे परिगणित होइत रहताह।

उपन्यासकारक रूपमें तँ बंकिमचन्द्र महान छलाहे, एक समीक्षकक रूपमे सेहो विख्यात रहथि, परन्तु रचनाशीलकलाकारक रूपमें हुनक वर्चस्विता एवं भारतीय पुनरुत्थानमे हुनक भूमिका, आलोचनात्मक चिन्तन तथा ओकर व्यावहारिक रूपमे हुनक अवदान के कनेक मनेक धूमिल बना देलकनि अछि।

बंकिमचन्द्रक वन्देमातरम् भारतीय संस्कृतिक एक विलक्षण निधि थीक। एहि महान् गीतक प्रथम पंक्ति राष्ट्रिय नाराक रूप ग्रहण कऽ राजनीतिक तथा सांस्कृतिक चेतनाकेँ प्रेरित कयलक। भारतीय राष्ट्रावादी लोकनिक हेतु ई युद्धक उद्घोष बनि गेल।

डा. सुबोधचन्द्र सेनगुप्त एक सुप्रसिद्ध विद्वान तथा बंकिम साहित्यक प्रामाणिक विशेषज्ञ छथि ओ भारतीय साहित्यक निर्माताक श्रृंखलामे एहि पुस्तकक सीमामे बंकिमक उपन्यासकार, निबन्धकार तथा समीक्षकक रूपमे समालोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत कयलनि अछि। एक कर्तव्यनिष्ठ विद्वान द्वारा कयल गेल विवेचनकेँ भारतक एक महत्तम उपन्यासकारक प्रतिभाकेँ जानबामे तथा परखबामे सहायक होयबाक चाहिऐक।

Library IIAS, Shimla
MT 891.440 92 C 392 S
00117144

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00